नंदन
नई पीढ़ी के निर्माण का मासिक
जून '८७
PRICE
Rs. 8
हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन

बच्चों की कहानियों की सुन्दर पुस्तकें
* मनभावन, कल्पनाशील, शिक्षाप्रद, आकर्षक, रंगीन सचित्र पुस्तकें। अब नई साज-सज्जा के साथ। हर उम्र के बच्चों का भरपूर मनोरंजन करती हैं।
ड्रीमलैण्ड पब्लिकेशन्स
काठ का घोड़ा
दयालु हँसपरी
बौना जब राजा बना
जादू की डिबिया
जादुई छाता
राजकुमारी और बेंत बजाने वाला
जल्द प्रकाशित हो रहा है
विक्रम और बेताल
25 कहानियाँ जो बेताल राजा विक्रमादित्य को सुनाता है शिक्षात्मक और दिलचस्प 5 भागों में प्रकाशित
* मूल्य 5/- रुपये प्रत्येक
40 तरह की पुस्तकें हिन्दी/अंग्रेज़ी में उपलब्ध
आगामी प्रकाशन: प्रसिद्ध व्यंग्यकार
सुधीर तैलंग का कॉमिक्स
जिम जादूगर के कमाल
40 पुस्तकों का सैट 200/- रुपये (डाक खर्च मुफ्त)
VPP द्वारा मंगाने के लिये 40/- अग्रिम भेजें।
अपने निकटतम पुस्तक विक्रेता से खरीदें या लिखें:
ड्रीमलैंड पब्लिकेशन्स
4425, नई सड़क, दिल्ली- 110 006 फोन: 2915831, 2929770.

डायमंड कामिक्स में

कार्टूनिस्ट प्राण का

प्रसिद्ध नटखट चरित्र 'बिल्लू' का नया कारनामा

बिल्लू हौस्टल में

प्राण
बिल्लू हौस्टल में

इस माह के अन्य नये डायमंड कॉमिक्स

- पिंकी और भेड़ियों का आंतक
- अंकुर और लपटू झपटू
- छोटू लम्बू और जंबू
- आनन्दराम फालतूराम और सुपर स्टार
- दब्बू जी और दांतों के डाक्टर
- पलटू और लाजवाब कुत्ता
- चाचा भतीजा और पानी का दैत्य

नये- डायमंड कॉमिक्स डाइजेस्ट

भारतीय संस्कृति से परिचय बढ़ाइये

मूल्य प्रत्येक 12/-

RAJESH

अन्य नये कॉमिक्स डाइजेस्ट	
चाचा चौधरी डाइजेस्ट-III	12.00
बिल्लू डाइजेस्ट-I	12.00
पिंकी डाइजेस्ट-I	12.00
लम्बू मोटू डाइजेस्ट-II	12.00
चाचा भतीजा डाइजेस्ट-II	12.00
फौलादी सिंह डाइजेस्ट-II	12.00
मोटू पतलू डाइजेस्ट-II	12.00
ता[illegible]जी डाइजेस्ट-II	12.00
महाबली शाका डाइजेस्ट-I	12.00

पूर्व प्रकाशित कॉमिक्स डायजेस्ट	
चाचा चौधरी डाइजेस्ट-I	12.00
चाचा चौधरी डाइजेस्ट-II	12.00
लम्बू मोटू डाइजेस्ट-I	12.00
चाचा भतीजा डाइजेस्ट-I	12.00
फौलादी सिंह डाइजेस्ट-I	12.00
मोटू पतलू डाइजेस्ट-I	12.00
ताऊ जी डाइजेस्ट-I	12.00
राजन इकबाल डाइजेस्ट-I	12.00

रहस्य रोमांच व साहस से भरपूर

नई बाल पाकेट बुक्स लेखक राजीव	
चाचा चौधरी और साबू के खरीदार	3.00
फौलादी सिंह और अवगुणी रोबट	3.00
[illegible]ऊ जी और भवानीगढ़ का खजाना	3.00
मोटू छोटू और चांदपुर में हंगामा	3.00
अण्डेराम डण्डेराम और ब्लैक लाइट	3.00
मामा भांजा और अनोखी सुंदरी	3.00
मोटू पतलू और आस्तीन का सांप	3.00
छोटू लम्बू और स्मगलिंग गैंग	3.00

डायमंड कामिक्स प्रा. लि. 2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

Mediamind
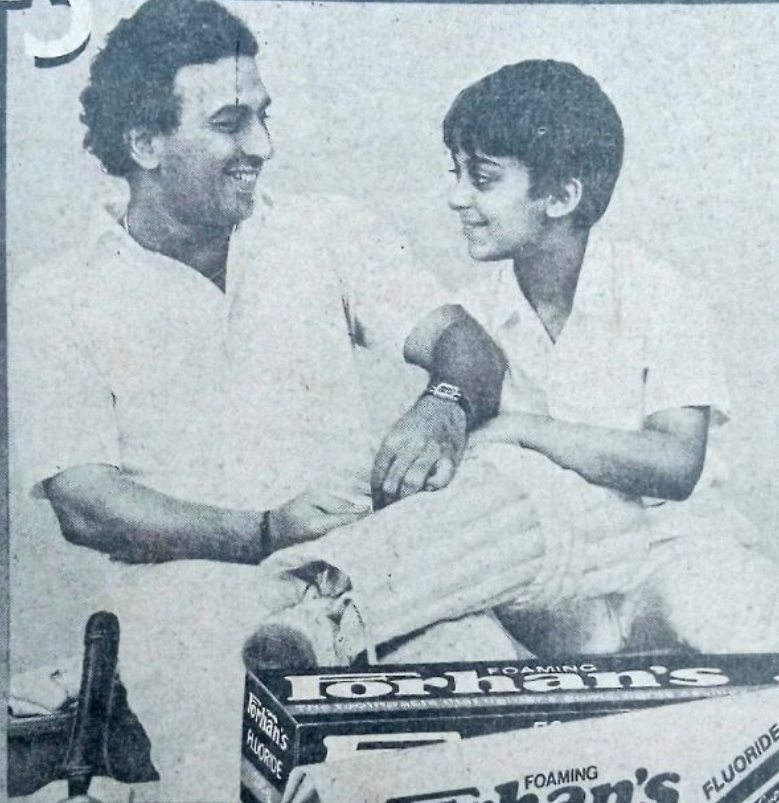
मैदान पर सुनील गावस्कर की रग-रग में फड़कता है मुकाबले का जोश.

तभी तो दुनिया उन्हें 'सुपरबैट्समैन' कह कर पुकारती है. पर सुनील गावस्कर कहते हैं – "मैं तो सुपरफ़ाइटर हूँ और मैं अपने बेटे को भी बनाऊँगा सुपरफ़ाइटर. तभी तो मैं उसे बचपन से ही सही दाँव-पेंच सिखा रहा हूँ. जैसे दाँतों की देखभाल के लिये फोरहॅन्स फ़्लोराइड–सड़न के खिलाफ़ सुपरफ़ाइटर." कीटाणु भोजन के कणों पर असर करते हैं और ऐसे एसिड पैदा करते हैं, जिनसे सड़न शुरू होती है. फोरहॅन्स के सुपरफ़ाइटर में असरकारक फ़्लोराइड है जो दाँतों का इनेमल मज़बूत करके एसिड के हमले को रोकता है.

और फोरहॅन्स का अनोखा एस्ट्रिंजेंट मसूड़ों को कस कर दाँतों को मज़बूत आधार देता है, बरसों बरकरार रहने के लिये.

सुनील साहब और कुछ?
"मैं अपने बेटे को देता हूँ फोरहॅन्स सुरक्षा. आप?"

फोरहॅन्स सुरक्षा

३२ बरकरार

GM-113/86 Hn

अपने बच्चे का बौद्धिक स्तर (I.Q.) बढ़ाइये

जल्दी सीखने और समझने की नई वैज्ञानिक फोटोटेक्स्ट पद्धति पर आधारित 'चिल्ड्रन्स लायब्रेरी ऑफ नॉलेज' अपनाइये

लायब्रेरी में दिये गये सभी चित्र बहुरंगी हैं।

मूल्य : 36/- रुपये
(प्रति खण्ड)
डाकखर्च 8/- रुपये
मूल्य : 144/- रुपये
(पूरा सैट)
डाकखर्च माफ

चिल्ड्रन्स लायब्रेरी ऑफ नॉलेज

(चार खण्डों में)

फोटोटेक्स्ट पद्धति क्या है ?

जो बात हजार शब्द नहीं कह पाते, एक चित्र कह देता है—जी हाँ, यह एक प्रामाणिक तथ्य है कि भाषा और चित्र का सही तालमेल स्थापित करके यदि बच्चे को कठिन से कठिन विषय भी समझाया जाये तो वह उसे न केवल जल्दी सीखता है, बल्कि हमेशा के लिये याद भी रख पाता है.....और यदि चित्र रंगीन हों तो सोने में सुहागा! इसी मनोवैज्ञानिक तथ्य को सिद्धान्त मानकर यह अनूठी फोटोटेक्स्ट पद्धति विकसित की गयी है और यह पद्धति ही **'चिल्ड्रन्स लायब्रेरी ऑफ नॉलेज'** की रचना का आधार है।

लायब्रेरी में क्या है ?

बड़े आकार के 400 रंगीन पृष्ठों की यह लायब्रेरी चार खण्डों में विभाजित है । जिसका चित्रांकन विश्व प्रसिद्ध चित्रकार टाई नाइग्रेन ने किया है। कुल मिलाकर इसमें 1200 प्रविष्टियां (entries) हैं, जिनका चयन बड़ी सावधानी से बच्चों की विविध रुचियों को ध्यान में रखकर निम्नलिखित विषयों में किया गया है—

- ☐ देश और वहां के लोग
- ☐ खनिज और धातु
- ☐ मनुष्य और मशीन
- ☐ पृथ्वी और ब्रह्माण्ड
- ☐ पशु और पक्षी
- ☐ संचार और परिवहन
- ☐ अनुसन्धान और आविष्कार
- ☐ फल और सब्जियां
- ☐ कला और संगीत
- ☐ पौधे और वृक्ष
- ☐ इतिहास और धर्म
- ☐ सागर और नदियां
- ☐ मरुस्थल और पर्वत
- ☐ इलेक्ट्रॉनिक उपकरण

आप अपने बच्चे के लिए यह लायब्रेरी ही क्यों खरीदें

इसलिए कि इससे—

- ■ बच्चे का बुद्धि-अंक (I.Q.) बढ़ता है।
- ■ कल्पना-शक्ति में वृद्धि होती है।
- ■ व्यक्तित्व का विकास होता है।
- ■ बुद्धि तेज होती है।
- ■ तार्किक समझ का विकास होता है
- ■ शब्द-भण्डार में वृद्धि होती है।

Published by Pustak Mahal in collaboration with M/s Bonniers and Lidman (Sweden)

गारण्टी

असंतुष्ट होने की स्थिति में लायब्रेरी 15 दिन में वापस भेज देने पर पूरे पैसे वापस भेज दिये जायेंगे।

Also available in English

अपने निकट के बुकस्टाल एवं रेलवे तथा बस अड्डों पर स्थित बुकस्टालों पर मांग करें अन्यथा वी.पी.पी. द्वारा मंगाने का पता —

पुस्तक महल, खारी बावली, दिल्ली-110006

नया शो रूम : 10-B नेताजी सुभाष मार्ग, दरिया गंज, नई दिल्ली-110002.

आओ बात करें

जन्म से ही कोई गूंगा-बहरा हो। उसकी आंखों में मोतिया-बिंद भी हो। आपरेशन कराए, तो एक आंख से सदा के लिए दीखना बंद हो जाए। बस, बाईं आंख में एक तिहाई रोशनी रहे। उस बेचारे को दुनिया कैसी अंधेरी लगेगी?

तारानाथ नारायण शिनॉय की कहानी ऐसी ही है। वह बम्बई के मामूली परिवार में जन्मे। मूक-बधिर थे, पर उन्होंने कभी हार नहीं मानी।

पांच साल के तारानाथ ने तैराकी शुरू कर दी। किशोर होने पर वह राज्य तैराकी में और फिर अखिल भारतीय तैराकी में भाग लेने लगे। उन्होंने अनेक इनाम जीते। पग-पग पर बाधाएं होने पर भी तारानाथ ने हाई स्कूल तक शिक्षा ली। रेलवे में लिपिक बन गए।

उन्होंने विश्व तैराकी प्रतियोगिता में शामिल होने का निश्चय किया। तारानाथ ने सात समुद्र की ओर पग बढ़ाए। इक्कीस समुद्री मील की दूरी १३ घंटे में पार की। वह दूसरे नम्बर पर आए।

चार साल पहले—वह फ्रांस के तट पर इंगलिश चैनल में कूद गए। ग्यारह घंटे तैरकर तारानाथ इंगलैंड जा पहुंचे। उन्हें विश्व का सबसे तेज विकलांग तैराक माना गया। इसके बाद भी दो बार उन्होंने इंगलिश चैनल पार की। स्वेज नहर लम्बी दूरी तैराकी में भी उन्होंने अपनी धाक जमा दी।

महाराष्ट्र राज्य ने तारानाथ को छत्रपति पुरस्कार दिया। भारत सरकार ने अर्जुन पुरस्कार से सम्मान किया। उन पर फिल्म भी बनी है।

तारानाथ ने रोशनी की ऐसी लकीर खींच दी है, जो जगमग-जगमग कर रही है। मन में चाह हो तो आगे बढ़ने की राह मिलती ही है।

अगला अंक 'परी-कथा विशेषांक' है। अपनी प्रति अभी से सुरक्षित करा लें।

— तुम्हारे भइया

जयप्रकाश भारती
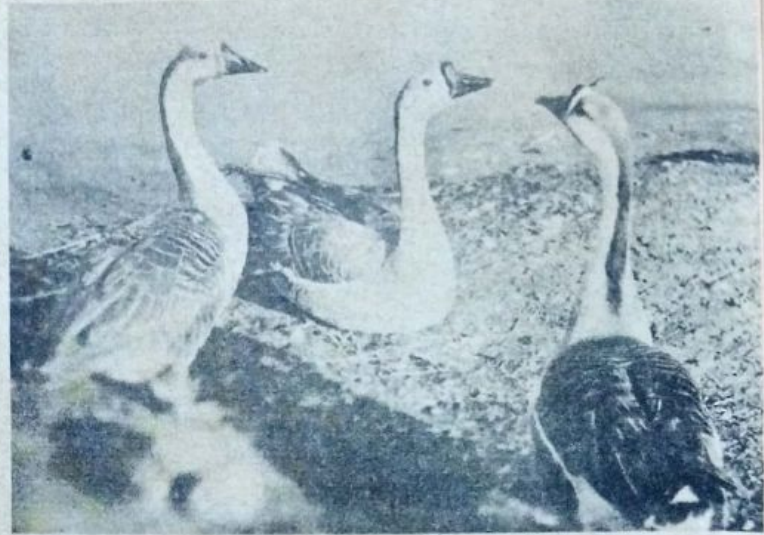
नंदन

जून '८७
वर्ष : २३ अंक : ८

कहां क्या है

कहानियां

सम्पादक
जयप्रकाश भारती

मुख पृष्ठ, एलबम : विद्याव्रत

सहायक सम्पादक : चन्द्रदत्त 'इन्दु'
उप-सम्पादक : देवेन्द्रकुमार, रत्नप्रकाश शील, क्षमा शर्मा, डा. चन्द्रप्रकाश; चित्रकार : प्रशांत सेन

ले वरदान

— यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

किसी गांव में एक अंधा रहता था। वह भगवान शंकर का भक्त था। हर समय पूजा-पाठ में लगा रहता था। दिन गिनता, न रात।

वह काफी बूढ़ा था, साथ में गरीब भी। जीवन कष्टों में गुजर रहा था। उसकी पत्नी भी उसकी इस भक्ति से नाराज रहती थी।

एक दिन पार्वती जी को अंधे पर दया आ गई। भगवान शंकर से कहा—"भगवन्, बेचारा अंधा आपकी बरसों से प्रार्थना कर रहा है। उसकी ओर आपकी दृष्टि नहीं जाती। ऐसा क्यों?"

भगवान शंकर ने हंसकर कहा—"पार्वती, क्या तुम्हें विश्वास है कि अपने भक्त को मैं कष्ट दूंगा?"

—"फिर आप इस अंधे का कष्ट दूर क्यों नहीं करते?"

भगवान शंकर ने अपने त्रिशूल की ओर देखा। कहा—"पार्वती, मनुष्य का कष्ट भाग्य से नहीं, पुरुषार्थ से दूर होता है। उन्नति वह बुद्धि से करता है। यह बिलकुल अनपढ़ है। अनपढ़ है, इसलिए अज्ञानी है। यदि मैं इसके पास चला भी गया, तो भी अपना संकट दूर नहीं कर पाएगा।"

"यह इसके भाग्य की बात है। आप चलिए तो।"—पार्वती ने प्रार्थना की—"कम से कम एक वरदान तो उसे जरूर दीजिए।"

भगवान शंकर पार्वती की बात मान गए। अंधे के पास आए। अंधा एक कच्चे मकान में रहता था।

पार्वती ने अंधे और उसकी पत्नी से कहा—"सुनो, तुम्हारे सामने भगवान शंकर खड़े हैं। तुम उनसे एक वरदान मांग सकते हो।"

वह बहुत प्रसन्न हुआ। उसने कहा—"जब भगवान स्वयं आ गए हैं, फिर मुझे किस चीज की कमी है?"

"पर एक वरदान तो मांगो।"—पार्वती ने जोर देकर कहा।

"मैं क्या मांगूं, मुझे तो वरदान मांगना आता ही नहीं।"—उसने जवाब दिया। भगवान शंकर बोले—"तुम तीन दिन तक सोच लो। मैं फिर आऊंगा।" इतना कहकर शिव-पार्वती अंतर्धान हो गए।

बेचारा अंधा सोचने लगा—'मैं वरदान मांगूं भी तो क्या? उसने अपनी पत्नी से सलाह की। पत्नी ने कहा—"मेरी मानो तो अपनी आंखों की ज्योति मांग लो। यदि आंखें मिल गईं, तो संसार का सुख मिल जाएगा।"

उसने सोचकर कहा—"नहीं, यदि आंखें मिल गईं और धन नहीं मिला, तो जीवन बेकार समझो? ऐसे जीवन को देखने से क्या लाभ?"

"फिर धन मांग लो।"—पत्नी ने कहा।

—"खूब धन हो और उसे देख नहीं पाऊं, तो वह भी बेकार है।"

काफी देर बाद अंधे ने कहा—"हमें चलकर किसी ज्ञानी से पूछना चाहिए कि क्या मांगा जाए?"

आखिर वे दोनों एक बुद्धिमान के पास पहुंचे। अपनी उलझन बताई। बुद्धिमान ने सोचकर कहा—"मैं तुम्हें एक ऐसा उपाय बता सकता हूं, जिससे तुम्हें जीवन के सारे सुख मिल जाएंगे। पर एक शर्त है।"

अंधे ने उत्साह से पूछा—"क्या?"

—"मैं जो मांगूंगा, उसे तुम्हें देना होगा। पहले यह वचन दो।"

अंधे ने उसकी बात मान ली। बुद्धिमान ने उपाय बताया, तुम भगवान से वरदान मांगो कि मैं सोने की थाली में अपने पोते को खाना खाते देखूं।

अंधा और उसकी पत्नी खुशी के मारे खिल उठे। इस वरदान से जीवन के सारे सुख मिल सकते थे। धन, आंखों की ज्योति और सुखी परिवार।

फिर बुद्धिमान ने कहा—"पर वह सोने की थाली मैं लूंगा।"

"ठीक है भाई!"—अंधे ने कहा—"वचन दे चुका हूं, पीछे नहीं हटूंगा।" अंधे ने घर आकर भगवान शंकर की प्रार्थना की। कहा—"भगवन्! आप मुझे केवल एक वरदान देना चाहते हैं, इसलिए मैं आपसे मांगता हूं कि मैं सोने की थाली में अपने पोते को खाना खाते देखूं।"

भगवान शंकर चौंक गए। उन्होंने पार्वती की ओर देखा। मगर करते भी क्या? वरदान देना पड़ा।

वरदान पाते ही अंधे के दिन बदलने लगे। पहले उसके बेटा हुआ। बेटा बड़ा हुआ, तो उसका विवाह हुआ। फिर पोता हुआ। इस बीच अंधे को जाने-अनजाने समय-समय पर खूब धन भी मिला। उसकी झोंपड़ी पक्के मकान में बदल गई।

मगर धन बढ़ने के साथ-साथ उसका पूजा-पाठ छूट गया। सारा दिन वह बैठा-बैठा सिक्के गिना करता था।

अंधे ने पोते का नामकरण संस्कार धूमधाम से किया। फिर सुनार को बुलाकर सोने की एक थाली बनाने को कहा।

सुनार सोने की थाली बनाकर लाया, तो वह

खुशी से उछल पड़ा—"आज मैं अपने पोते को खुद अपने हाथ से सोने की थाली में खाना खिलाऊंगा।"

सोने की थाली उसने पकड़ी ही थी, तभी 'बुद्धिमान' वहां आ धमका।

"वायदे के अनुसार यह थाली मुझे दो।"—उसने अंधे के हाथ से थाली छीनते हुए कहा।

अंधा हक्का-बक्का रह गया। इसी बीच बुद्धिमान थाली लेकर चला गया। उसने सुनार से फिर कहा—"एक गई तो क्या हुआ, तुम दूसरी बनाकर लाओ।"

मगर उसकी दूसरी थाली भी उसके पास न रही। ऐन वक्त पर बुद्धिमान ने आकर उसे भी झटक लिया—"बोला, शर्त यह थी कि जो थाली तुम अपने पोते को खाना खिलाने के लिए बनवाओगे, वह मैं लूंगा।"

वह फिर सिटपिटाता रह गया। उसने तीसरी थाली बनवाई, फिर चौथी और पांचवीं। मगर जो थाली वह बनवाता, बुद्धिमान आकर पहले ही झटक लेता।

आखिर एक दिन वह भी आया, जब उसका खजाना खाली हो गया। भला रोज-रोज इतना धन कहां से आता!

पार्वती भी सोच रही थीं कि शंकर का वचन पूरा कैसे हो! उन्होंने शंकरजी से कहा—"हमें उस बुद्धिमान से पूछना चाहिए, वह ऐसा क्यों करता है?"

शिव-पार्वती वेश बदलकर बुद्धिमान के पास पहुंचे। उससे पूछा—"तुम अंधे से रोज-रोज थाली क्यों झटक लेते हो?"

बुद्धिमान ने उत्तर दिया—"भगवान शिव ने उसे ऐसा वरदान दे दिया कि उसने पूजा-पाठ तो छोड़ा ही, हाथ-पैर हिलाने भी छोड़ दिए हैं। देखा-देखी दूसरे लोग भी मेहनत करना छोड़, कंठी-माला लेकर बैठ रहे हैं। मैं अंधे को सोने की थाली में अपने पोते को खाना कभी नहीं खिलाने दूंगा। देखता हूं, वरदान के प्रभाव से इसे सोने की कितनी थालियां मिलती रहेंगी।"

शिव ठहरे भोले-भाले। उन्होंने वरदान तो दे दिया, मगर अब भूल महसूस हुई। अचानक उन्हें लगा, अंधा उन्हें पुकार रहा है। वह उसके सामने प्रकट हुए। अंधे ने उन्हें अपनी परेशानी बताई। कहा—"भगवान, आप इस बुद्धिमान को दंड दीजिए। यह आपके वरदान को झूठा सिद्ध करने पर तुला है।"

"नहीं।"—भगवान शिव बोले—"वरदान को झूठा बनाने पर तो तुम तुले हो। भरे-पूरे परिवार के साथ-साथ, हाथ-पैरों से स्वस्थ होने पर भी तुम पुरुषार्थ नहीं करते। वरदान से ही सब कुछ पाना चाहते हो। मेहनत करोगे, तो वरदान भी फल देगा।"

इतना कहकर शिव अंतर्धान हो गए। अंधा भी सब कुछ समझ गया। उसने मेहनत से धन कमाकर सोने की दसवीं थाली बनवाई। बुद्धिमान इस बार थाली लेने नहीं आया। थाली में पोते को भोजन खिलाने के लिए ले गया, तो उसकी आंखें भी ठीक हो गईं। ●

लाल पलाश

—इन्दु

एक थी आशी। घर में दुर्गा-पूजा होती, तो बीन-बीनकर फूल लाती। घर-द्वार, मंदिर-मंडप सभी को सजा देती। माला गूंथ-गूंथकर दुर्गाजी के श्रृंगार को रखती।

एक दिन फूलों के लालच में वह घर से जरा दूर चली गई। बसंत की दुर्गा पूजा थी। दूर से अंगारे-सा दहकता पलाश वृक्ष दीखा, तो और आगे बढ़ गई। सोच रही थी—'इतने ऊंचे पेड़ पर लगे फूल मैं कैसे तोड़ूंगी?' तभी नीचे झुककर जो देखा, तो हरी घास पर इधर-उधर बिखरे पलाश के फूल दिखाई दिए। बस, चुन-चुनकर डलिया भर फूल घर ले आई।

घर आकर, बड़ी-छोटी मालाएं गूंथीं। बचे फूल अन्य फूलों के साथ चढ़ाने को रख दिए।

शाम की आरती के समय अपनी बनाई मालाओं से दुर्गा मां का श्रृंगार देख, आशी प्रसन्न हो गई। तभी लाठी से ठुक-ठुक करती दादी मां वहां आईं। चश्मा सरकाकर ध्यान से फूलों को देखा। गुलाब और गेंदे के साथ पलाश के फूल भी भरे थे डलिया में। बस, गुस्से से चीखने लगीं—"अरे, कौन लाया ये पलाश के फूल? बिना सुगंध के! भला, ये भी कहीं पूजा में चढ़ते हैं!"

आशी बेचारी खिसियानी हो गई, पर दादी मां भला चुप कहां होने वाली थीं। बेचारे पलाश की और आशी की धज्जियां उड़ाती रहीं खूब देर तक। डरकर पंडित जी ने भी दुर्गा के ऊपर से पलाश की मालाएं उतार दीं।

सुबह आशी ने पूजा घर की सफाई की, तो पलाश की मालाएं व फूल उठा लिए। बाग के कोने पर खिले गुलाब के पेड़ पर पलाश की मालाएं डाल दीं। फूल क्यारी में रख दिए। दादी मां की डांट याद आई, तो वह सिर झुकाए जमीन पर बैठ गई।

तभी घुंघरू की आवाज सुन, उसने सिर उठाया। देखा, लाल साड़ी पहने, पलाश की मालाओं से सजी पलाश परी उसके सामने खड़ी थी। वह बोली—"आशी रानी, आशी रानी, तू तो है बड़ी सयानी। अब सुन एक कहानी।"

पलाश परी कहानी सुनाने लगी—"यह जो पलाश है न। इसके पेड़ पर एक बार काम देवता बैठे शिवजी को शादी के लिए मनाना चाहते थे। शिवजी तपस्या में लीन थे। काम देवता ने उनका ध्यान भंग करने के लिए फूलों का बाण मारा। शिवजी का ध्यान भंग हुआ, तो उन्हें गुस्सा आया। उन्होंने तीसरी आंख खोल दी। आंख से अग्नि निकली। काम देवता भस्म हो गए।

काम देवता के साथ-साथ पलाश का पेड़ भी जलकर कोयला बन गया। मगर वह बेकसूर था। रोता-धोता शिवजी के पास गया। बोला—'मेरा क्या अपराध था? मुझे क्यों जलाया?'

शिवजी को उसकी बात ठीक लगी। उन्होंने प्रेम से उसकी ओर देखा। पलाश की जली काली टहनियों से आग की लपटों की तरह झक-झक करते लाल फूल झांकने लगे। फूल तो लाल, पर उनमें सुगंध न दी शिवजी ने। क्यों नहीं दी? यह तो वही जानें।

बड़े तो बड़े होते हैं। दादी मां जैसे जो चाहें नियम बना दें। तुम आज्ञा मानती जाओ, इसी में तुम्हारी भलाई है।" कहकर पलाश परी चली गई।

आशी घर पहुंची, तो पता चला—दादी मां को बुखार चढ़ आया है। 'आशी-आशी' पुकार रही हैं। आंखें मलती आशी सीधे दादी मां के पास पहुंची।

आशी को देख, दादी मां कराहते हुए बोलीं—"आशी! जल्दी जाकर ताजे पलाश के फूल बीनकर ले आ। मुझे दवा बनानी है।"

दादी मां का हुक्म था। आशी डलिया भर फूल बीन लाई। दादी के हाथ में फूलों की डलिया देते हुए आशी ने पुराना गुस्सा उतारा—"बड़ी चतुर हो दादी मां! जब मन आता है, तो बेकार कह दुत्कार देती हो जब मन भाता है, तो गुण ही बखान किए जाती हो। पूजा से पलाश को निकाल दिया और दवा में मिला लिया।"

अब खिसियाने की बारी दादी मां की थी। ●

रघुनाथ मंदिर
जम्मू

खुशबू

—सुरेश के. अंजुम

बहुत पुरानी बात है। किसी नगर में राजा सूर्यसेन राज्य करता था। प्रजा सुखी थी। राजा का मान करती थी। राजा भी प्रजा के सुख के लिए दिन-रात तैयार रहता था। समर और विमल उसके दो पुत्र थे। दोनों ही पिता की तरह शूरवीर थे।

एक बार की बात। सूर्यसेन बीमार पड़ा। ऐसा कि बचने की आशा तक न रही।

एक दिन राजा सूर्यसेन ने दोनों पुत्रों को बुलाया। कहा— "बेटो, मेरा स्वस्थ होना अब सम्भव नहीं लगता। मेरे मरने के बाद तुम दोनों में से कौन ठीक ढंग से राज्य कर सकेगा—यह सोचकर मैं चिंतित हूं।"

"हम क्या करें, जिससे आपकी चिंता दूर हो सके।"— दोनों भाइयों ने कहा।

"इस नगर के पूर्व में सुवन नामक स्थान है। उसमें यज्ञसेना नाम की एक तपस्विनी रहती है। उसकी आंखों से सुगंधित अश्रु गिरते हैं। वे अश्रु तुम में से जो ले आएगा, उसे ही मैं राज्य करने योग्य समझूंगा।"—राजा सूर्यसेन ने कहा।

"ठीक है पिताजी, पहले मैं जाकर वे अश्रु लाने का प्रयत्न करता हूं।"—बड़े पुत्र समर ने कहा।

समर सैनिकों को लेकर सुवन की ओर चला। एक माह की लम्बी यात्रा के बाद वह अपनी सेना के साथ सुवन पहुंच गया। सुवन के बीचों-बीच एक पर्णकुटी थी, पर्णकुटी के द्वार पर तपस्विनी यज्ञसेना बैठी थी। समर ने यज्ञसेना को अपने आने का कारण बतलाया।

"मैं इसमें तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर सकती पुत्र!"— यज्ञसेना ने कहा। समर ने उसे लालच दिया—"मैं अपनी सारी सम्पदा आपको सौंप दूंगा।"

"मुझे सम्पदा का लालच नहीं है पुत्र!"—यज्ञसेना ने उसका प्रस्ताव ठुकरा दिया।
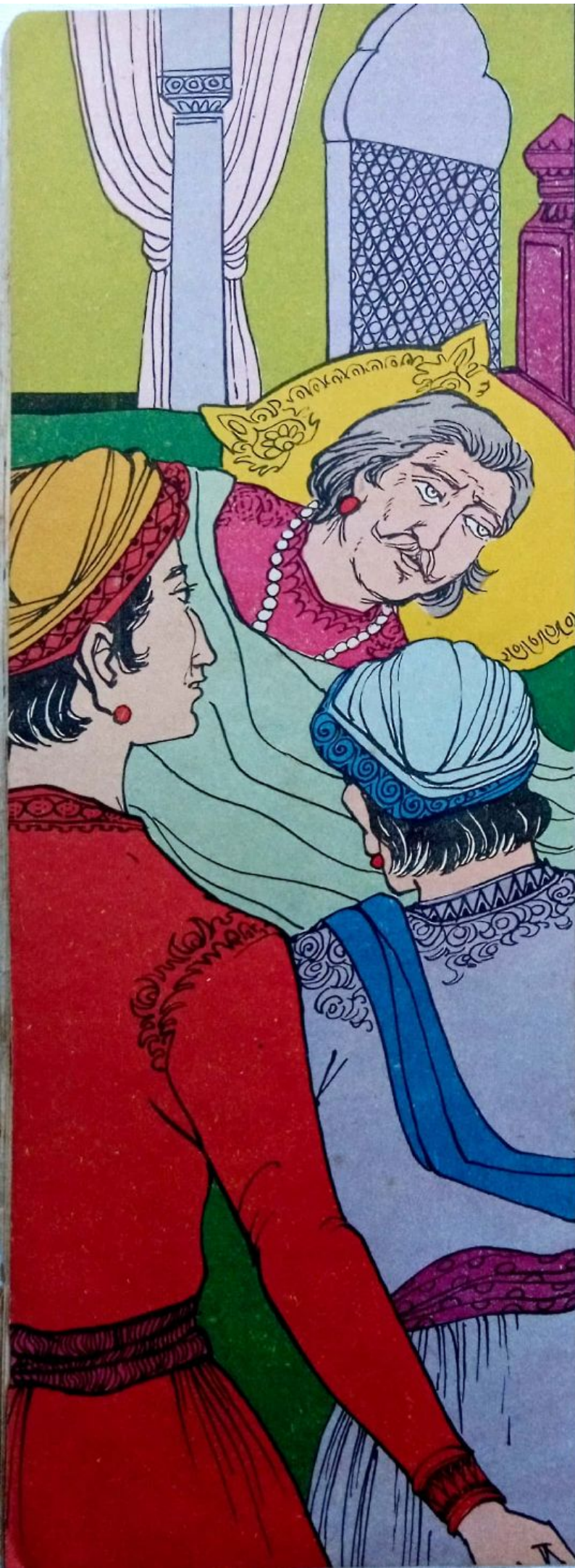
समर को क्रोध आ गया। उसने सैनिकों को आदेश दिया—"यज्ञसेना की कुटिया तोड़ दो। इसके सारे बाग उजाड़ दो।"
आदेश पर सैनिकों ने यज्ञसेना की पर्णकुटी तोड़ दी। उसके बाग उजाड़ दिए, किंतु यज्ञसेना फिर भी शांत रही।

यह देख, समर का क्रोध और अधिक बढ़ गया। उसने सैनिकों को आदेश दिया—"इस तपस्विनी को वृक्ष से बांधकर कोड़े लगाओ।"

सैनिक जैसे ही यज्ञसेना की ओर बढ़े, उसके शरीर से आग की लपटें निकलने लगीं। आगे बढ़ते समर और उसके सैनिक उन लपटों से झुलस गए।

निराश और भयभीत हो, समर अपनी सेना के साथ राजधानी लौट आया। उसने सारी कथा अपने पिता राजा सूर्यसेन को कह सुनाई।

अब समर का छोटा भाई विमल उन सुगंधित अश्रुओं को लाने, अकेला ही सुवन की ओर चल दिया।

सुवन के समीप पहुंच, उसने राजसी वस्त्र उतार दिए। साधारण वस्त्र पहन लिए। फिर यज्ञसेना की नई बनी पर्णकुटी पर पहुंचा।

यज्ञसेना को देख, विमल ने उसके चरण स्पर्श किए। कहा—"माता जी, मैं कुछ दिन आपके आश्रम में रहकर आपकी सेवा करना चाहता हूं।"

"बड़ी प्रसन्नता है मुझे बेटे! किंतु तुम तो किसी उच्च घराने के जान पड़ते हो। यहां वन में रहकर तुम्हें कष्ट होगा।"—यज्ञसेना ने कहा।

"नहीं, मां! मुझे कोई कष्ट नहीं होगा।"—विमल ने कहा।

कई महीने तक विमल तन-मन से यज्ञसेना की सेवा-सुश्रूषा करता रहा। कुटिया को सजाता, बाग की रखवाली करता, यज्ञसेना के लिए पूजा के पुष्प-पत्रादि जुटाता, कंद-मूल लाकर यज्ञसेना को खिलाता और स्वयं खाता था।

एक दिन अवसर पा, विमल ने यज्ञसेना से घर लौटने की अनुमति चाही, तो यज्ञसेना ने विमल को गले लगा लिया। पिछले दो महीने से यज्ञसेना विमल को पुत्र जैसा स्नेह करने लगी थी। उसे घर जाने को तैयार देख, उसका दिल भर आया। आंखों से प्रेमाश्रु झरने लगे। उन आंसुओं में इतनी अधिक सुगंध थी कि सारा वातावरण खुशबू से भर गया। फिर उसने भरे मन से विमल को विदा किया।

विमल अपने पिता सूर्यसेन के पास पहुंचा, तो उसके शरीर से आती सुगंध से राजा ने सब कुछ जान लिया। उन्होंने बड़े प्रेम से विमल के सिर पर हाथ फेरा, तो यज्ञसेना के आंसुओं की बूंदें नीचे झरने लगीं। पूरा वातावरण सुगंध से भर गया।

विमल ने राजा सूर्यसेन से पूरी कथा कह सुनाई। राजा बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने राजा का भार विमल को सौंपते हुए कहा—"बेटे, मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूं। केवल बल प्रयोग अथवा अत्याचार कर प्रजा पर राज नहीं किया जा सकता।"

और विमल ने सचमुच बहुत अच्छी तरह राज्य चलाया। ●
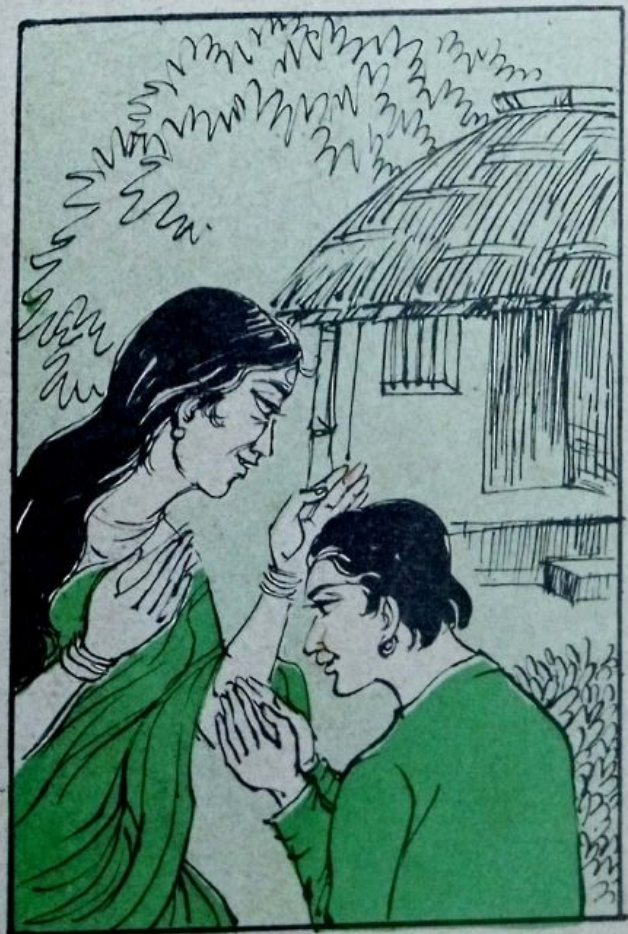
फकीर की खिचड़ी

—अनंत कुशवाहा

इस समय बादशाह ने शाही पोशाक नहीं पहनी थी। बस, मामूली-सी कढ़ाई का चोगा, रंगीन धारी वाला चुस्त पाजामा और सिर पर ऐसे ही लपेटी हुई पगड़ी। किंतु कमर में बंधा कमरबंद और उसमें खुसा हुआ खंजर, उसे साधारण लोगों से अलग करता था। बादशाह ने अस्तबल से घोड़ा भी लिया था, तो वह जो सिपाहियों के काम आता था।

इस वेश में गांव के चौधरी ने बादशाह को एक छोटा-मोटा जागीरदार ही समझा था। बादशाह ने गांव में आकर चौधरी से कहा था—"चौधरी, तुम्हारे गांव में या इसके आसपास कोई खास साधु-संत रहता हो तो बताओ या कोई पुराना मंदिर, पीर-औलिया का ठिकाना हो।"

"ऐसा तो कुछ नहीं है। बस, एक फकीर बाबा हैं, जो खिचड़ी बहुत अच्छी बनाते हैं। गांव के बाहर रहते हैं। हम गांव वाले उन्हें बहुत मानते हैं।"—चौधरी ने बताया।

सुनकर बादशाह ने चौधरी से कहा—"बड़ी मेहरबानी होगी। मुझे वहां ले चलो।" चौधरी सोचने लगा—'यह शाही दरबार का कोई सिपाही न हो! हो सकता है, दरबार का कोई हुक्म बजाने निकला हो' इसीलिए चौधरी इंकार नहीं कर सका। वह तुरंत बादशाह के साथ फकीर के पास चल पड़ा।

अमराई की ठंडी छांह से आगे, थोड़ी खुली जमीन के बाद ही बरगद का एक बड़ा पेड़ था। उसके नीचे फकीर बाबा अधलेटे थे।

बादशाह ने देखा, फकीर के शरीर पर एक कपड़ा था, जो तहमद की तरह कमर में लिपटा था। उसी का एक हिस्सा उन्होंने ओढ़ रखा था। बगल में कुछ पत्थरों को रखकर चूल्हा बना था। उस पर एक हांड़ी रखी थी। हांड़ी में एक टहनी पड़ी थी।

चौधरी ने कहा—"बाबा, यह आपकी खिचड़ी चखने के लिए आए हैं। थोड़ी-सी इन्हें खिला दीजिए।"

"दाल-चावल तो हम गांव वाले नियम से बाबा को दे जाते हैं, लेकिन यह बनाते हैं बिल्कुल अकेले में। पता नहीं, क्या-क्या जड़ी-बूटी, पत्ते खिचड़ी में डालते हैं। ताजी तोड़ी टहनी से चलाते हैं। फिर बाद में उसे फेंक देते हैं। बाबा किसी को खिचड़ी देने से मना नहीं करते।"—चौधरी ने बादशाह से कहा।

बादशाह ने देखा, हांड़ी में कुछ खिचड़ी शेष थी। फकीर ने हाथ से इशारा कर दिया, तो चौधरी कुछ बड़े पत्ते तोड़ लाया। उसने उन पर खिचड़ी परोस दी।

बादशाह थोड़ा हिचका। फिर उसने एक कौर

मुंह में डाला। आश्चर्य! इतनी स्वादिष्ट खिचड़ी उसने कभी नहीं चखी थी।

—"वाकई इतनी लजीज खिचड़ी मैंने कभी नहीं चखी थी।"

फकीर ने भाव शून्य चेहरे से कहा—"आप बादशाह हैं। मुझ फकीर के हाथ की बनी खिचड़ी खाकर इतनी तारीफ कर रहे हैं। अगर सही ढंग से मेरी बनाई खिचड़ी खा लें, तो पता नहीं क्या कहें।"

फकीर के मुंह से बादशाह शब्द सुन, बादशाह के साथ-साथ चौधरी भी चौंक पड़ा। जौनपुर के बादशाह इस रूप में। वह कांपता हुआ, हाथ जोड़कर खड़ा हो गया—"हुजूर, मुझे माफ कीजिए। आपको पहचान न पाया।"

बादशाह मुसकरा दिया। फिर फकीर से बोला—"आप मुझे खिचड़ी खिला सकते हैं ? आप मेरे साथ चलिए।"

—"तुम्हारे कहने से चलता हूं, लेकिन खिचड़ी में डालने के लिए मुझे रोज सोने की एक अशर्फी देनी होगी।"

—"मुझे मंजूर है।"

फकीर ने कपड़े की अपनी पोटली संभाली। वह तुरंत बादशाह के साथ चल पड़ा।

महल के बावर्चियों में हलचल मच गई। उनसे स्वादिष्ट खाना कौन बना सकता है ? पीढ़ियों से वे रसोई के अपने हुनर से वाहवाही लूटते आ रहे हैं। अब एक फकीर आया है खाना बनाने। बनाएगा भी क्या ! खिचड़ी ! उन्हें इस बात पर और भी तैश आया कि फकीर किसी को अपनी कोठरी में आने नहीं देता था। पता नहीं, शाही बगीचे से क्या-क्या चुनकर पकती हुई खिचड़ी में डालता था। उस पर तुर्रा यह कि रोज एक चमचमाती सोने की अशर्फी और लेता था।

शर्की बादशाह ने गांव के पास बरगद के नीचे हांड़ी की जो खिचड़ी खाई थी, अब उससे भी स्वादिष्ट खिचड़ी उसे खाने को मिल रही थी। उस खिचड़ी के अलावा कुछ खाने की इच्छा ही नहीं होती थी। फकीर मिट्टी की हांड़ी में पकाता था। वह खुद ही बादशाह के आगे परोसता था। बादशाह थाली में एक दाना भी नहीं छोड़ता था। खिचड़ी की इतनी तारीफ करता कि दरबारियों को ईर्ष्या होने लगी।

इसी तरह लगभग एक माह बीत गया। बावर्ची एक से एक स्वादिष्ट व्यंजन बनाते, लेकिन बादशाह चखता ही नहीं था।

आखिर बावर्चियों ने दरबारियों के कान भरने शुरू किए।

—"हुजूर, आप लोग इस फकीर की छुट्टी करवाइए। वह रोज सोने की एक अशर्फी लेता है। मक्कार है। कहता है, खिचड़ी में डालूंगा। भला, अशर्फी भी खिचड़ी में डाली जाती है। वह फकीर बादशाह को लूट रहा है।"

दरबारियों ने एक स्वर से फकीर की शिकायत की। बादशाह भी उनकी बातों में आ गया। बोला—"यह तुम ठीक कहते हो। रोज एक अशर्फी लेने की क्या तुक है ? जरूर फकीर चालाकी से अशर्फियां बटोर रहा है। उसे बुलाकर लाओ।"

बादशाह का हुक्म पा, एक हाथ में खिचड़ी की हांड़ी उठाए फकीर दरबार में हाजिर हो गया। उसका चेहरा तमतमाया हुआ था। बोला—"बादशाह, मैं तुम्हें रोज खिचड़ी खिलाता रहा हूं। इसके लिए सोने की एक अशर्फी भी लेता रहा हूं। मुझे पता चला है, इस तरह अशर्फियां लेने पर सबको एतराज है। अब मैं खिचड़ी नहीं खिलाऊंगा। मैंने जो अशर्फियां खिचड़ी के साथ पकाई हैं, उन्हें यहीं छोड़े जा रहा हूं।"

फकीर ने कंधे से पोटली उतारकर दरबार के फर्श पर रखकर खोल दी। उसमें अशर्फिया चमचमा रही थीं। वह हांड़ी उठाए दरबार के बाहर चला गया। कोई कुछ नहीं बोला।

महल के बाहर नीम का एक सूखा पेड़ था। फकीर ने उसकी जड़ के पास हांड़ी पटक दी और जंगल की राह ली।

बादशाह के इशारे पर वजीर ने अशर्फियों को गिनना चाहा, लेकिन मुट्ठी में आते ही वे राख में बदल गईं। यह देख, सभी चौंक उठे।

"हुजूर, हुजूर...यह देखिए। वह फकीर वाकई इन अशर्फियों को खिचड़ी में डालकर पकाता था।"—वजीर ने कहा।

"उसे रोको। खुदा के लिए उस बाबा को रोको।"—बादशाह चिल्लाया। वह खुद भी दरबार के बाहर दौड़ा, लेकिन फकीर का कुछ पता नहीं चला। बहुत ढूंढ़ने पर भी फकीर फिर कभी नहीं मिला। बादशाह ने चुगली करने वाले बाबर्चियों और दरबारियों को देश निकाला दे दिया। उसके बाद बादशाह की रुचि स्वादिष्ट भोजन से हट गई। वह सीधा-सादा खाना खाने लगा। ●

बुढ़िया

—तरुणकुमार तरुण

बहुत समय पहले की बात है । उत्तर भारत के किसी गांव में एक बुढ़िया रहती थी । उसका पति काफी धन-सम्पत्ति छोड़कर मरा था । बालक कोई था नहीं । बुढ़िया अकेली ही रहती थी । गांव वाले कहते थे, बुढ़िया के पास काफी धन है । वह सोचा करती थी —'काश, मेरा भी कोई बेटा होता, तो आज मेरे बुढ़ापे की लाठी बन जाता ।'

बुढ़िया थी बड़ी नेक और दयालु । वह गांव वालों के दुःख-सुख में हमेशा शामिल होती । गांव वाले भी बुढ़िया की थोड़ी-बहुत मदद कर दिया करते थे । उसका बुढ़ापा आराम से कट रहा था । बुढ़िया के पास जो धन था, उसने बहुत संभाल कर रखा था । पैसा-पैसा सोच-समझकर खर्च करती थी ।

एक दिन की बात है । गांव में दो लुटेरे घुस आए । सबसे पहले वे बुढ़िया के घर ही गए । दोनों के हाथों में नंगी तलवारें थीं ।

उन्हें देख, एक बार तो बुढ़िया की जान ही निकल गई । उसे सामने अपनी मौत दिखाई दी । किंतु वह लुटेरों से कोमल स्वर में बोली—''आओ, मेरे बच्चो । कहां से आ रहे हो । क्या राजा के सिपाही हो ?''

एक लुटेरे ने उसकी गर्दन पर तलवार रख दी । बोला—''क्या तुझे दिखाई नहीं देता बुढ़िया ! हम सिपाही नहीं, लुटेरे हैं । जो कुछ भी तेरे पास है, निकालकर रख दे । वर्ना मारी जाएगी ।''

बुढ़िया ने फिर भी किसी तरह की घबराहट नही दिखाई । प्यार से बोली—''अच्छी बात है बेटा ! मेरी नजर जरा कमजोर है । तुम दोनों बैठो । जो चाहोगे, मैं तुम्हें दे दूंगी । लेकिन पहले भोजन कर लो । तुम पहली बार मेरे घर आए हो । घर आया अजनबी मेहमान होता है ।''

पहले तो लुटेरे हैरान रह गए । फिर एक बोला—''बुढ़िया, क्या तुझे हमसे डर नहीं लगता, जो तू ऐसी बातें कर रही है । जल्दी चुपचाप सारा धन निकाल दे ।''

''धन तुम्हें जरूर दूंगी बेटा ! किंतु पहले मेरे हाथ का बना पकवान खाना होगा । देखो, अगर तुम नहीं खाओगे, तो मेरा दिल टूट जाएगा । मेरे कोई बेटा नहीं है ।''—कहते-कहते बुढ़िया की आंखें भर गईं । उसके शब्दों में ऐसा जादू था, जिसने लुटेरों को उसकी बात मानने पर विवश कर दिया ।

बुढ़िया ने बड़े प्यार से दोनों को खाना खिलाया । एक लुटेरा बोला—''सच, बुढ़िया मां ! तेरे हाथ जैसा बना पकवान हमने कभी नहीं खाया था ।'' बुढ़िया की आंखों में आंसू थे । बोली—''बेटा, तुम मेरे पास क्यों नहीं रहते ? इस तरह मुझे बुढ़ापे में दो जवान बेटे मिल जाएंगे ?''

दोनों लुटेरे असमंजस में पड़ गए । आए थे डाका डालने, लेकिन यहां आकर जैसे सारी बाते भूल गए । दोनों ने एक-दूसरे का चेहरा देखा । वे समझ नहीं पा रहे थे कि बुढ़िया की बात का क्या उत्तर दें ? बड़ी अजीब स्थिति थी । बुढ़िया उनके मन की बात समझकर बोली—''किस सोच में पड़ गए ? अगर तुम्हारा मन नहीं मानता हो, तो मैं तुम्हें मजबूर नहीं करूंगी । तुम मेरा धन लेकर जा सकते हो ।''

अब उन दोनों में बुढ़िया को लूटने का साहस कहां रह गया था । दोनों एक स्वर में बोले—''हमें मंजूर है बुढ़िया मां ! हमें तुम्हारा बेटा बनना मंजूर है ।''

बुढ़िया ने खुश होकर दोनों को अपनी बांहों में भर लिया । बोली—''अब तुम चोरी-डाके तो नहीं डालोगे । मेरे पास थोड़ा-सा धन है । तुम उससे कोई भी व्यापार शुरू कर देना । अपने खून-पसीने की ही रोटी खाना ।''

''हम ऐसा ही करेंगे बुढ़िया मां ! हम लूटपाट छोड़ देंगे । तुमने हमें नेकी का रास्ता दिखाया है ।'' इसके बाद दोनों लुटेरे बुढ़िया के पास रहने लगे । ●

कौआ हो जा

—मुकेश जैन

किसी नगर में विद्याधर नाम का एक गरीब ब्राह्मण रहता था। उसके कोई संतान नहीं थी। फिर भी उसे संतान न होने का विशेष दुःख नहीं था। एक बार उस नगर में एक सिद्ध साधु आए। लोगों की भीड़ उनके दर्शन के लिए उमड़ने लगी।

विद्याधर भी साधु के पास जा पहुंचा। जब भीड़ छंट गई, तो उसने जाकर साधु को प्रणाम किया। बोला—"महाराज, मैं बहुत गरीब हूं। इस गरीबी से छुटकारा दिलवा दीजिए।"

साधु ने विद्याधर से कहा—"जा, कौआ हो जा।"

इस बात का अर्थ विद्याधर समझ नहीं पाया। मगर साधु से पूछने का साहस नहीं था। वह घर की ओर चल पड़ा।

विद्याधर की पत्नी कमला बहुत बुद्धिमान एवं चतुर थी। विद्याधर ने कमला को पूरा किस्सा सुना दिया।

इस पर कमला बोली—"इतनी-सी बात। मैं बताती हूं साधु महाराज की बात का मतलब। सुनो, जैसे कोयल अपने बच्चों को कौए के घोंसले में रख जाती है। फिर कौआ उन्हें अपने बच्चे समझकर पालता है, उसी तरह हमें भी किसी बच्चे को अपने घर में रख, उसका पालन करना चाहिए।"

विद्याधर बोला—"तुम्हारी तो मति ही मारी गई है। पहले से इतनी गरीबी और ऊपर से बच्चे का लालन-पालन!।"

कमला बोली—"तुम मानो या न मानो। साधु महाराज का मतलब यही रहा होगा।" आखिर विद्याधर ने कमला की बात मान ली, किंतु समस्या थी, बच्चा कहां से लाएं?

भगवान ने उनकी जल्दी ही सुन ली। एक विधवा ब्राह्मणी कुएं में डूबने से मर गई थी। उसके पीछे उसकी सात साल की बच्ची रह गई। विद्याधर एवं कमला उस बालिका को अपने घर ले आए। बालिका बहुत ही सुंदर थी। धीरे-धीरे वह बड़ी होने लगी। उसका नाम था माधवी।

एक दिन माधवी घबराई हुई-सी दौड़कर घर में आई। कमला कुछ समझ नहीं पाई। वह माधवी से कुछ पूछती, इससे पहले ही तीन सैनिकों ने दरवाजा खटखटाया। वे बोले—"यहां अभी-अभी एक लड़की घुसी है। वह कौन है?"

"मेरी बेटी माधवी!"—कमला ने जवाब दिया।

"हमारे महाराज उससे मिलना चाहते हैं।"—सैनिक बोले।

"कौन हैं तुम्हारे महाराजा? क्यों मेरी बेटी से मिलना चाहते हैं?"—कमला ने भयभीत होकर पूछा। तभी राजसी वस्त्र धारण किए एक पुरुष ने घर में प्रवेश किया। देखते ही कमला समझ गई, यही महाराजा हैं।

"महाराज, यह महिला कहती है, वह इसकी

बेटी है ।"—एक सैनिक ने महाराजा से कहा ।

"क्षमा करना देवी ! गलती हो गई । मेरी बेटी के बाएं गाल पर भी ऐसा ही तिल था । लगभग चार वर्ष पहले एक मेले में खो गई थी । तुम्हारी बेटी को देखा, तो मुझे लगा, मेरी बेटी वापस मिल गई है ।"—महाराजा ने कहा ।

तब माधवी भी बाहर निकल आई थी । उसे महाराजा एकटक देखते रह गए । फिर 'अचानक आश्चर्य से बोले—"यह ताबीज ?"

माधवी के गले में पड़े ताबीज के बारे में जानने का प्रयास कमला या विद्याधर ने कभी नहीं किया था ।

महाराजा के अनुरोध पर माधवी का ताबीज निकालकर उसे खुलवाया गया । ताबीज में एक कागज निकला, जिस पर कुछ रेखाएं खिंची हुई थीं । कागज देखकर महाराजा खुशी से चीख पड़े—"मेरी बेटी ! मेरी किरण !"

माधवी थोड़ी घबराकर कमला के पास सरक आई ।

महाराजा ने बताया कि वह कागज उनकी बेटी की जन्म-पत्रिका है, जो स्वयं उन्होंने राज ज्योतिषी से बनवाई थी ।

महाराजा ने माधवी से अपने साथ राजमहल चलने का अनुरोध किया । माधवी रोते-रोते बोली—"मैं अपने मां-बाबा को छोड़कर कहीं नहीं जाऊंगी ।"

सुनकर महाराज मुसकराए—"अच्छा ! हम तुम्हारे मां-बाबा को भी तुम्हारे साथ ले चलते हैं । अब तो चलोगी ?"

माधवी ने कमला की तरफ देखा । फिर हां कर दी ।

महाराजा ने विद्याधर को एक गांव का जमींदार बना दिया । माधवी कभी उनके साथ रहती, तो कभी राजमहल में ।

विद्याधर सोचता साधु ने ठीक ही कहा था—'कौआ हो जा ।' ●
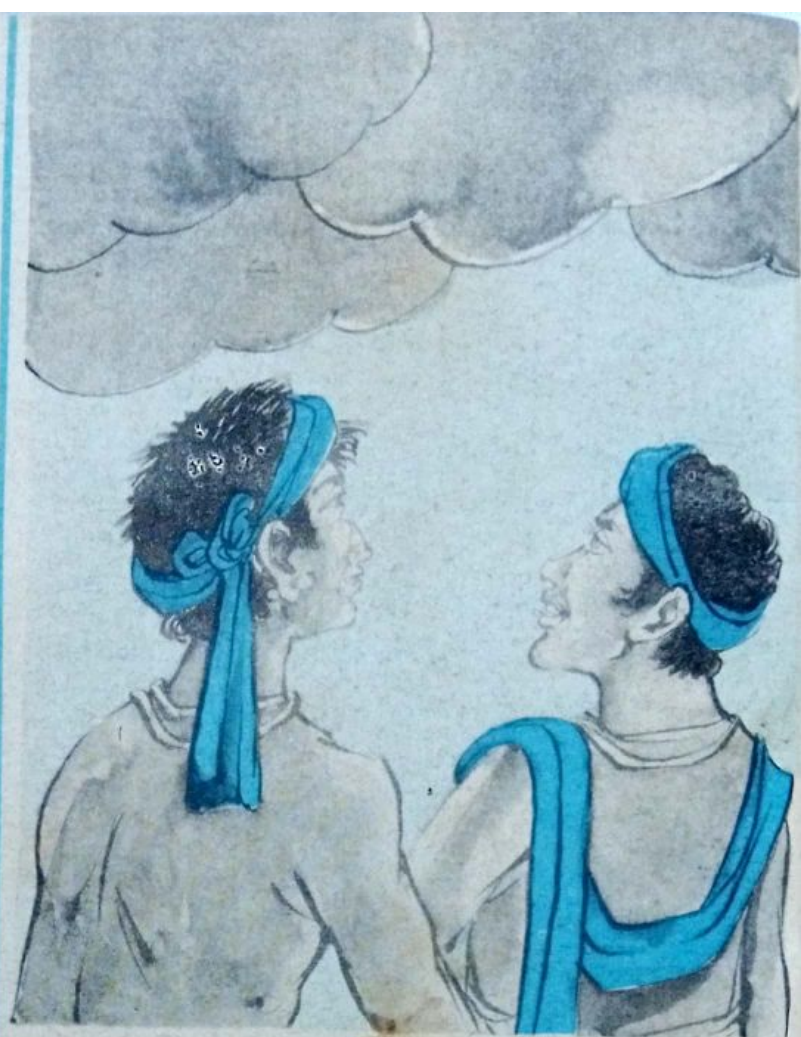
फूटा देवल

—भागीरथ मेघवाल

दक्षिणी राजस्थान में जाखम नामक नदी बहती है । इसके किनारे मदुरा नामक गांव बसा है । इस गांव में भीमा और सोमा नामक दो भाई रहते थे । दोनों भाइयों का आसपास के गांवों में बड़ा नाम था ।

नाम इसलिए था कि दोनों भाई पक्के गरबी थे । 'गरबा' वर्षा सम्बंधी एक विद्या होती है । इस विद्या का जानकार गरबी कहलाता है । गरबी बादलों को देखकर वर्षा की भविष्यवाणी कर देते हैं । भीमा और सोमा दोनों इस विद्या में प्रवीण थे ।

जाखम नदी मीलों तक आदिवासी क्षेत्र में बहती है । सोमा और भीमा भी आदिवासी थे । भील आदिवासी । अपनी बिरादरी में दोनों का बड़ा मान था । दोनों भाइयों के पास उपजाऊ खेतों व दुधारु पशुओं की कमी नहीं थी । वे थे भी मेहनती और अपनी बात के पक्के ।

पहाड़ी ढलानों पर आमने-सामने उनके घरों के नीचे खेत थे। बीच में नदी बहती थी। पहाड़ी के ऊपरी भाग में सागौन, महुआ के ऊंचे-ऊंचे पेड़ खड़े थे।

बसंत के दिन थे। ढाक के लाल-लाल फूलों से आसपास का जंगल जैसे रंग गया था। पेड़-पौधे नए-नए पत्ते पाकर झूम रहे थे। आकाश लहरदार बादलों से ढंक गया था। भीमा और सोमा ने बादल देखकर अगली वर्षा के सम्बंध में अपने-अपने अनुमान लगाए। उसी दिन संध्या समय नदी तट पर दोनों भाइयों की भेंट हुई। सोमा बोला—"भैया, लगते भादों की पंचमी के दिन भारी वर्षा जरूर होनी चाहिए। आपका क्या अनुमान है।"

"सही कहते हो। इतनी वर्षा होगी कि जाखम के किनारे का यह जामुन का पेड़ समूचा डूब जाएगा।"—भीमा ने सामने के जामुन की ओर इशारा करके बताया।

सोमा बोला—"इतनी नहीं हो सकती।"

"होगी। चाहे शर्त लगा लो।"—भीमा बोला।

"बेशक, लगा लो। इतनी वर्षा नहीं हो सकती।"—सोमा ने कहा।

दोनों में शर्त लग गई। जो हारेगा, वह दूसरे की भैंसों में से अपनी पसंद की, एक भैंस ले लेगा।

भादों की पंचमी पर सचमुच बड़े जोर की वर्षा हुई। नदी किनारे का जामुन का पेड़ पानी में डूब गया। सोमा की भैंसों में से सबसे अच्छी व दुधारू भैंस भीमा ने ले ली।

समय की बात, पांच दिन बाद ही जंगल में चरते हुए किसी जहरीले जानवर ने उस भैंस को डस लिया। कुछ घंटों में ही भैंस ने दम तोड़ दिया। किसी ने जानवर को डसते हुए देखा नहीं था। भीमा के मन में संदेह पैदा हो गया—हो न हो, भैंस की मौत में सोमा का हाथ है।

भीमा कोई बात पचा नहीं सकता था। उसने अपना संदेह सोमा पर प्रकट कर दिया।

"मैंने ऐसा नहीं किया। चाहो तो परीक्षा ले लो।"—सोमा बोला।

भीमा ने विचार किया। वह बोला—"तुम्हें अमावस की रात फूटे देवल में काटनी होगी।"

—"ठीक है। मुझे मंजूर है।"

भीमा के घर से मील भर की दूरी पर सदियों पुराने खंडहर थे। इनमें एक जीर्ण-शीर्ण मंदिर भी था। इसे ही 'फूटा देवल' कहा जाता था। ऐसा विश्वास था कि अमावस की रात को भगवान शिव अपने गणों के साथ इस देवल में आते हैं। इस रात कोई झूठा आदमी मंदिर में रहे, तो उसकी मृत्यु हो जाती है।

अमावस की सांझ सोमा फूटे देवल में पहुंच गया। वह साहसी तो था ही। उसने बहुत-सी लकड़ियां मंदिर के आंगन में इकट्ठी कर ली, ताकि रात में आग जलाकर उजाला करता रहे।

रात होते ही उसने अलाव लगा लिया। फूटे देवल में हल्की रोशनी हो गई। रात में सोने का तो सवाल ही कहां था। सोमा ने सोचा—'बेकार बैठने से तो बेगार करना ठीक है।' वह मंदिर व आसपास की जगह साफ करने में जुट गया।

सारी रात पत्थर हटाने में बीत गई। रात में सोमा को कोई देवता दिखाई नहीं दिए। हां, ढेर का आखिरी पत्थर उठाने पर उसे जमीन में गड़ा एक बड़ा-सा घड़ा दिखाई दिया। घड़े में सोने की मोहरें भरी हुई थीं। सोमा ने घड़ा निकाल लिया।

सवेरे सोमा की खबर लेने भीमा आया। उसे जीवित देखकर वह बहुत प्रसन्न हुआ। सोमा ने भीमा को मोहरों से भरा घड़ा दिखाया और बोला—"इन्हें हम आधी-आधी बांट लेंगे।"

—"नहीं, इसमें मेरा कोई हक नहीं। सभी तुम रखो।"

—"नहीं, सारी मैं नहीं रखूंगा। मैं तो बांटकर खाने में जाने में विश्वास करता हूं।"

भीमा को सोमा की बात माननी पड़ी। दोनों प्रसन्न चित अपने-अपने घरों को लौट आए। ●

चुप का बोल

—रेखा अग्रवाल

जनकपुर का राजा था सूर्यसेन । वह अपनी प्रजा के प्रति बहुत लापरवाह था। हरदम अपने ऐश-आराम की सोचता । प्रजा के सुख-दुःख की जरा भी चिंता नहीं थी । बड़े-बड़े भवन बनवाने में बेहिसाब धन खर्च करता रहता था ।

प्रजा दुखी थी, पर लोगों की परेशानी हल करने वाला कोई न था । बस, महामंत्री जीवक ही ऐसा था, जो राजा की इस बात को गलत समझता था । पर चापलूस मंत्रियों और दरबारियों के बीच उसकी भी कोई न सुनता । वह हरदम सोचता रहता कि राजा के कानों तक प्रजा की दुःख भरी आवाज कैसे पहुंचाए ?

एक दिन जीवक ने राजा से कहा—''महाराज, आज मौसम बहुत अच्छा है । सिंधवी झील में सुंदर कमल खिले हैं । घूमने चलिए ।'' राजा ने हां कह दी । रथ तैयार हो गया ।

थोड़ी देर बाद राजा की सवारी सिंधवी झील की तरफ बढ़ी । साथ में महामंत्री जीवक तथा अन्य दरबारी व सैनिक थे । राजा का काफिला जंगल की तरफ जाने वाली सड़क पर बढ़ रहा था । एकाएक चीख-पुकार की आवाजें सुनाई दीं । राजा का ध्यान उस तरफ गया । उसने जीवक को संकेत किया—''क्या बात है ?''

महामंत्री चार सैनिकों के साथ उस तरफ गया । थोड़ी देर बाद वह पता लगाकर लौटा । उसने बताया—''महाराज, आगे नदी पर बना पुल टूट गया । इस कारण दो बैलगाड़ियां नदी में गिर गईं । कई लोग घायल हो गए । वे ही चीख-चिल्ला रहे हैं ।''

सूर्यसेन सुनता रहा। फिर किसी सोच में डूब गया । महामंत्री ने सारथी से रथ बढ़ाने को कहा । थोड़ी देर बाद राजा सिंधवी झील पर जा पहुंचा । वहां खिले असंख्य कमल देखकर मन प्रसन्न हो उठा ।

कुछ दिन बाद राजा के लिए नए राजमहल का निर्माण शुरू हुआ । हर रोज दरबार में यही चर्चा चलती रहती । महल का निर्माण करने वाले कोषाध्यक्ष से रोज धन मांगने आ जाते । बेहिसाब धन खर्च हो रहा था ।

एक दिन दरबार में नए राजमहल की ही चर्चा हो रही थी । चापलूस लोग राजा को बता रहे थे कि महल कितना भव्य होगा । तभी दरबार में एक व्यक्ति आया । उसके कपड़े फटे हुए थे । वह बहुत घबराया हुआ था ।

उसने राजा को प्रणाम किया । बोला—''महाराज, मैं पड़ोसी राज्य का व्यापारी हूं । आपके लिए भेंट लेकर आ रहा था, पर मेरा बहुमूल्य सामान रास्ते में लूट लिया गया । मैं तो बरबाद हो गया ।'' कहकर वह रोने लगा ।

राजा ने जीवक से कहा—''व्यापारी का जो नुकसान हुआ है, उसके बदले राजकोष से धन दिलवा दिया जाए ।''

जीवक ने कहा—''महाराज, इस तरह की साधारण घटनाएं तो रोज ही होती रहती हैं । आप चिंता न करें । मैं इसे कुछ दिलवा देता हूं । तब तक आप

नए राजमहल की योजना पर अपने विचार बताएं।"

सूर्यसेन असमंजस से सोचता रह गया। वह कुछ परेशान था। उस रात राजा को देर तक नींद नहीं आई। अगली सुबह राजा ने जीवक को बुलाया। कहा—"हम वह जगह देखना चाहते हैं, जहां पुल टूट जाने से लोग घायल हो गए थे।"

जीवक ने कहा—"महाराज, आप क्यों परेशान होते हैं ? इतने बड़े राज्य में यह सब तो होता ही रहता है। फिर भी आप चाहते हैं, तो चलिए।"

राजा रथ में बैठकर टूटे पुल तक गया। दो बैलगाड़ियां अभी तक पानी में पड़ी थीं। लोग नावों में बैठकर नदी पार कर रहे थे। किनारे पर भी काफी लोग प्रतीक्षा कर रहे थे।

यह देखकर राजा परेशान हो उठा। उसने कहा—"महामंत्री, हमें राज्य के सारे पुलों के बारे में बताइए ?"

अब जीवक को अपनी बात कहने का अवसर मिला। उसने कहा—"महाराज, हमारे राज्य में दो नदियां बहती हैं। उन पर उन्नीस पुल हैं। सभी टूट-फूट गए हैं। राजकोष का धन ज्यादातर इमारतों के निर्माण पर खर्च हो जाता है। सड़कों और पुलों की मरम्मत की कोई व्यवस्था नहीं है।"

राजा ने टूटे हुए पुल को देखा। कुछ सोचकर कहा—"महामंत्री, पहले प्रजा का सुख-दुःख, बाद में कुछ और। आज से नए राजमहल का काम बंद। पहले सड़कों और पुलों की मरम्मत होगी। मैं कल से राज्यभर का दौरा करूंगा। प्रजा से मिलूंगा। मैं राजा हूं। मुझे पता होना चाहिए कि किसे क्या दुःख है।"

राजा की बात सुन, जीवक के होठों पर हंसी आ गई। उसने कहा—"महाराज, मेरी योजना सफल हुई। अब चाहे जो दंड दें।"

—"क्या मतलब ?"

—"महाराज, पुल से गाड़ी का गिरना, व्यापारी का दरबार में आना—सब नाटक था। यह सब मैंने आपके मन पर प्रभाव डालने के लिए किया था। मुझे खुशी है, वह नाटक सफल रहा।"

सुनकर राजा भी हंस पड़ा। बोला—"जीवक, तुम्हारा नाटक मुझे अच्छा लगा। इसने मुझे राजा का कर्तव्य समझा दिया। तुम्हें तो पुरस्कार मिलना चाहिए।"

गरम दिन ठंडी रातें
अजब अनोखे राजस्थान की झांकियां
रेगिस्तान और रेगिस्तान का जहाज
उम्मेद भवन पैलेस
जोधपुर →
हाड़ोती उत्सव : भवाई नृत्य
↓ पद्मिनी महल : चित्तौड़
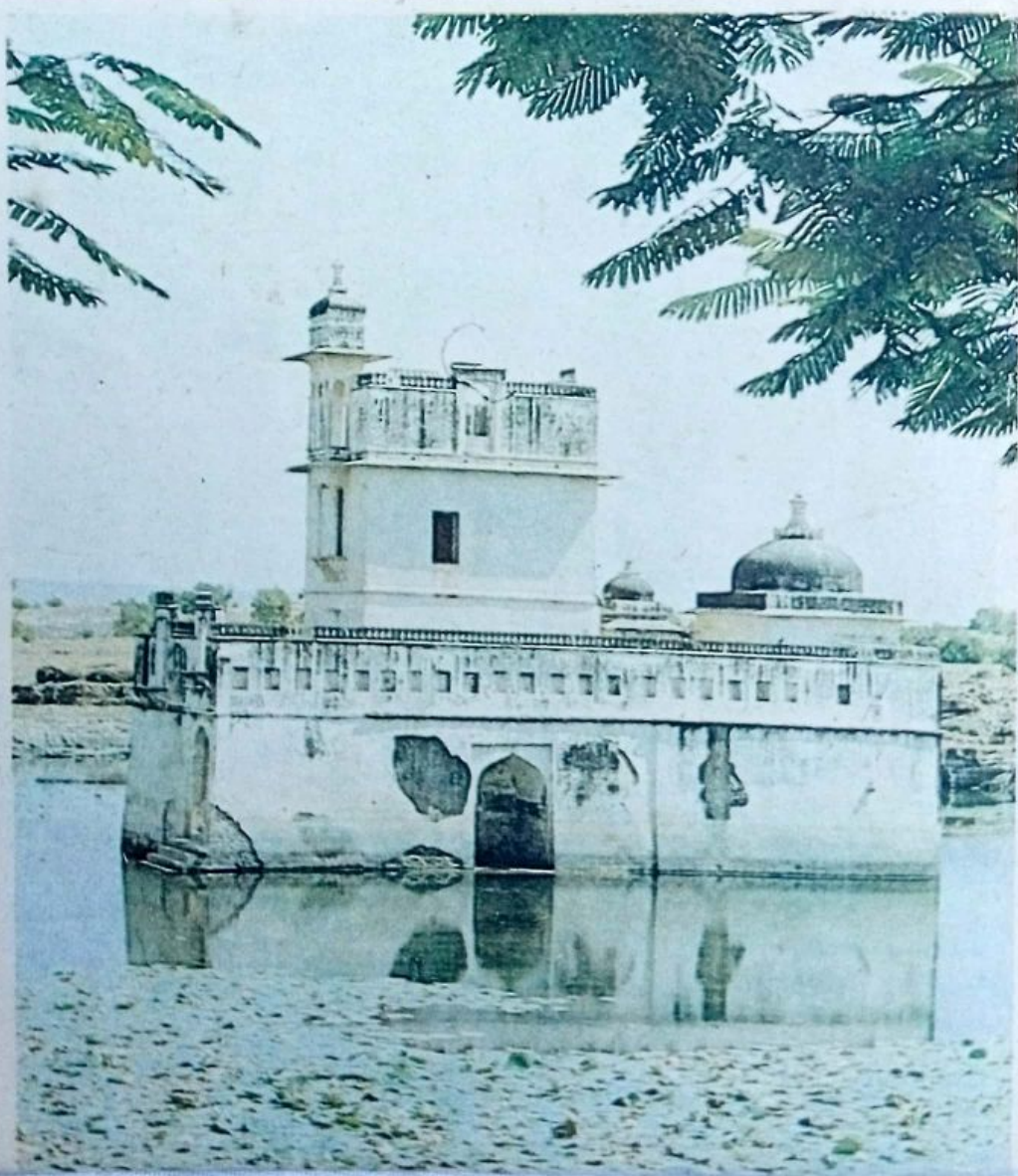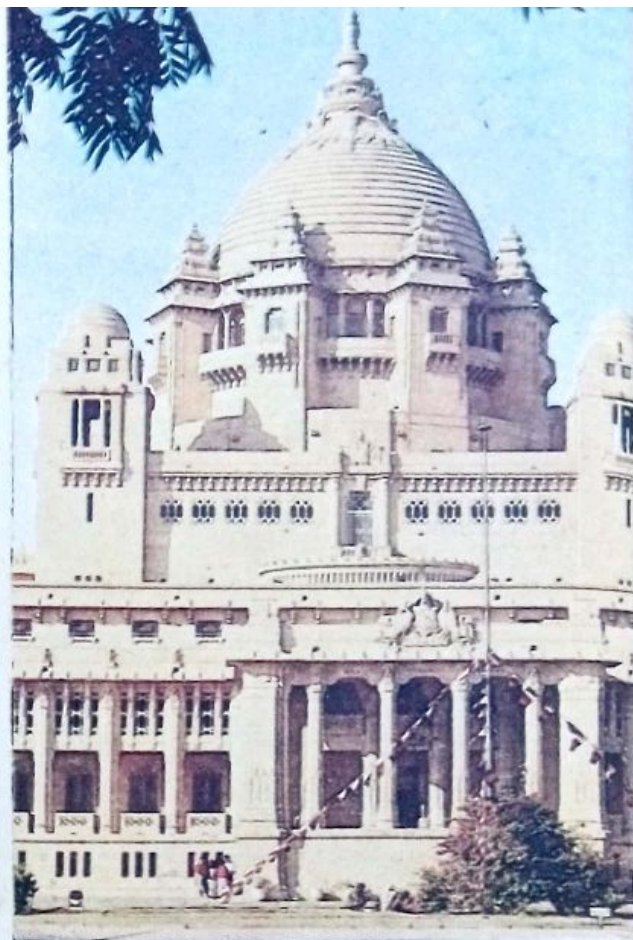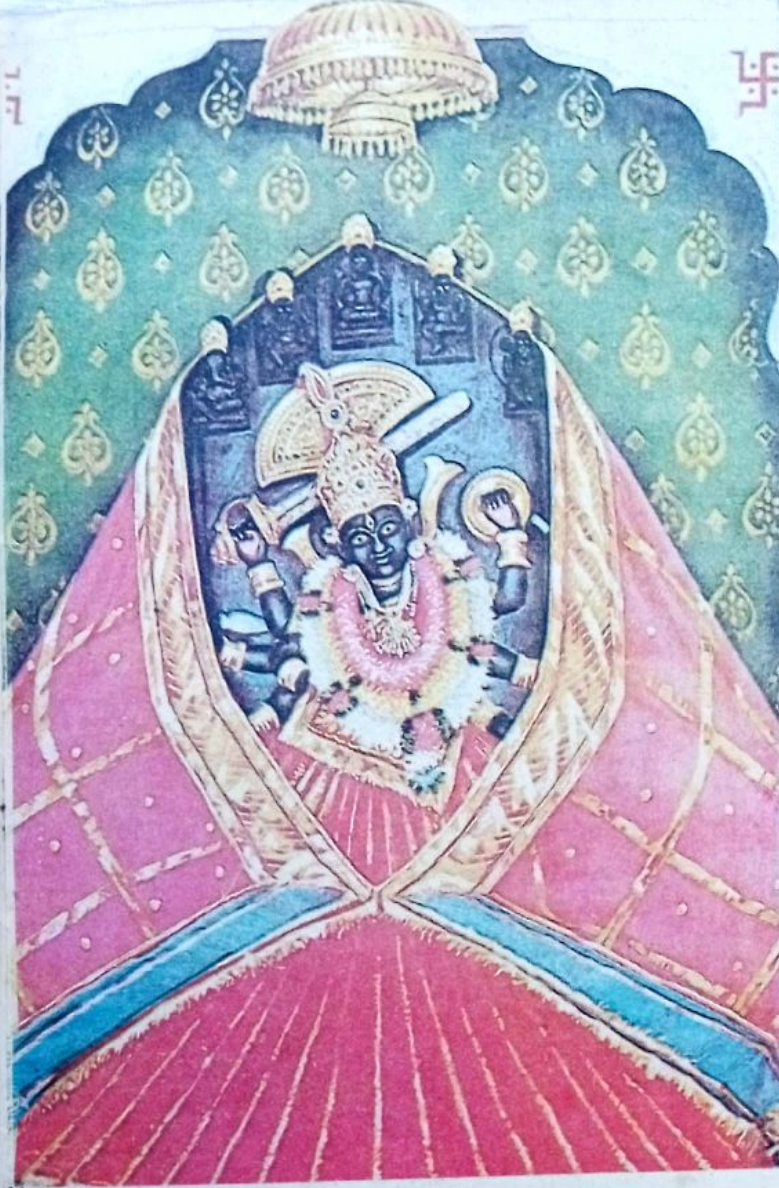
← शिला देवी माता
आमेर (जयपुर)

हवेली : जैसलमेर ↑

सहेलियों की बाड़ी : उदयपुर ↓

चित्र : सूरज एन. शर्मा, एच. के. झा,
भगवान दास रूपानी

↓ सरस्वती मंदिर : कोटा-बूंदी राजमार्ग

परी की दावत

—एडमंड स्पेंसर

साल में एक बार ऐसा होता था । बारह दिन तक परी रानी ग्लोरिया विशेष दावत देती थी । उन दिनों आकाश में तरह-तरह की आवाजें सुनाई देतीं । कभी घुंघरू खनकते, तो कभी मधुर संगीत गूंजता । फिर सुगंधित हवा बहने लगती । कोई कुछ समझ न पाता कि हर बार वसंत के मौसम में ऐसा क्यों होने लगता है ?

परी रानी विशेष दरबार लगाती थी उन दिनों । परी लोक के दरवाजे सबके लिए खुल जाते । कोई भी परी रानी के पास जाकर सहायता मांग सकता था । और वह अवश्य मदद करती थी ।

एक बार इसी तरह दावत चल रही थी, तो उना नामक राजकुमारी दरबार में आई । उसे एक बौना वहां लाया था ।

परी रानी के सामने पहुंचकर उना रो पड़ी । परी रानी ने उना से पूछा—''बेटी ! बताओ, क्या बात है ?''

उना ने कहा—''एक भयानक सांप ने मेरे माता-पिता को कैद कर लिया है । वह सांप पंखदार है और उसके मुंह से आग निकलती रहती है । मेरे माता-पिता को बचाइए ।''

परी रानी ने अपने वीर सामंत को उना के साथ भेज दिया । कहा—''इस लड़की की पूरी-पूरी सहायता करना ।''

वीर सामंत उना के साथ चल दिया । वे एक जंगल से गुजर रहे थे, तो एक विचित्र जीव ने उनका

रास्ता रोक लिया। उसका आधा शरीर औरत का था और आधा सांप का। उसके बदन से भयंकर दुर्गंध आ रही थी। दुर्गंध से सामंत और उना बेहोश होने लगे। लेकिन फिर सामंत ने अपने को संभाला और उस विचित्र जीव पर हल्ला बोल दिया। भयंकर संघर्ष हुआ। आखिर सामंत ने उसे मार ही डाला।

तभी एक व्यक्ति वहां आया। उसने कहा—"आज तुमने ऐसा काम किया है, जो कोई भी नहीं कर सका था। आप दोनों मेरे साथ चलिए। कुछ देर आराम कीजिए।" उना और सामंत उस आदमी के साथ चल दिए। असल में वह था एक दुष्ट जादूगर। उसने अपनी माया से दोनों को अलग-अलग कर दिया।

बेचारी उना अकेली और घबराई हुई जंगल में एक तरफ चल दी। उधर सामंत एक डायन के फेर में पड़ गया, जो रूप बदलकर जंगल में घूम रही थी। वह सामंत को एक दैत्य के पास ले गई। दैत्य ने वीर सामंत को धोखे से कैद कर लिया। दैत्य जानता था कि वह आमने-सामने की लड़ाई में सामंत से कभी नहीं जीत सकेगा।

उधर जंगल में अकेली घूमती उना की भेंट एक राजकुमार से हुई। उना ने राजकुमार से कहा, तो वह सामंत की खोज में चल दिया। थोड़ी दूर पर दैत्य ने सामंत को एक बड़े पिंजरे में कैद कर रखा था। राजकुमार ने दैत्य को युद्ध के लिए ललकारा। दोनों में भयंकर लड़ाई हुई। दैत्य ने अपनी माया फैलाई, पर राजकुमार की तलवार के आगे उसे हार माननी पड़ी। सामंत कैद से मुक्त हो गया।

राजकुमार को धन्यवाद देकर उना अपनी राजधानी की ओर चल दी। सामंत भी उसके साथ था! आखिर उना अपनी राजधानी के पास जा पहुंची। उड़ने वाले सर्प ने दोनों को दूर से ही देख लिया। वह मुंह से आग फेंकता हुआ सामंत पर झपटा। सामंत तो तैयार था ही। उसने उछलकर सांप के पंखों पर वार किया। सामंत का निशाना अचूक था। सांप के पंख कट गए।

वह धरती पर गिर पड़ा। सामंत ने उनके माता-पिता को कैद से मुक्ति दिलाई। उना के माता-पिता सामंत की वीरता से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने निश्चय किया, उना के लिए सामंत से अच्छा वर दूसरा कोई नहीं हो सकता।

लेकिन अभी उना और सामंत की मुश्किलें समाप्त नहीं हुई थीं। दुष्ट जादूगर उनसे बदला लेने का षड्यंत्र रच रहा था। वह उना और सामंत की सहायता करने वाले राजकुमार आर्थर तथा उनके साथी गुयोन से मिला। उनसे कहा, सामंत अच्छा आदमी नहीं है। उसने कई लोगों को धोखा दिया है। औरतों को सताया है।

यह सुनकर राजकुमार आर्थर ने गुयोन से कहा कि वह सामंत को सजा दे। गुयोन तलवार लेकर सामंत की खोज में चल दिया। इतनी ही देर में जादूगर ने अपना जाल फैला लिया। उसने जादू से एक युवती बनाई। उसे सड़क के किनारे बैठा दिया।

परी की दावत

—एडमंड स्पेंसर

साल में एक बार ऐसा होता था। बारह दिन तक परी रानी ग्लोरिया विशेष दावत देती थी। उन दिनों आकाश में तरह-तरह की आवाजें सुनाई देतीं। कभी घुंघरू खनकते, तो कभी मधुर संगीत गूंजता। फिर सुगंधित हवा बहने लगती। कोई कुछ समझ न पाता कि हर बार वसंत के मौसम में ऐसा क्यों होने लगता है?

परी रानी विशेष दरबार लगाती थी उन दिनों। परी लोक के दरवाजे सबके लिए खुल जाते। कोई भी परी रानी के पास जाकर सहायता मांग सकता था। और वह अवश्य मदद करती थी।

एक बार इसी तरह दावत चल रही थी, तो उना नामक राजकुमारी दरबार में आई। उसे एक बौना वहां लाया था।

परी रानी के सामने पहुंचकर उना रो पड़ी। परी रानी ने उना से पूछा—"बेटी! बताओ, क्या बात है?"

उना ने कहा—"एक भयानक सांप ने मेरे माता-पिता को कैद कर लिया है। वह सांप पंखदार है और उसके मुंह से आग निकलती रहती है। मेरे माता-पिता को बचाइए।"

परी रानी ने अपने वीर सामंत को उना के साथ भेज दिया। कहा—"इस लड़की की पूरी-पूरी सहायता करना।"

वीर सामंत उना के साथ चल दिया। वे एक जंगल से गुजर रहे थे, तो एक विचित्र जीव ने उनका

रास्ता रोक लिया। उसका आधा शरीर औरत का था और आधा सांप का। उसके बदन से भयंकर दुर्गंध आ रही थी। दुर्गंध से सामंत और उना बेहोश होने लगे। लेकिन फिर सामंत ने अपने को संभाला और उस विचित्र जीव पर हल्ला बोल दिया। भयंकर संघर्ष हुआ। आखिर सामंत ने उसे मार ही डाला।

तभी एक व्यक्ति वहां आया। उसने कहा—"आज तुमने ऐसा काम किया है, जो कोई भी नहीं कर सका था। आप दोनों मेरे साथ चलिए। कुछ देर आराम कीजिए।" उना और सामंत उस आदमी के साथ चल दिए। असल में वह था एक दुष्ट जादूगर। उसने अपनी माया से दोनों को अलग-अलग कर दिया।

बेचारी उना अकेली और घबराई हुई जंगल में एक तरफ चल दी। उधर सामंत एक डायन के फेर में पड़ गया, जो रूप बदलकर जंगल में घूम रही थी। वह सामंत को एक दैत्य के पास ले गई। दैत्य ने वीर सामंत को धोखे से कैद कर लिया। दैत्य जानता था कि वह आमने-सामने की लड़ाई में सामंत से कभी नहीं जीत सकेगा।

उधर जंगल में अकेली घूमती उना की भेंट एक राजकुमार से हुई। उना ने राजकुमार से कहा, तो वह सामंत की खोज में चल दिया। थोड़ी दूर पर दैत्य ने सामंत को एक बड़े पिंजरे में कैद कर रखा था। राजकुमार ने दैत्य को युद्ध के लिए ललकारा। दोनों में भयंकर लड़ाई हुई। दैत्य ने अपनी माया फैलाई, पर राजकुमार की तलवार के आगे उसे हार माननी पड़ी। सामंत कैद से मुक्त हो गया।

राजकुमार को धन्यवाद देकर उना अपनी राजधानी की ओर चल दी। सामंत भी उसके साथ था। आखिर उना अपनी राजधानी के पास जा पहुंची। उड़ने वाले सर्प ने दोनों को दूर से ही देख लिया। वह मुंह से आग फेंकता हुआ सामंत पर झपटा। सामंत तो तैयार था ही। उसने उछलकर सांप के पंखों पर वार किया। सामंत का निशाना अचूक था। सांप के पंख कट गए।

वह धरती पर गिर पड़ा। सामंत ने उनके माता-पिता को कैद से मुक्ति दिलाई। उना के माता-पिता सामंत की वीरता से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने निश्चय किया, उना के लिए सामंत से अच्छा वर दूसरा कोई नहीं हो सकता।

लेकिन अभी उना और सामंत की मुश्किलें समाप्त नहीं हुई थीं। दुष्ट जादूगर उनसे बदला लेने का षड्यंत्र रच रहा था। वह उना और सामंत की सहायता करने वाले राजकुमार आर्थर तथा उनके साथी गुयोन से मिला। उनसे कहा, सामंत अच्छा आदमी नहीं है। उसने कई लोगों को धोखा दिया है। औरतों को सताया है।

यह सुनकर राजकुमार आर्थर ने गुयोन से कहा कि वह सामंत को सजा दे। गुयोन तलवार लेकर सामंत की खोज में चल दिया। इतनी ही देर में जादूगर ने अपना जाल फैला लिया। उसने जादू से एक युवती बनाई। उसे सड़क के किनारे बैठा दिया।

एडमंड स्पेंसर—(१५५२—१५९८) —इंग्लैंड में जन्म। अपने युग के प्रसिद्ध कवि। अनेक कृतियां खूब सराही गईं। यहां हम उनकी लोकप्रिय काव्य रचना 'द फेयरी क्वीन' की संक्षिप्त कथा दे रहे हैं। —सं.

थोड़ी देर बाद गुयोन सड़क से गुजरा, तो उसने किसी औरत के रोने की आवाज सुनी। पूछने पर युवती ने बताया, सामंत ने उसे बहुत सताया है। उसके पति को मार डाला है। इस पर गुयोन सामंत के पीछे चला। मिलने पर उसे युद्ध के लिए ललकारा। दोनों तलवारें लेकर भिड़ गए। काफी देर तक युद्ध करते रहे। तभी गुयोन को जादूगर की हंसी सुनाई दी। फिर उसने जादूगर को कहते सुना, उसने गुयोन और सामंत को कैसे भिड़ा दिया है?

अब गुयोन सारा मामला समझ गया। उसने लड़ना बंद कर दिया। इसके बाद वह और सामंत अच्छे मित्र बन गए। फिर गुयोन और राजकुमार आर्थर साथ-साथ चल दिए। परी रानी ने उनसे कहा था, वे दुनिया में घूम घूमकर बुराई का नाश करें।

आगे उन्हें एक गुफा दिखाई दी। उसमें मीलेगर नामक दैत्य रहता था। उसके कारण लोग बहुत परेशान थे। मीलेगर तमाम अच्छी बातों का दुश्मन था। चाहता था, दुनिया में केवल बुराई का राज्य रहे। राजकुमार आर्थर ने मीलेगर को ललकारा। दैत्य दहाड़ता हुआ गुफा से निकला। वह बड़े-बड़े पत्थर फेंकने लगा। लेकिन गुयोन और राजकुमार आर्थर का बाल भी बांका नहीं हुआ। उन्होंने दो ओर से दैत्य पर आक्रमण किया। मीलेगर एक से लड़ता, तो दूसरी ओर से उस पर तीर बरसने लगते। उसकी एक न चली। आखिर गुयोन और आर्थर ने मीलेगर का खात्मा कर दिया। लोगों ने चैन की सांस ली।

आगे एक मैदान था। उसमें गुयोन ने एक घुड़सवार को देखा। उसके हाथ की तलवार धूप में चमचमा रही थी। गुयोन को लगा, शायद घुड़सवार कुछ गड़बड़ करना चाहता है। उसने वहां पहुंच, घुड़सवार को ललकारा। इस पर दोनों आपस में लड़ने लगे। थोड़ी ही देर में गुयोन जान गया कि उसका विरोधी ज्यादा ताकतवर है। घुड़सवार ने वार किया, तो गुयोन के हाथ से तलवार छूट गई। वह जमीन पर गिर पड़ा। तब घुड़सवार ने अपने मुंह पर बंधा कपड़ा हटा दिया। वह एक औरत थी। उसका नाम था— ब्राइटोमार्ट। काफी समय से उसके पति का कुछ पता नहीं था। वह पति की खोज में निकली थी।

यह पता चलने पर, राजकुमार आर्थर और गुयोन ने ब्राइटोमार्ट से कहा—"हम तुम्हारी सहायता करेंगे।" फिर वे साथ-साथ बढ़ चले।

शाम को वे लोग एक घने जंगल में जा पहुंचे। वहां सब ओर से शेरों के दहाड़ने और गुर्राने की आवाजें आ रही थीं। एकाएक कोई घोड़ा दौड़ता हुआ सामने से गुजरा। गुयोन तथा राजकुमार आर्थर उस दिशा में चल दिए। ब्राइटोमार्ट एक तरफ खड़ी प्रतीक्षा करती रही। काफी देर हो गई, पर उसके दोनों साथी वापस न आए। आखिर निराश हो, वह अकेली ही एक तरफ को बढ़ चली।

सामने ज्वायस का किला था। किले के बाहर ब्राइटोमार्ट ने देखा, छह सैनिक अकेले आदमी से लड़

रहे हैं। ब्राइटोमार्ट को लगा, यह अन्याय है। वह घोड़ा दौड़ाती हुई उनके पास जा पहुंची। कहा—"ऐसा करना गलत है। अधर्म है। एक आदमी से तुम छह लोग क्यों लड़ रहे हो?"

इस पर उन्होंने कहा—"ज्वायस के किले का यही नियम है। यहां से जो भी गुजरता है, उसे किले की रानी का दास बनना पड़ता है। अन्यथा उसे छह सैनिकों से लड़ना होता है।"

ब्राइटोमार्ट ने कहा—"कैसी अन्यायी रानी है तुम्हारी। मैं उसका आदेश मानने से इंकार करती हूं।" फिर उसने अपनी जादुई तलवार से छहों सैनिकों को पराजित कर दिया। वह तलवार चमकाती हुई ज्वायस के किले में घुस गई।

वहां ब्राइटोमार्ट को पता चला, पास में एक दूसरा किला है। उसमें एक लड़की को किसी ने कैद कर रखा है। बस, वह अकेली ही उधर चल दी। उस लड़की को कैद से मुक्त करा दिया। उसका नाम था अमोरट। उन्होंने पुरुष वेश धारण कर लिया। दोनों घोड़ों पर बैठकर चल दीं। उनकी योजना थी, रास्ते में मिलने वाले हर दुष्ट को हराने की।

दोपहर को वे एक मैदान से गुजर रही थीं, तो उन्हें एक सैनिक मिला। वही ब्राइटोमार्ट का खोया हुआ पति था। उसी की खोज में इतने दिनों से भटक रही थी बेचारी। दोनों एक तरफ जा बैठे। आपस में सुख-दुःख की बातें करने लगे।

थोड़ी देर बाद ब्राइटोमार्ट ने देखा, अमोरट गायब थी। असल में उसे एक दुष्ट व्यक्ति उठाकर ले गया। ब्राइटोमार्ट और उसका पति अमोरट की खोज में चले, तो उन्हें राजकुमार आर्थर भी मिल गया। आर्थर ने बताया कि कैसे उस जंगल में काफी देर तक भटकता रहा था। ब्राइटोमार्ट ने आर्थर को अपने पति अर्टेगल का परिचय दिया। फिर उन्होंने अमोरट को दुष्ट व्यक्ति की कैद से मुक्त कराया।

लेकिन अर्टेगल और ब्राइटोमार्ट ज्यादा देर तक साथ-साथ नहीं रह सके। परी रानी के आदेश पर अर्टेगल को एक औरत की मदद के लिए जाना पड़ा। उसके बाद अर्टेगल एक भयानक युद्ध में फंसकर बंदी बन गया। बेचारी ब्राइटोमार्ट उसके लौटने की प्रतीक्षा कर रही थी। बाद में उसे अपने पति के कैद हो जाने का पता चला। वह उसे छुड़ाने निकल पड़ी। अंत में वीरता से लड़कर उसे छुड़ा लाई।

धीरे-धीरे राजकुमार आर्थर, अर्टेगल, गुयोन और ब्राइटोमार्ट ने परी रानी का विरोध करने वाले कई दुष्ट जादूगर, भयानक जीव और अनेक बुरे लोगों को मार डाला। जो बचे उन्हें पकड़, परी लोक के कारागार में बंद कर दिया गया। जहां से वे कभी बचकर नहीं निकल सकते थे।

बुराई के विरुद्ध युद्ध करने के लिए परी रानी ने राजकुमार आर्थर, अर्टेगल, गुयोन और ब्राइटोमार्ट को विशेष उपहार दिए। इस तरह परी रानी की विशेष दावत समाप्त हुई। अब अगर किसी को कोई शिकायत थी, कोई कष्ट था, तो उसे पूरे एक वर्ष प्रतीक्षा करनी थी। उसके बाद ही परी रानी का विशेष दरबार लगने वाला था। आकाश में विचित्र आवाजें सुनाई दे सकती थीं। ●
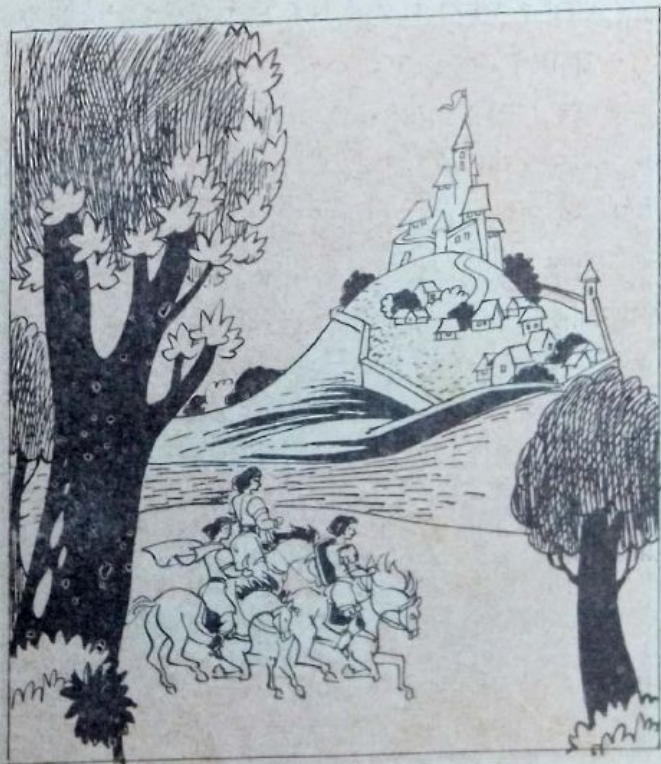
चली हवा

लेकर कुछ चांदी चंदा से
सूरज से कुछ सोना,
बैठ गई आकर, बुहारकर
जग का कोना-कोना।
लेकर एक तान कबिरा की
एक तान मीरा की !
चली हवा बगिया की।

कहीं कमल-सी खिली, कहीं यह
टेसू बनकर फूली,
कहीं एक टुकड़ा बादल बन
आसमान में झूली।
और कहीं बन सोन मछरिया
पानी में से झांकी !
चली हवा बगिया की।

कहीं फसल-सी पक गदराई
फूली नहीं समाई,
बैठ कहीं टीले पर थककर
बतियाई, सुस्ताई।
फिर वह बोली, चलूं सैर कर
आऊं अब दुनिया की !
चली हवा बगिया की।

—दामोदर अग्रवाल

गरमी का गीत

गरमी रे गरमी,
खेले क्यों धूल से !
तितली से हाथ मिला
बातें कर फूल से !

गरमी रे गरमी,
करती हैरान क्यों !
खिड़की-दरवाजों के
खींचे हैं कान क्यों ?

गरमी रे गरमी,
प्यास तेरी कैसी !
ताल-कुएं पी गई
फिर भी है वैसी।

गरमी रे गरमी,
गुस्सा क्यों होती ?
जल्दी ही बरसेंगे
बूंदों के मोती।

—हरीश निगम

सब रच डाले

धरती-अम्बर, जंगल-पर्वत
बादल-बिजली, नदी-सरोवर,
झील, मरुस्थल, फूल, घाटियां
कल-कल झरने, गहरे सागर।
सूरज-चंदा, जगमग तारे
रात अंधेरी, दिन उजियाले,
सर्दी-गरमी, रिमझिम वर्षा
ईश्वर ने जब सब रच डाले।

इसके बाद बनाए उसने
हाथी, घोड़ा, भालू, बंदर,
शेर, हरिण, बिल्ली औ' सूअर
अजगर, झींगुर, मक्खी-मच्छर।
तोता, मैना, बुलबुल, तीतर,
उल्लू, कपोत, कोकिला, मोर,
मेंढ़क, मछली, मकड़ी, तितली
चूहे, बिच्छू, बगुला, चकोर।

फिर ईश्वर ने सोचा—सबको
कौन काम में लेगा अपने,
भांति-भांति की इन चीजों को
वश में कौन करेगा अपने ?
तब फिर उसने सबसे सुंदर
एक बनाया बुद्धिमान नर,
अपना राजपाट दे उसको
रहने लगा सभी से छिपकर !

—रमेश कौशिक

दादी

गप्पू, अंप्पू, गोलू, पारुल
जन्म दिवस सबका मनता है,
पर इन बच्चों की दादी का
जन्म हुआ कब, नहीं पता है।

सूखा-बाढ़-अकाल-जलजला
ऐसा ही उस साल घटा था,
या अंग्रेजों की आफत से
भारत में भूचाल मचा था।
यही जन्म का ब्योरा भर है
सन्-सम्वत् का नहीं पता है।

जन्म दिवस दादी का फिर भी
बच्चे आज मनाएंगे,
मोमबत्तियां जला-बुझाकर
उनसे केक कटाएंगे।
तब कितनी खुश होंगी दादी
इसका भी तो किसे पता है !

—रमेश आजाद

कितनी जमीन

—टी. पक्षिराजन

तमिलनाडु में नदी के किनारे श्रीवैकुंठम नगर है। वहां षण्मुघ सिंहमणि कविरायर रहते थे। धार्मिक स्वभाव के सीधे-सच्चे इंसान थे। उनकी पत्नी शिवकाम सुंदरी भी उन्हीं की तरह दयालु और ईश्वर भक्त थीं। दोनों कार्तिकेय की उपासना करते थे।

सिंहमणि के कोई संतान नहीं थी। दोनों पति-पत्नी बार-बार प्रार्थना करते—"हे प्रभु, आप ही हमारा दुःख दूर कर सकते हैं।"

कार्तिकेय उनकी भक्ति से प्रसन्न हुए, तो उनके घर एक बालक ने जन्म लिया। बालक खूब सुंदर और स्वस्थ था। पुत्र का मुंह देख, माता-पिता खुशी से फूले न समाते थे।

लेकिन उनकी प्रसन्नता अधिक समय तक नहीं टिक पाई। दोनों उस दिन का इंतजार कर रहे थे, जब उनका बेटा उन्हें प्यार से 'मां', 'पिता' कहकर बुलाए। लेकिन पति-पत्नी बच्चे के मुंह से एक भी बोल सुनने के लिए तरस गए। बालक गूंगा था। माता-पिता ने उसे बोलना सिखाने की बहुत कोशिश की। लेकिन बालक एक शब्द भी नहीं बोल सका। इसी तरह पांच साल बीत गए। हर तरह का इलाज कराया। लेकिन बालक गूंगा ही रहा।

एक दिन षण्मुघ सिंहमणि ने पत्नी से कहा—"यह बालक हमें भगवान कार्तिकेय की कृपा से मिला था। वही इसे वाणी दे सकते हैं। उन्हीं की शरण में जाना चाहिए।"

पत्नी को भी यह बात जंच गई। दोनों बालक को तिरुचेंदूर ले गए। समुद्र तट पर बसे इस नगर में कार्तिकेय स्वामी का भव्य मंदिर है। दूर-दूर से धार्मिक लोग यहां दर्शन करने आते हैं।

षण्मुघ सिंहमणि और शिवकाम सुंदरी मंदिर के प्रांगण में जाकर ठहर गए। उन्होंने कार्तिकेय की पूजा और व्रत प्रारंभ कर दिए। दिन भर दोनों भजन गाते। बालक भी उनके साथ-साथ पूजा में शामिल होता।

धीरे-धीरे कई दिन बीत गए। लेकिन बालक वैसा ही था। इससे वे और अधिक चिंतित हो गए। पैंतालीसवां दिन भी आ गया। दिन भर ध्यान में लीन रहे। शाम के समय डूबते सूरज की किरणों से मंदिर नहा गया। सारा मंदिर सोने-जैसा लग रहा था।

षण्मुघ सिंहमणि और उनकी पत्नी बालक के साथ मंदिर में आए। कार्तिकेय के आगे हाथ जोड़कर पूजा करने लगे। बालक भी चुपचाप हाथ जोड़कर खड़ा था। षण्मुघ सिंहमणि की आंखों से आंसू बह आए। रुंधे कंठ से कहा—"हे प्रभु, आप दया के सागर हैं। हमारा दुःख दूर कीजिए।"

यह देख, शिवकाम सुंदरी भी रो पड़ीं।

तभी समुद्र की लहरों का भीषण गर्जन सुनाई दिया। फिर सारे मंदिर में अद्भुत प्रकाश फैल गया। बालक के होंठ हिले। आवाज सुनाई दी। देखकर सभी हैरान थे। बालक भगवान कार्तिकेय की प्रशंसा में मधुर भजन गा रहा था। भजन की पंक्तियां इस तरह होंठों से निकल रही थीं, जैसे कोई झरना फूट पड़ा हो।

गूंगा बालक गा उठा था। देखने वाले चुप खड़े थे। जैसे वे गूंगे बन गए हों। ऐसा अद्भुत चमत्कार किसी ने पहले देखा न था। गूंगा बालक न केवल बोलने लगा, बल्कि इतनी अच्छी कविता भी रच डाली! मंदिर की घंटियों से 'ओइम् ओइम्' की आवाज सुनाई देने लगी। मंदिर में दर्शन करने आए भक्तों ने गद्‌गद् स्वर में कहा—"इतनी मधुर आवाज? आश्चर्य है।"

उस दिन से बालक का नाम कुमर गुरुपरर पड़ गया। यह भी भगवान कार्तिकेय के ही अनेक नामों में से एक है।

कुछ दिन बाद कुमर गुरुपरर और उसके माता-पिता अपने गांव लौट गए। गुरुपरर ने वहां शिव की महिमा में काव्य की रचना की। लेकिन घर में उसका मन नहीं लगता था। वह तीर्थ यात्रा के लिए निकल पड़ा। अनेक तीर्थों पर जाकर पूजा की। जहां भी जाता, लोग उससे प्रभावित हो जाते थे।

कुछ दिन बाद कुमर गुरुपरर मदुरै पहुंचा। प्राचीन मीनाक्षी अम्मन मंदिर का आकर्षण उसे अपनी ओर खींच रहा था। मीनाक्षी अम्मन की पूजा के लिए गया, तो मन रोमांचित हो उठा। शरीर बेसुध हो गया। तभी उसके होंठों से देवी की प्रशंसा में एक भक्ति काव्य फूट पड़ा। अद्भुत थी वह कविता!

उस समय मदुरै का राजा था तिरुमलै नायकर। सपने में उसे मीनाक्षी देवी ने दर्शन दिए। कहा—"मेरे भक्त कुमर गुरुपरर ने मुझ पर एक सुंदर काव्य रचा है। मैं उसे सुनना चाहती हूं। तुम एक विशाल आयोजन करो, जिससे सभी लोग इस काव्य का आनंद ले सकें।"

उसी समय राजा की नींद खुल गई। उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। सुबह उसने मंत्रियों और दरबारियों को बुलाया। सबको साथ लेकर कुमर गुरुपरर के पास जा पहुंचा। जाते ही उनके चरण छू लिए। फिर राजा ने रात के स्वप्न के बारे में बताया। उसी दिन मंदिर के विशाल मंडप में आयोजन किया गया। कुमर गुरुपरर को एक पालकी में मंदिर तक लाया गया।

कुमर गुरुपरर मीनाक्षी देवी की स्तुति में लिखी अपनी कविता गाकर सुनाने लगे। राजा, विद्वान और भक्त सभी ध्यान से एक-एक शब्द सुन रहे थे। सुनते-सुनते सभी भक्ति में लीन हो गए।

पांच दिन बीत गए। छठे दिन एक और चमत्कार हुआ। पुजारी की नन्ही बेटी मंदिर में आई। सीधे जाकर राजा की गोद में बैठ गई। गुरुपरर के काव्य में सभी खोए हुए थे। किसी को पता न चला। अचानक लड़की उठ खड़ी हुई। राजा के गले से हीरे का हार उतारा, गुरुपरर के गले में पहना दिया। सारा मंडप प्रकाशमय हो उठा। उसी समय नन्हीं लड़की

अंतर्धान हो गई। अब लोगों की समझ में आया, उस नन्ही लड़की के रूप में स्वयं मीनाक्षी देवी आई थीं।

राजा आनंद से पुलकित हो उठा। गद्‌गद् स्वर में कहा—"स्वामीजी, आपकी कृपा से मुझे मीनाक्षी देवी के दर्शन हुए। पहले स्वप्न में उन्हें देखा। और फिर अपनी आंखों से उनके दर्शन किए। मैं किस तरह आपको धन्यवाद दूं।"

कुछ दिन तक और इसी तरह कविता पाठ चलता रहा। कुमर गुरुपरर की कविता जब पूरी हुई, मंडप में सन्नाटा छा गया। राजा, दरबारी, भक्तजन सभी जैसे तन-मन की सुध भूले हुए थे।

राजा तिरुमलै नायकर ने कुमर गुरुपरर को अनेक बहुमूल्य उपहार दिए। गुरुपरर वहां से बनारस आए। गंगा के तट पर डेरा डाला। वहां भगवान विश्वनाथ की पूजा की।

अब गुरुपरर ने काशी के राजा से भेंट करने का निश्चय किया। लेकिन एक कठिनाई थी। वह तमिल भाषा के विद्वान थे। हिंदी नहीं जानते थे। उन्होंने देवी सरस्वती की पूजा करने का निश्चय किया। कविता रचकर सरस्वती की स्तुति की। सरस्वती ने स्वयं प्रकट होकर वरदान दिया—"तुम्हारी मनोकामना पूरी हो।" बस, गुरुपरर देखते-देखते हिंदी के विद्वान हो गए।

वह काशी के राजा से मिलने जाने के लिए तैयार थे। उन्होंने सोचा—'क्यों न राजा को कोई चमत्कार दिखाया जाए?'

तभी बड़े जोर की गर्जना हुई। दहाड़ता हुआ, एक भयंकर शेर प्रकट हुआ। देखकर सब भयभीत हो उठे। गुरुपरर मुसकराते हुए उस पर जा बैठे। राजा के पास चल दिए। लोग कह रहे थे—'देखो, इस सिद्ध संत की महिमा! जंगल के राजा पर बैठ, काशी के राजा से मिलने जा रहा है।'

काशी के राजा ने शेर पर सवार संत को देखा, तो हक्के-बक्के रह गए। सिंहासन से उतरकर उनके स्वागत के लिए आए। गुरुपरर ने राजा को भक्ति और ज्ञान के बारे में उपदेश दिया। कहा—"तांबे का कलश मंगाइए।"

तुरंत तांबे का कलश मंगाया गया। गुरुपरर ने उसे छू भर दिया। बस, वह सोने का सा बन गया। गुरुपरर ने दोबारा छुआ, तो वह कलश ठोस सोने का बन गया। राजा संत के इस चमत्कार को देख रहे थे। गुरुपरर ने समझाया—"दीन-दुखी लोगों को भी ईश्वर अपनी कृपा से श्रेष्ठ बना देता है। वैसे ही, जैसे तांबे का कलश सोने का बन गया।"

सुनकर राजा बेहद प्रभावित हुआ। विनम्रता से पूछा—"स्वामीजी, बताइए। हम आपकी क्या सेवा करें?"

—"मेरी सिर्फ एक ही इच्छा है। संसार में भक्ति और ज्ञान का प्रकाश फैले। इस पवित्र नगरी में एक मठ बनाना चाहता हूं।"

—"जहां भी चाहें, इसके लिए जमीन ले लें। बताइए, कितनी जमीन की आवश्यकता होगी?"

"कल केदारनाथ मंदिर के निकट एक गरुड़ उड़ान भरेगा। जितनी जमीन पर वह उड़ान भरे, मठ के लिए वही चाहिए।"—गुरुपरर ने मुसकराते हुए कहा।

राजा फिर हैरान! अगले दिन सचमुच केदारनाथ मंदिर के निकट गरुड़ को उड़ान भरते देखा। राजा ने वही जमीन दे दी। उस स्थान पर कुमरस्वामी मठ बना। कुमर गुरुपरर लम्बे समय तक वहां ज्ञान और ईश्वर भक्ति का उपदेश देते रहे।●
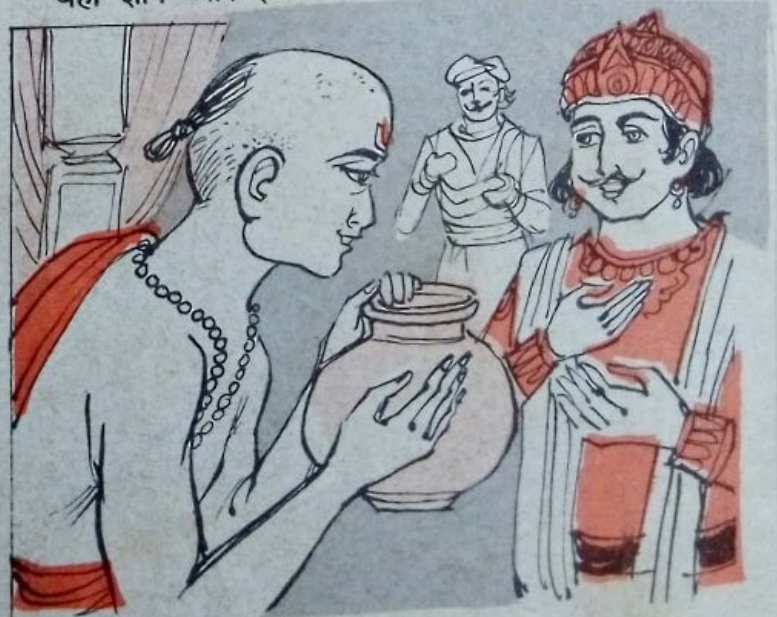
आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं । ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है । नीचे इसी चित्र की नकल है । नीचे वाला चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया और उसने कुछ गलतियां कर दीं ।

आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए । क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? उसमें दस गलतियां हैं । सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है ? १० गलतियां ढूंढ़ने वाला: **जीनियस;** ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला: **बुद्धिमान;** ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला: **औसत बुद्धि;** ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला: **वह स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए !**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं । आप सावधनी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए । आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित समय—**१५ मिनट ।**

कहानी लिखो: ४३

सामने बने चित्र के आधार पर एक कहानी लिखिए । उसे १० जून '८७ तक नंदन कार्यालय में भेज दीजिए । चुनी गई कहानी 'नंदन' में छपेगी । इनाम भी मिलेगा । **परिणाम :** अगस्त '८७ अंक

चित्र पहेली : ४३

'चलें पहाड़ पर' विषय पर रंगीन चित्र बनाइए । उसे १० जून '८७ तक **सम्पादक 'नंदन', हिन्दुस्तान टाइम्स हाऊस, नई दिल्ली-११०००१** के पते पर भेज दीजिए । चुना गया चित्र पुरस्कृत कर प्रकाशित किया जाएगा । **परिणाम : सितम्बर '८७ अंक**

नील धारा

बहुत बरस पहले गंगा धरती पर नहीं उतरी थीं। हिमालय के घोर वनों में अनेक ऋषि तप करते थे। भारत के राजा सगर के अनेक पुत्र थे। एक बार वे सब मिलकर धरती के छोर का पता लगाने हिमालय पहुंचे।
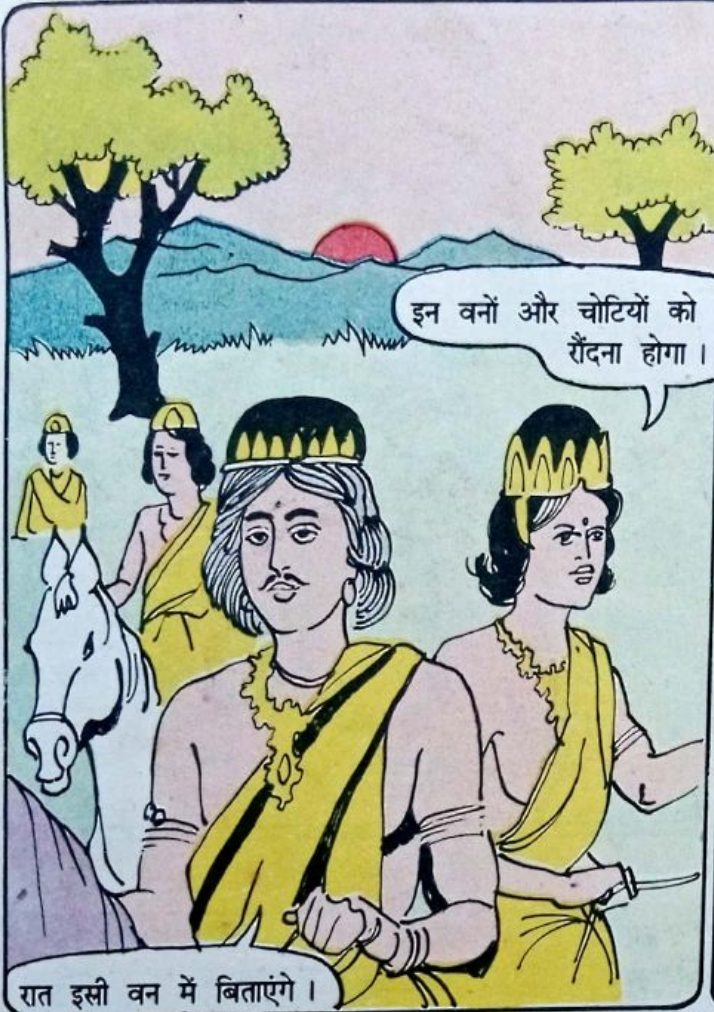
सगर का प्रपौत्र था भगीरथ । कपिल मुनि के शाप से भस्म हुए पूर्वजों की मुक्ति के लिए उसने गंगा की आराधना की ।

गंगा ऋषिकेश से आगे बढ़ी ही थीं कि सप्तर्षि आश्रम के पास. . .

इन सबको प्रसन्न किए बिना आगे कैसे बढ़ें ?

सप्त ऋषियो, मेरा प्रणाम स्वीकारो । यहां मैं सात धाराओं में बंट कर आगे बढ़ूंगी, ताकि आपके तप में विघ्न न पड़े ।

कुछ आगे गंगा की दाईं धारा से एक कुंड बना। उस कुंड के तट पर राजा श्वेत ने ब्रह्माजी की आराधना की. . .
ओऽम नमो ब्रह्माय !
ब्रह्मा प्रसन्न हुए। वर दिया. . .
वर मांगो राजा श्वेत !
यह स्थान आपके नाम से प्रसिद्ध हो। आप, भगवान शिव और विष्णु सहित यहीं निवास करें।
तथास्तु ! यह स्थान परम पावन ब्रह्म कुंड कहलाएगा।
उसी ब्रह्मकुंड पर राजा विक्रमादित्य के भाई भर्तृहरि ने तपस्या कर शिव को प्रसन्न किया।
मेरे प्रभु !
मैं इस कुंड में सदैव विद्यमान रहूंगा।
भर्तृहरि की स्मृति में विक्रमादित्य ने ब्रह्मकुंड की पैड़ियां (सीढ़ियां) बनवाईं।
सभी इसे हरि की पैड़ी के नाम से याद रखेंगे।
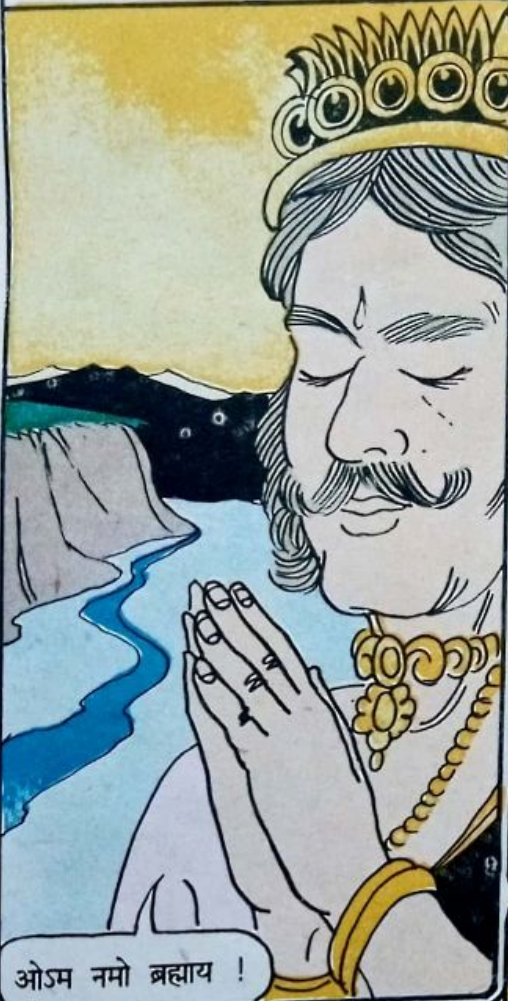
एक बार देवता और दानवों ने मिलकर समुद्र मथा। अमृत निकला। जयंत अमृत का कलश लेकर भागा। अमृत छलक कर ब्रह्मकुंड में गिरा।

ब्रह्मकुंड का जल अमृत समान बन गया। यहां पूर्ण कुंभ और अर्ध कुंभ लगते हैं।
जय गंगे!
हर हर गंगे!
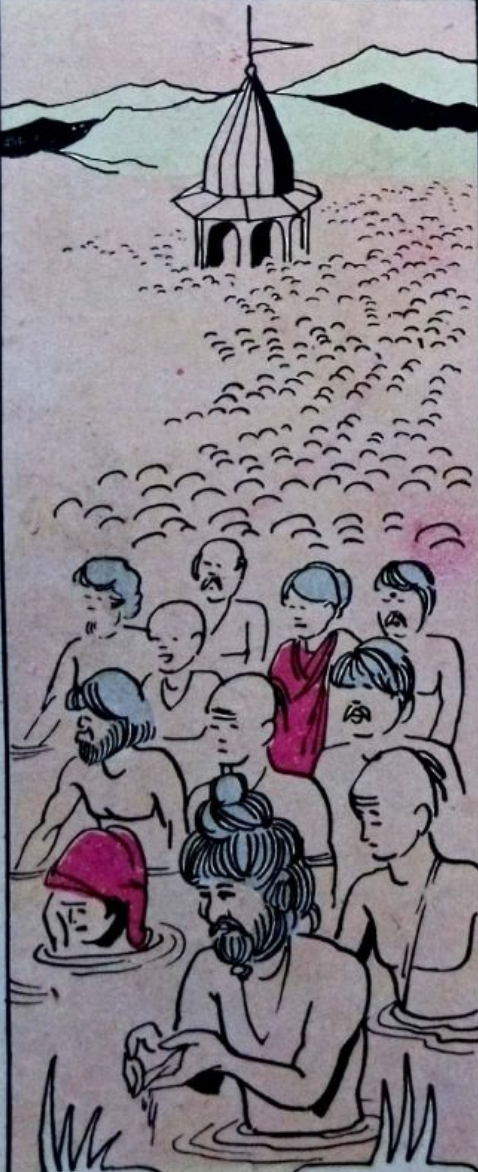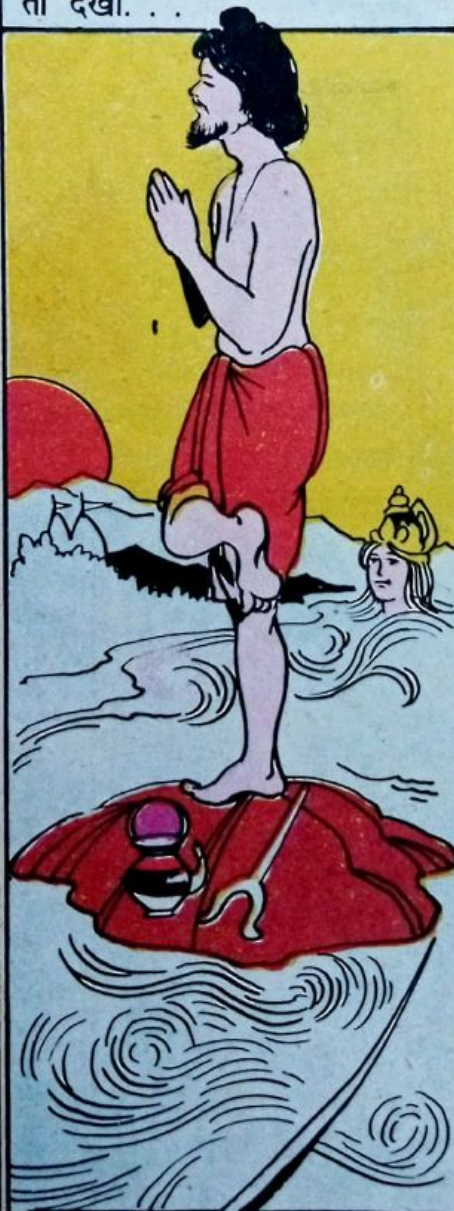
हरि की पैड़ी से गंगा आगे बढ़ीं तो देखा. . .
दत्तात्रेय! आंखें बंद किए एक पैर पर खड़े हैं इनका सामान बहा ले चलूं।

देखो मेरी गति! हा—हा—हा!!

हिंदुस्तान टाइम्स का प्रकाशन

-बच्चों का अखबार-
नंदन बाल समाचार

नंदन का शुल्क
एक वर्ष : २६ रुपए
दो वर्ष : ५० रुपए

वर्ष २३, अंक ८, नई दिल्ली, जून '८७, ज्येष्ठ, शक सं. १९०९

खेलों में दिल्ली सबसे आगे

"पिछले तीन वर्षों में दिल्ली प्रशासन ने खेलों और खिलाड़ियों को प्रोत्साहन देने की अनेक नई योजनाएं शुरू की हैं। देश में दिल्ली ही अकेला ऐसा प्रदेश है, जहां खिलाड़ियों को आगे जाने की इतनी अधिक प्रेरणा दी जाती है।"

दिल्ली के उप-शिक्षा निदेशक (खेल) श्री रामगोपाल गोयल ने दिल्ली प्रशासन की खेल नीति के बारे में बताते हुए ये विचार प्रकट किए। श्री गोयल स्वयं भी बहुत अच्छे खिलाड़ी हैं।

उन्होंने कहा—"टेनिस, बैडमिंटन, तैराकी जैसे खर्चीले खेलों में यहां निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जाता है, जबकि दूसरी संस्थाओं और अन्य प्रदेशों में खेलों के प्रशिक्षण के लिए शुल्क वसूल किया जाता है।

प्रशासन ने तीन वर्ष पहले एक स्पोर्ट्स स्कूल की स्थापना की थी। यह छत्रसाल स्टेडियम तथा लुडलो कैसल में है। उदीयमान खिलाड़ियों को चुनकर उन्हें किसी एक खेल का प्रशिक्षण दिया जाता है। उन्हें मुफ्त पौष्टिक आहार, जलपान, खेल का सामान देने के साथ-साथ आने-जाने के लिए किराया भी मिलता है। एक खिलाड़ी पर हर मास औसतन दो सौ पचास रुपए खर्च किए जाते हैं। इस समय २३२ विद्यार्थी छह खेलों में प्रशिक्षण पा रहे हैं।

प्रशासन ने सात नए खेल परिसर बनाए हैं। इन पर २ करोड़ रुपए खर्च हुए हैं। ये परिसर त्यागराज नगर, भारत नगर, अशोक विहार 'डी ब्लाक', शकूरपुर, रमेशनगर, ढका तथा छत्रसाल स्टेडियम में हैं। यहां राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं के लिए खिलाड़ी तैयार किए जाते हैं।

इस वर्ष राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में पहले तीन स्थान जीतने वाले दिल्ली के खिलाड़ियों को सम्मानित किया गया। साथ ही यहां की खेल संस्थाओं को डेढ़ लाख रुपया अनुदान के रूप में दिया गया। खिलाड़ियों को खेल छात्रवृत्ति भी दी गई।

इस वर्ष पहली बार हर महानगर परिषद क्षेत्र में वनपंथी दौड़ तथा अन्य खेलों का आयोजन हुआ। इनमें स्कूलों के २ लाख से अधिक छात्रों ने भाग लिया।

प्रशासन की इच्छा है कि दिल्ली के खिलाड़ी एशियाई तथा ओलम्पिक खेलों में पदक जीतकर प्रदेश और देश का गौरव बढ़ाएं।"

श्री गोयल ने कहा कि दिल्ली के मुख्य कार्यकारी पार्षद जगप्रवेश चंद्र तथा कार्यकारी पार्षद (शिक्षा) कुलानंद भारतीय खेलों के विकास में बहुत रुचि लेते हैं।

लहसुन खाओ

बीजिंग। डाक्टरों ने पाया है कि लहसुन तथा हरी सब्जियां स्वस्थ रखने में तो सहायक हैं ही, यदि इनका नियमित प्रयोग किया जाए, तो कैंसर तथा अन्य जानलेवा बीमारियां भी रोकी जा सकती हैं।

नन्हे राजदूतों का सम्मेलन

संयुक्त राष्ट्रसंघ। यहां देश-विदेश के बाल राजदूतों का सम्मेलन हुआ। सम्मेलन का संचालन नौ वर्ष की मानवी वर्मा ने किया। इन देशों के राजदूत 'नन्हे राजदूतों' की कार्यवाही ध्यान से देखते रहे। नन्हें राजदूतों ने मानवी की बात को बड़े ध्यान से सुना। मानवी ने कहा—"हम यहां सिर्फ हंसने या गाने नहीं आए हैं, बल्कि हम विश्व की समस्याओं के बारे में बात करने आए हैं। साल के ३६४ दिन हम अपने माता-पिता की बात मानते हैं। एक दिन तो उन्हें हमारी बात माननी चाहिए।" नन्हे राजदूतों ने एक मिनट के लिए आंखें बंदकर मौन रखा, जिससे वे शांतिमय विश्व के सपने देख सकें। मानवी एक वर्ष तक सम्मेलन की अध्यक्ष रहेगी।

कुत्ते की ममता

ऊधमपुर। नवजात शिशु को कोई फेंक गया था। एक कुत्ते ने वहां पड़े उस शिशु को देखा, तो वह उसके पास जा बैठा। पूरी रात बच्चे की निगरानी करता रहा। न उसने कुछ खाया, न सोया। बल्कि मालिक के बार-बार पुकारने पर भी वह वहां से नहीं उठा। जब कुत्ते का मालिक वहां आया, तो उसे असली बात पता चली। उसने बच्चे को उठाया। फिर कुत्ता भी वहां से उठ चला।

इमारतों की देखभाल

नई दिल्ली। भारतीय पुरातत्व विभाग ३५२१ पुरानी इमारतों की देखभाल करता है। इन इमारतों की देखभाल पर प्रति वर्ष पैंसठ लाख रुपए खर्च होते हैं।

पाठक अपने अखबार को खींचकर अलग निकाल लें।

बच्चों का अखबार-

नंदन बाल समाचार

यदि तुम योग्य हो तो तुम्हें दूसरों की सहायता जरूर मिलेगी । —स्वामी रामतीर्थ

पत्र मिला : उत्तर नदारद

नंदन के पाठकों की संख्या लाखों में है । हर सप्ताह हजारों पत्र वे लिखते हैं । नंदन में छपी रचनाओं पर अपनी राय भेजते हैं । वे पढ़कर चुप नहीं बैठ जाते, अपने विचार लिखते हैं । इससे यह तय है कि वे समझदार और सच्चे पाठक हैं । वे बधाई के पात्र हैं ।

जितने भी पत्र आते हैं, उन सभी को मैं अवश्य पढ़ता हूं । कई पाठक लिखते हैं कि पत्र का उत्तर अवश्य देना । पर उत्तर देने के लिए उनके पत्र में कुछ होता नहीं । कई पत्रों में पता नहीं होता, उत्तर भेजें तो कहां ? कुछ पत्र भद्दी लिखावट में होते हैं । उन्हें पढ़ना आसान नहीं होता । पत्र लिखें, साफ-साफ लिखें—अपनी बात को ठीक से लिखें, अपना पता अवश्य लिखें । पत्र-लेखन एक कला है, उससे बहुत-से लाभ भी हैं ।

मोटापा दूर करो

बर्मिंघम । यदि आप मोटे हैं तो आपको यह देखना होगा कि मोटापा शरीर के किस हिस्से पर ज्यादा है । पेट से लेकर सीने तक चढ़ा मोटापा ज्यादा खतरनाक है । इससे दिल के दौरे की सम्भावना कई गुना बढ़ जाती है ।

सोने की खोपड़ी

लीमा । कुछ चोर एक कब्रिस्तान में घुसे । वहां उन्होंने एक कब्र खोदी । वहां उन्हें सोने से बनी एक खोपड़ी मिली । पुलिस को इस चोरी का पता चला, तो उसने चोरों के ठिकानों पर छापा मारा । वहां सोने से बनी यह खोपड़ी भी मिल गई । पुरातत्व खोजियों के लिए यह खोपड़ी नक्काशी का एक अद्‌भुत नमूना है ।

सुनहरा बाज

बान । पश्चिम जर्मनी में सुनहरा बाज फिर से नजर आने लगा है । एक सौ अस्सी वर्ष पहले यह पक्षी लुप्त हो गया था । शिकारियों ने इसे लाखों की संख्या में खत्म कर दिया था ।

पुरस्कार : सोने की तलवार

अबूधाबी । यहां ऊंटों की एक दौड़ की गई । दौड़ में भाग लेने के लिए अधिकांश अरब देशों से ऊंट आए । पुरस्कार मे एक सोने की तलवार तथा १०३ कारें दी गईं ।

अद्‌भुत लड़का

मास्को । साशा तेरह वर्ष का है । उसकी उपस्थिति भर से चीजें जलने लगती हैं । साशा सम्पन्न परिवार का लड़का है । मगर उसके माता-पिता का कहना है, साशा के कारण उनके घर की सभी चीजें जल जाती हैं । पिछले दिनों साशा को अस्पताल में दाखिल कराया गया, तो वहां पास लेटे लड़के के कपड़ों में आग लग गई ।

रामायण सम्मेलन

नई दिल्ली । तीसरा अंतर्राष्ट्रीय रामायण सम्मेलन कनाडा में होगा । यह चार दिन चलेगा । इसमें चौबीस देशों के विद्वान भाग लेंगे । इस अवसर पर रामलीला भी होगी ।

मछली वायुयान से टकराई

शिकागो । आसमान में मछली जहाज से टकरा जाए ? है न आश्चर्य ! मगर हुआ बिलकुल ऐसा ही । जहाज उड़ान पर था, अचानक सामने एक चील आ गई । चील घबराकर रास्ते से हटी, तो मुंह से पकड़ी मछली छूट गई और जहाज से जा टकराई ।

तोते को बचाया

बेवेरिया । एक शहर में पुलिस थाने में फोन पर एक परेशान महिला की आवाज गूंजी । उसका तोता रसोई घर में बनी अलमारी के पीछे फंस गया था । दो पुलिस वाले वहां पहुंचे । उन्होंने पेचकस की सहायता से पूरी अलमारी को खोला, तब कहीं जाकर तोता निकल सका ।

डाल्फिनों की मौत

रियोदिजेनरो । ब्राजील में समुद्र के किनारे दो हजार से ज्यादा डाल्फिन मछलियां मर गईं । अभी तक डाल्फिनों की रहस्यमय मौत का पता नहीं चल सका है । कुछ लोगों का मानना है, शायद पानी अधिक ठंडा होने के कारण ऐसा हुआ हो ।

प्रदूषण और पेड़

नई दिल्ली । दिल्ली के उप राज्यपाल हरकिशनलाल कपूर वजीरपुर औद्योगिक क्षेत्र के दौरे पर गए । धुंआ उगलती फैक्ट्रियों को देख, राज्यपाल को वायु प्रदूषण का अहसास हुआ । उन्होंने फौरन आदेश दिया कि इस क्षेत्र में पांच हजार पौधे लगाए जाएं ।

अमरीका में गरीब बच्चे

न्यूयार्क । अमरीका में एक करोड़ तीस लाख बच्चे बेहद गरीब हैं । यह कुल बच्चों का बीस प्रतिशत है । इन बच्चों को जीने की कम से कम सुविधाएं भी प्राप्त नहीं हैं ।

नया यंत्र

लेनिनग्राद । सोवियत संघ के वैज्ञानिकों ने दिमाग के आपरेशन के लिए नया यंत्र बनाया है । इसके जरिए खोपड़ी को बिना खोले आपरेशन किया जा सकता है ।

लेखक कंप्यूटर

पेरिस । फ्रांस की कम्पनी ने नए किस्म का कंप्यूटर बनाया है । आम तौर पर कंप्यूटरों के इस्तेमाल के लिए 'की बोर्ड' की जरूरत होती है । मगर इस कंप्यूटर में 'की बोर्ड' नहीं है । जैसे ही कोई व्यक्ति लिखना चालू करेगा, वह सामग्री कंप्यूटर के परदे पर आती जाएगी ।

देवता का शाप नहीं

बैतूल । भारतीय स्टेट बैंक ने यहां के ग्रामीण क्षेत्रों में आयोडीन नमक बांटा । इस क्षेत्र में आदिवासी बड़ी संख्या में रहते हैं । उन्हें आयोडीन की कमी के कारण घेंघा रोग हो जाता है । बैंक अधिकारियों ने आदिवासियों को यह भी समझाया कि यह रोग है, देवताओं का शाप नहीं ।

कटखना आदमी

लंदन । कुत्ता तो आदमी को काटता है, मगर आजकल आदमी कुत्ते को काटने लगे हैं । दो अपराधियों को पकड़ने के लिए जब पुलिस कुत्ता लाई, तो एक अपराधी ने लपककर कुत्ते का कान काट लिया । इस व्यक्ति को गिरफ़्तार कर लिया गया ।

गधे का स्मारक

मेसीना (इटली) । यहां पास के गांव में गधे का स्मारक बनाया जाएगा । यहां के निवासियों का कहना है, बेचारे गधे की तरफ कोई ध्यान नहीं देता । आज के वैज्ञानिक युग में तो हम गधे को बिलकुल ही भूल चुके हैं । जबकि वह बिना कुछ कहे, सदियों से मनुष्य द्वारा लादा गया बोझ ढो रहा है ।

शिव मंदिर मिला

इंदौर । म. प्र. के धार जिले में एक हजार वर्ष से भी पुराना एक मंदिर मिला है । तीस फुट खुदाई के बाद यह मंदिर निकला । एक ही चट्टान से काटकर यह मंदिर बनाया गया था ।

पेटू हथिनी

डुडले (इंग्लैंड) । अफ्रीकी हथिनी एस्थर ने खाना शुरू किया, तो खाती ही गई । इससे उसका पेट इतना फूल गया कि उसके लिए खड़ा होना मुश्किल हो गया । यहां तक कि वह हिल-डुल भी नहीं सकती थी । तब फायर ब्रिगेड वालों की मदद ली गई । एस्थर को उन्होंने हवा भरे थैलों के ऊपर लिटाया, हिलाया-डुलाया, तब कहीं वह ठीक हुई ।

सिगरेट पिओ : जुर्माना दो

ओटावा । कनाडा में सार्वजनिक स्थानों पर अब कोई सिगरेट नहीं पी सकेगा । तम्बाकू सम्बंधी सभी विज्ञापनों पर जनवरी १९८९ तक रोक लगा दी जाएगी । जो भी इन नियमों का उल्लंघन करेगा, उसे सख्त सजा दी जाएगी ।

साहसी यात्री

तोकियो । शिंजी काजमा जापानी व्यक्ति हैं । वह अपनी मोटर साइकिल पर सवार होकर उत्तरी ध्रुव तक पहुंचे हैं । मोटर साइकिल से उत्तरी ध्रुव की यात्रा करने वाले वह पहले व्यक्ति हैं ।

छोटे बच्चों का विकास

नई दिल्ली । छोटे बच्चों की देखभाल और विकास कैसे हो ? इस विषय पर तीन दिन की गोष्ठी की गई । गोष्ठी राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान परिषद ने की थी । परिषद छह वर्ष से कम उम्र के बच्चों के विकास के लिए एक पूरा कार्यक्रम तय करेगी ।

नन्हे समाचार

- ☐ चीन के शंघाई नगर में खुदाई के दौरान द्वितीय विश्व युद्ध के समय के अनेक बम मिले । उन्हें नष्ट करने के लिए भी बारूद का सहारा लेना पड़ा ।
- ☐ केन्या में एक छोटे से हवाई जहाज का इंजन खराब हो गया । पायलट ने जहाज को सड़क पर जाते ट्रक पर उतार लिया । ट्रक में बैठे आदमियों को कुछ नहीं हुआ, पायलट भी बच गया ।
- ☐ सोवियत संघ के कजान शहर में सत्रहवीं सदी की ५८ मीटर ऊंची मीनार है, जो लगातार एक तरफ को झुकती ही जा रही है ।
- ☐ अमरीका में कुछ लड़के-लड़कियां पेराशूट बांधकर जहाज से कूदे । एक लड़की दूसरे साथी से टकराकर बेहोश हो गई । प्रशिक्षक ने यह देखा, तो वह लड़की को संभालकर नीचे तक ले आया ।
- ☐ सीरिया में खुदाई के दौरान प्राचीन मेसोपोटामिया की ४००० वर्ष पहले की राजधानी का पता चल गया । पुरातत्व खोजी काफी समय से इसकी तलाश कर रहे थे ।
- ☐ ताशकंद विश्वविद्यालय में संस्कृत की पढ़ाई शुरू हो गई है ।
- ☐ विशाल ब्रह्मपुत्र नदी पर सड़क पुल बनकर तैयार हो गया है । यह तीन किलोमीटर से भी अधिक लम्बा है ।
- ☐ एक शार्क बंगाल की खाड़ी से भटक कर बंगला देश की मेघना नदी में चली आई । वहां एक जाल में फंसकर मर गई । पर मरने से पहले उसने २८ शिशु शार्कों को जन्म दिया ।
- ☐ जर्मनी में युद्ध के कारण बिछुड़े भाई-बहन ४३ वर्ष बाद मिले और वह भी अचानक ।

सचित्र समाचार

श्री अरविंद मेमोरियल स्कूल, बंगलौर के बच्चों ने रंगारंग कार्यक्रम किए।

↑ बच्चे के सिर पर जूड़ा या जटाजूट नहीं है। सिर की बनावट ही ऐसी है।

← हिन्दुस्तान टाइम्स समूह ने कार्टून प्रतियोगिता की। विषय था—'मुझे किस बात पर हंसी आती है।' इसमें तीन हजार युवा व्यंग्य चित्रकारों ने हिस्सा लिया। इसमें गणेश महादेवन → प्रथम, पी. मैथ्यू द्वितीय तथा नील जानसन तृतीय रहे।

मेरठ में शालिनी शर्मा (१२ वर्ष) को भरतनाट्यम् नृत्य पर प्रथम पुरस्कार। ↓

फूलों भरी यह पेंटिंग सवा दो करोड़ पौंड की बिकी। इसे बनाने वाले चित्रकार विसेंट वान गाग अपने जीवन काल में इसे सस्ते दामों पर भी नहीं बेच सके थे।

फूलों का हार नहीं, ईश्वर ने मुझे अपने ही सींगों का हार पहना दिया है—भैंस शायद यही सोच रही है।

दत्तात्रेय के तप ने चमत्कार किया. . .
ओह ! ये सारी वस्तुएं इतनी भारी कैसे बन गईं ? उफ, मेरे शरीर पर भंवर ?
और. . .
बचाओ !
दत्तात्रेय की समाधि टूटी. . . .
गंगा तू ! मेरा सामान चुराए लिए जा रही है ! ठहर, तुझे भस्म करता हूं ।
दत्तात्रेय ने गंगा को भस्म करने के लिए हाथ में जल लिया ही था. . .
गंगा को क्षमा करो ।
शांत, शांत भगवन ! क्रोध त्याग दो
क्षमा, क्षमा ।
गंगा में जहां मेरा सामान गोलाई में घूमा, उसे कुशावर्त घाट कहा जाएगा ।
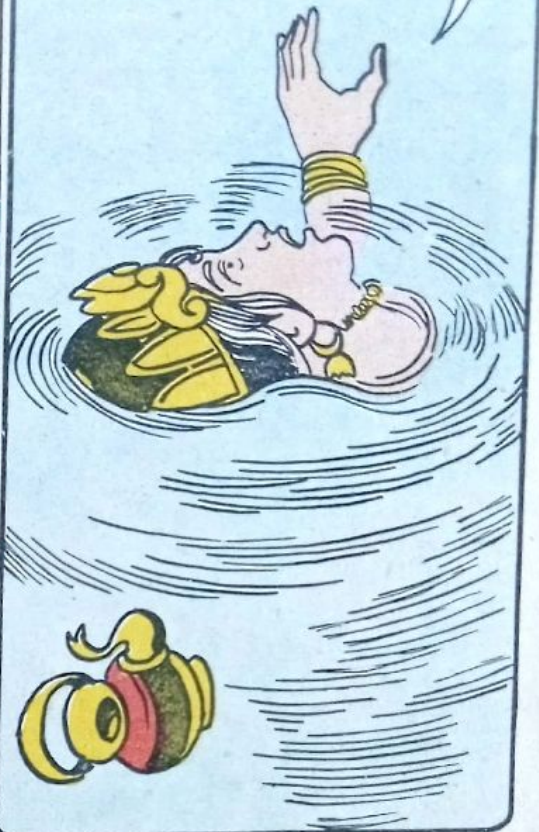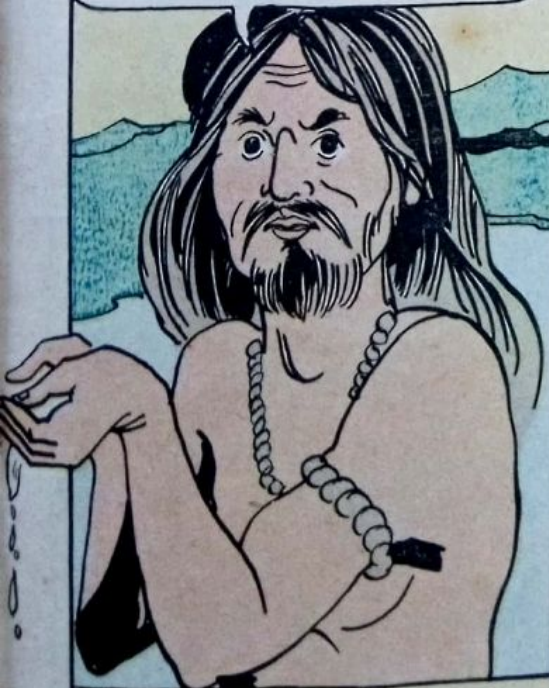
हरिद्वार को मायापुरी कहा गया है । एक बार प्रजापति दक्ष ने यहां यज्ञ किया । उसमें शिव को नहीं बुलाया । इस पर उसकी पुत्री सती ने प्राण त्याग दिए ।
तुझे भी किसने बुलाया ! अरे, अरे . . .
?!!
पिताजी, आपने मेरे पति शिव का अपमान किया । मैं यह नहीं सह सकती ।
शिव गणों ने यज्ञ का विध्वंस कर दिया । दक्ष को मार डाला ।
किंतु सती के वियोग में शिव. . .
अब मैं कहीं भी चैन से नहीं रह सकता । कहीं ठहर भी नहीं सकता ।
शिव लोप हुए तो देवता भगवान विष्णु के पास पहुंचे
प्रभु, शिव का मोह भंग कीजिए । धरती के तीर्थों की रक्षा कीजिए ।

भगवान विष्णु के प्रयास से शिव का मोह भंग हुआ। देवताओं की प्रार्थना से वह प्रसन्न हुए।

कल्याण हो। सबके हित के लिए क्या करूं?
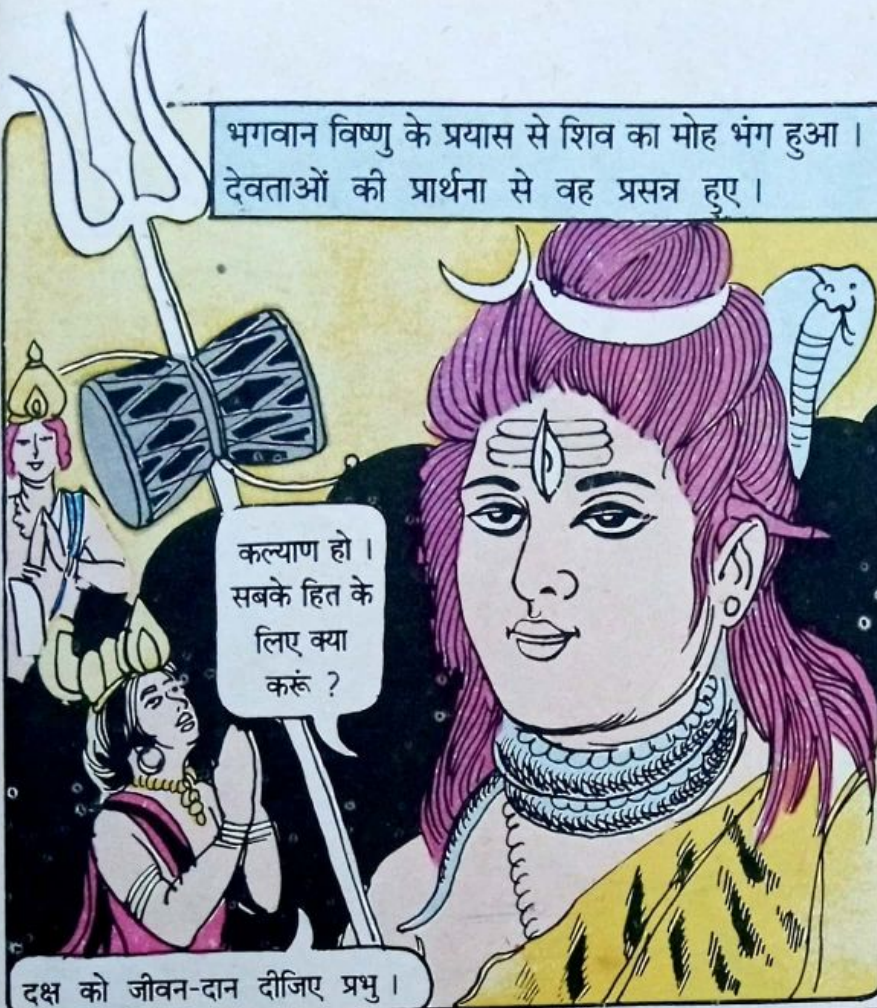
दक्ष को जीवन-दान दीजिए प्रभु।
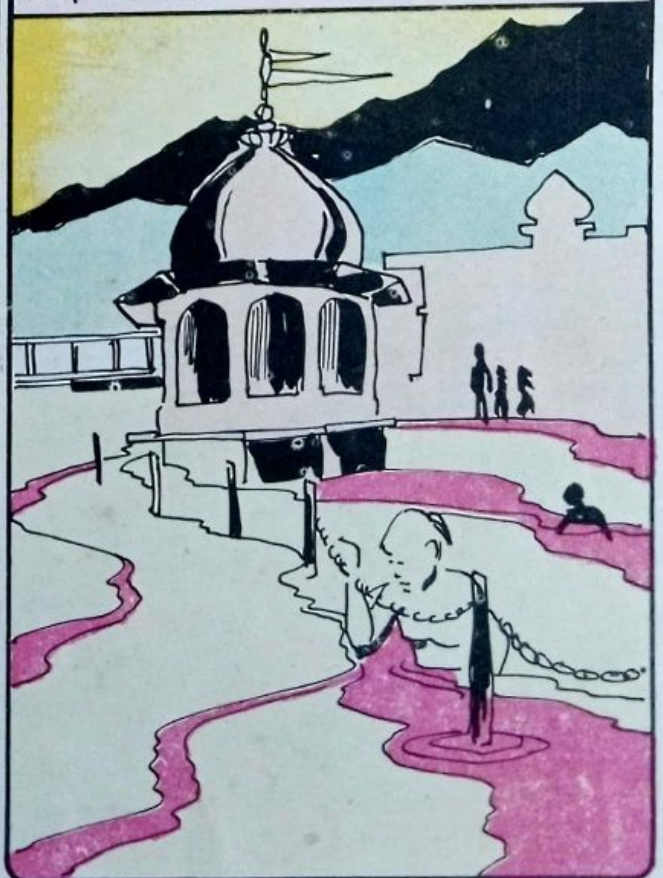
भगवान शिव का एक गण था नील। शिव उससे नाराज हो गए। कैलाश छोड़कर चले जाने को कहा। नील दुखी मन से हरिद्वार आया...
स्वामी की आराधना कर उन्हें प्रसन्न करूंगा। मगर करूं कहां? न जाने गंगा की मुख्य धारा कौन-सी है?
मां, सहायता करो।
अचानक...
अरे, क्या सोच रहा है? उस पर्वत के पास से बहने वाली ही मुख्य धारा है।
अद्‌भुत! कौन हो तुम देवी?
नील के देखते ही देखते वह आकृति अदृश्य हो गई।
नील ने मुख्य धारा के समीप भगवान शिव की आराधना की। एक दिन...
कल्याण हो वत्स। मैं प्रसन्न हुआ।
... इस धारा का नाम तुम्हारे नाम पर नील धारा होगा।
आज भी हरिद्वार में गंगा की मुख्य धारा का नाम नील धारा है। वह नील पर्वत के समीप से बहती है।

हाथी शेर

—अरुणा गुप्ता

बहुत दिन हुए, अरावली की पहाड़ियों के बीच में एक घना जंगल था। इस जंगल में कुछ पशु रहा करते थे। एक बार सारे पशु जंगल में बैठे गपशप कर रहे थे। तभी वे अपनी-अपनी शेखी बघारने लगे।

सबसे पहले बोली बिल्ली मौसी—''देखो, मैं कितनी ताकतवर हूं। अगर किसी आदमी के घर में घुस जाऊं, तो चूहे एकदम नौ-दो ग्यारह हो ही जाएं। बेचारा आदमी भी परेशान हो जाए। मेरे एक पंजे से ही उसकी आंखों की छुट्टी हो जाए। अगर उसके हाथों गलती से मैं मर भी जाऊं, तो बेचारे को सोने की बिल्ली बनवाकर दान करनी पड़े।''

बिल्ली की बातें कुत्ते मामा ने सुनीं, तो उनसे चुप न रहा गया। बोले—''बिल्ली मौसी,मेरे सामने तो तुम एक मिनट भी खड़ी नहीं रह सकतीं। आदमी तो मेरा गुलाम समझो। मेरे बिना उसे चैन नहीं। सभी बड़े-बड़े आदमी मेरे साथ घूमते हैं। जानती हो, आदमी-आदमी पर विश्वास नहीं करता, लेकिन मुझ पर वह इतना विश्वास करता है कि अपना पूरा घर छोड़ देता है। खुद भूखा रह जाता है, मगर मुझे दूध, डबलरोटी खिलाता है।''

बंदर ने कुत्ते मामा की बात काटी—''कुत्ते मामा, बस,अब मत बोलो ज्यादा। मेरी तो एक घुड़की से ही आदमी नौ दो ग्यारह हो जाता है। मेरी तो पूजा करता है, तुम्हारा आदमी। मंगलवार और शनिवार को केले, गुड़ और चने खिलाता है।''

उसी सभा में बैठे थे चीते महाराज। वह बोले—''बंदर, तुम एक मिनट तो मेरे आगे खड़े हो नहीं सकते। डर के मारे पेड़ की डाली पर ही बैठे रहते हो। और बात करते हो उस डरपोक आदमी की, जो मेरी दहाड़ सुनते ही कांप उठता है। अरे, तुम्हारी तो खाल भी किसी काम नहीं आती। मेरी तो खाल तक को आदमी संभालकर रखता है।''

वहीं खड़े थे हाथी पहलवान। चीते की बात सुनकर बोले—''चीते भइया, तुम्हारे ऊपर अगर मेरी एक सूंड ही पड़ जाए, तो तुम्हें छठी का दूध याद आ जाएगा। मुझे तो दो पैरों वाले उस आदमी पर बहुत दया आती है। वह बहुत कमजोर किस्म का मूर्ख प्राणी है। मुझे गणेशजी का अवतार मानता है। मंदिरों में, धर्मशालाओं में मेरी तसवीरें दीवारों पर बनवाता है।''

शेर काफी देर तक एक ओर बैठा यह सब सुनता रहा। आखिर उससे न रहा गया। बोला—''तुम लोगों ने यह क्या बकवास लगा रखी है? क्या तुम लोग यह भूल गए कि शेर जंगल का राजा तो होता ही है, आदमी की परम शक्ति दुर्गा मां की सवारी भी होता है।''

सब जानवर शेर की यह बात सुनकर पीछे हट गए, लेकिन हाथी अकड़ गया। तय हुआ कि हाथी और शेर कुश्ती लड़ें। जो जीते,वही बड़ा। बस, हाथी और शेर में कुश्ती शुरू हो गई। दोनों देर तक एक-दूसरे से जूझते रहे। काफी थक भी गए। मगर हार मानने को कोई तैयार नहीं हुआ।

उसी समय दो चींटियां उधर से निकलीं। उन्होंने देखा—हाथी और शेर लड़ रहे हैं। चींटियों को देख, दोनों उन्हें बुरा-भला कहने लगे कि इधर क्यों बढ़ी चली आ रही हो? सारी बात समझते उन्हें देर न लगी।

एक चींटी शेर की नाक में घुस गई और एक हाथी की सूंड में। लगीं काटने। हाथी और शेर लड़ाई भूल गए। हाथी सूंड फटकारने लगा। शेर नाक खुजाने लगा। चींटियों ने यह देखा, तो उछलकूद भी मचानी शुरू कर दी। सुरसुरी हुई तो हाथी और शेर दोनों जोर-जोर से छींकने लगे। उछलने लगे।

आखिर थक-हारकर बोले—''चींटी बहन, बस, अब बाहर निकल आओ। हम तुम्हारी सब बात मानेंगे। हम तुमसे हार गए।''

दोनों चींटियां बाहर निकल आईं।

उस दिन के बाद से जंगल का हर पशु चींटियों से डरता है। जहां वे रहती हैं, वहां से सदा दूर रहने की कोशिश करता है। ●

अचानक दरवाजा खोलकर अंतु अंदर आया और बोला—"इधर देखो अमल ! उस चिड़िया को पकड़ लाया हूं ।" अमल उस समय पिंजरा बना रहा था । अंतु को देखकर उसके चेहरे पर व्यथा का भाव आ गया । मरी-सी आवाज में बोला—"तुमने उसे पकड़ लिया ! मैंने बेकार ही पिंजरा बनाया ।"

अंतु ने मुट्ठी से चिड़िया के दोनों पंख दबा रखे थे । खुशी से उसकी आंखें चमक रही थीं । आज स्कूल में छुट्टी है । गांव में पता नहीं कोई बहुत बड़े व्यक्ति आए हैं । उन्हीं के सम्मान में छुट्टी है । दोपहर भर बगीचे में घूम-घूमकर इस पेड़ से उस पेड़ पर चढ़कर चिड़िया को पकड़ा है उसने । अमल ने चिड़िया को पकड़ने की कोशिश नहीं की । पहले पिंजरा बनाया । अमल ने ही सबसे पहले चिड़िया को देखा था ।

नई किताब

—सुनील गंगोपाध्याय

—"यह कौन-सी चिड़िया है ?"—अंतु ने पूछा ।

"नहीं जानता ।"—अमल ने कहा — "मुझे चिड़िया दोगे ?"

—"धत् ! बड़ी मुश्किल से पकड़ा है ।"

अमल आश्चर्य से उस चिड़िया को देखने लगा । बह बहुत सुंदर थी । दूध की तरह सफेद । तोते की तरह बड़ी, जरा झुकी हुई लाल चोंच ।

"भाई अंतु ! चिड़िया मुझे दे न !"— अमल ने गिड़गिड़ाकर कहा — "बदले में जो मांगोगे, मैं दूंगा ।"

"नहीं, मुझे कुछ भी नहीं चाहिए । चिड़िया नहीं दूंगा ।"— अंतु ने सीधा जवाब दिया ।

—"लेकिन तुम्हारे पास तो पिंजरा नहीं है । उसे कहां रखोगे ?"

—"जहां मन होगा । मैं क्या तुम्हारी तरह हूं, जो चिड़िया पकड़े बिना पिंजरा बनाऊंगा ?"

"अच्छा, चिड़िया को एक बार छूने तो दो ।"—कहते हुए पास आकर अमल ने चिड़िया के बदन पर हाथ रखा । । चिड़िया ने पंख फड़फड़ाए और अंतु के हाथ से छूट गई । छूटते ही चिड़िया पूरे कमरे में चक्कर लगाती-लगाती खिड़की के रास्ते बाहर चली गई । अमल और अंतु दौड़कर बाहर आए । वह रसोई के छप्पर पर बैठी थी । वहां से इमली के पेड़ की फुनगी पर गई । उसके बाद वहां से भी उड़ती हुई न जाने कहां चली गई ।

वे दोनों चिड़िया के पीछे दौड़े । चिड़िया उड़ती हुई छोटी नहर के किनारे आई । उसके बाद कई बार अजीब-सी आवाजें करती हुई उड़ती-उड़ती नहर के बीच में चली गई । वहां एक बजरा बंधा हुआ था । चिड़िया उसकी खिड़की से भीतर घुस गई ।

अमल और अंतु नहर के किनारे खड़े बजरे की तरफ ताकते रहे । बजरा एक तरह से छोटे-मोटे तैरते मकान की तरह ही होता है । उसमें कमरा, छत और बरामदा सब कुछ रहता है । यह किसका बजरा है, उन लोगों को मालूम नहीं है । गांव में नया आया है ।

"तेरे कारण मेरी चिड़िया उड़ गई ।"—अंतु ने कहा ।

"चिड़िया तेरी थी या मेरी ? मैंने ही तो पहले देखा था उसे । इसके अलावा मैंने उसके लिए पिंजरा भी बनाया है । तूने उसके लिए क्या किया है, जरा बता तो सही ?"—अमल बोला ।

—"पेड़ पर चढ़कर पकड़ा किसने ? तू पकड़ सकता था क्या ?"

अंतिम बात सुनकर अमल जरा निराश हो गया । हां, वह पेड़ पर नहीं चढ़ सकता । पेड़ पर चढ़ना मना है । पिछले साल वह बहुत बीमार जो हो गया था ।

दोनों कुर्ता उतारकर पानी में कूद पड़े । अंतु बहुत अच्छा तैराक है । अमल भी ठीक तैरता है । शांत जल में छप-छप की आवाज करते वे बढ़ने लगे । बजरे पर चढ़कर दोनों ने शरीर से पानी झटकना शुरू किया । अब उन लोगों को थोड़ा-थोड़ा डर लगने लगा । क्या करें ? अब किसे पुकारें ?

तभी अचानक वहां बने कमरे का दरवाजा खुल गया। कूदकर एक वृद्ध व्यक्ति बाहर आकर बोले—"आओ, आओ ! अंदर आओ। बाहर क्यों खड़े हो ?"

अंतु और अमल को घबराहट होने लगी। अंतु ने फुसफुसाकर कहा— "यह वही राजा बाबू हैं। आ चलें !" इतना कहकर झट-से पानी में कूद पड़ा। और तेजी से तैरता हुआ उस पार जाकर अदृश्य हो गया। अमल क्या करे, समझ नहीं पाया। वह चुपचाप खड़ा रहा।

वृद्ध आश्चर्य से अंतु की ओर देखने लगे। उसके बाद अमल की तरफ मुड़कर बोले—"आओ, अंदर आओ !" उसे हाथ पकड़कर कमरे में ले गए।

वृद्ध के चेहरे पर सफेद दाढ़ी थी। पैर तक लम्बा चोगा पहने थे। कमरा करीने से सजा हुआ था। खिड़की के पास एक छोटी-सी मेज थी। उस पर पीतल का दीपदान, कलम-दवात और कागज पर कुछ पंक्तियां लिखी हुई थीं। सबसे आश्चर्य की बात यह थी कि कोने में बेंत की कुर्सी पर वही सफेद चिड़िया बैठी थी।

"यह तो वही चिड़िया है।"—अचानक अमल बोल पड़ा।

"तुम क्या उसे पकड़ना चाहते थे ?"— वृद्ध ने हंसते हुए पूछा।

—"हां !"

—"लेकिन इसे पकड़ना मुश्किल है। यह तो ऐसे ही उड़ती-फिरती है।"

—"मगर मैंने तो इसके लिए एक पिंजरा बनाया है।"

—"बनाया तो अच्छा किया। पिंजरे में असली चिड़िया रखने की जरूरत नहीं है। मन ही मन पिंजरे में चिड़िया की कल्पना कर लेना। असली चिड़िया को नीले आकाश में उड़ने दो।"

अमल ने सिर हिलाया। बात ठीक से उसकी समझ में नहीं आई। लेकिन उसे अच्छा लगा।

"तुम्हारा नाम क्या है ?"—वृद्ध ने पूछा।

"अमल। पर क्या आप राजा बाबू हैं ? आपके आने से ही स्कूल में छुट्टी हुई है ?"—उसने पूछ लिया।

—"नहीं, मैं राजा बाबू नहीं हूं। मैं तुम्हीं लोगों का आदमी हूं।"

—"आपका नाम क्या है ?"— अमल ने पूछा।

—"मेरा नाम तुम्हारे नाम की तरह सुंदर नहीं। मेरा नाम रवींद्रनाथ ठाकुर है।"

आश्चर्य से अमल की आंखें गोल-गोल हो गईं।—"आप ही तो हैं। आप ही के लिए तो पिता जी, 'जमींदार बाबू आएंगे, जमींदार बाबू आएंगे।' कह रहे थे।"

"नहीं, अमल ! मैं राजा बाबू नहीं हूं। मैं तुम्हीं लोगों का आदमी हूं। मैं तुम्हारा दोस्त हूं।"— वृद्ध ने फिर कहा।

—"आप ही ने तो 'आमादेर छोटो नदी चले आंके बांके (हमलोगों की छोटी नदी टेढ़ी-मेढ़ी चलती है) कविता लिखी है ? और 'भूतेर मतन चेहरा पेमन।' (भूत जैसा चेहरा) तथा और भी न जाने कितनी कविताएं लिखी हैं।"

"हां, तुम्हें अच्छी लगती हैं ?"—वृद्ध हंस पड़े।

"मैंने सब पढ़ी हैं। मेरे पास जितनी हैं सब। लेकिन और नहीं हैं। आपने और नहीं लिखा है ?"—अमल ने कहा।

—"बहुत लिखा है। बड़े होकर पढ़ना। तुम्हारे

लिए अब कुछ नया लिखूंगा।"

इतने में बाहर से आवाज सुनाई पड़ी—"मालिक हैं क्या ?"

रवींद्रनाथ ने कहा—"बैठो अमल, देखूं कौन आया है ?" वह बाहर चले गए।

बाहर एक आदमी हाथ जोड़कर खड़ा था। उसका नाम था लोचनदास घोष। उसने रवींद्रनाथ को प्रणाम किया।

—"क्या हालचाल है लोचन ?"

"जी ! सुना है, मेरा लड़का यहां आया है। बड़ा चंचल है। शायद आपको परेशान कर रहा है।"—उसने कहा।

—"तो अमल तुम्हारा लड़का है ? बड़ा अच्छा लड़का है।"—रवींद्रनाथ मुसकराए।

पिता की आवाज सुनकर अमल बाहर चला आया। अब उसे डर नहीं लग रहा था। इसी समय वही सफेद चिड़िया पंख फड़फड़ाती हुई खिड़की से निकलकर उड़ गई।

"जाओ, अमल ! पिता जी के साथ जाओ। फिर आऊंगा, तो तुमसे मिलूंगा।"—रवींद्रनाथ बोले।

—"लेकिन मेरे लिए नई किताब ?"

—"किताब लिखकर तुम्हें चिट्ठी लिखूंगा।"

अमल पिता के साथ चला गया। अब उसके दिन विशेष तरह से बीतने लगे। जिसका नाम सुनकर सबका मस्तक श्रद्धा से झुक जाता है, वह अमल के दोस्त हैं। उन्होंने कहा है कि वह अमल को चिट्ठी लिखेंगे। अंतु जब खेल में फर्स्ट आता है, तो अमल को उससे जलन नहीं होती। अंतु के तो उसकी तरह कोई दोस्त नहीं है। अंतु के लिए तो किसी ने किताब लिखने को नहीं कहा है।

उसके बाद देश-विदेश घूमकर दो साल बाद रवींद्रनाथ फिर उसी छोटे गांव सिलाईदह में आए। गांव के सब लोग आकर उन्हें प्रणाम कर गए। अमल की बात उन्हें याद ही नहीं आई। अचानक एक दिन सवेरे बजरे की छत पर वही सफेद चिड़िया दिखाई पड़ी। उसे देखते ही लड़के की बात उन्हें याद आई, जिसने इस चिड़िया के लिए पिंजरा बनाया था। उन्होंने खोज-खबर ली, तो पता चला—अमल बहुत बीमार है। दो महीने से बिस्तर पर पड़ा हुआ है। बचने की आशा नहीं है। विचलित होकर उन्होंने कहा—"मैं अमल को देखने जाऊंगा।"

रवींद्रनाथ जल्दी-जल्दी चलने लगे। मकान के उत्तर वाले कमरे में अमल लेटा था। उसके चारों ओर डाक्टर, वैद्य, कई सगे-सम्बंधी और अमल के वृद्ध दादा जी बैठे हैं। अमल का चेहरा बहुत ही दुबला हो गया है। उसे पहचानना भी मुश्किल है। उन्हें देखते ही अमल की आंखें भर आईं। क्षीण स्वर में बोला—"आप आ गए !"

—"हां, अमल ! मैं आ गया। अब डरने की कोई बात नहीं है।" उसके बाद रवींद्रनाथ कुछ देर तक चुप रहे। क्या बोलें? कुछ समझ में ही नहीं आ रहा था। उन जैसा बातों का जादूगर भी बातें करना भूल गया। कुछ देर देखने के बाद बोले—"मैं एक खबर लाया हूं। तुम्हारे साथ राजा की मुलाकात होगी।"

—"राजा ?"

—"हां, अमल ! ऐसा राजा, जिसे हम लोग भी आज तक नहीं देख पाए हैं।"

"मेरी चिट्ठी ? मुझे चिट्ठी नहीं लिखी आपने ?"—अमल ने कहा।

"वह देखो ! स्वयं राजा ने तुम्हें चिट्ठी लिखी है।" रवींद्रनाथ ने अंगुली से खिड़की की ओर इशारा करते हुए कहा। अमल ने देखा, सबने देखा, खिड़की से धूप अंदर आ रही है और उसी खिड़की की चौखट पर वही सफेद चिड़िया बैठी है। अद्‌भुत चिड़िया है।

अमल अपलक उस चिड़िया की तरफ देखता रहा। फिर धीरे-से बोला—"मुझे नींद आ रही है।"

रवींद्र ने अपने हाथ से उसकी आंखें बंद कर दीं और कमरे से निकल आए। जल्दी-जल्दी बजरे की तरफ लौट चले। लग रहा था, वह बहुत ही व्यस्त हैं। जाकर तुरंत अमल के लिए एक किताब लिखनी होगी।

(अनुवाद—मनोरमा)

चार वरदान

—परशीश

पुरानी बात है । चार सगी बहनें थीं । उन चारों के स्वभाव एक-दूसरे से बिलकुल अलग थे । एक थी एकदम क्रोधी । दूसरी हठी । तीसरी शांत और चौथी हंसोड़ । चारों में एक ही बात समान थी । वे चारों ही पक्की लालची थीं । उन्हें सोते-जगते सोने के महल दिखाई पड़ते । रेशमी कपड़ों का ढेर नजर आता । असलियत यह थी कि उनके पास था कुछ नहीं । देखने में भी साधारण फटे-मैले कपड़े । न रहने को अच्छा घर, न खाने-पीने की सुविधा । वे चारों जब भी किसी सुंदरऔर सम्पन्न लड़की को देखतीं, डाह से भर उठतीं । अपने साधारण चेहरों को देखकर उन्हें रोना आ जाता था ।

वे दिन-रात भगवान से प्रार्थना करतीं रहतीं—'प्रभु, हमें भी सुख-सम्पत्ति दे दो ।' भगवान ठहरे दयालु । एक बार भगवान ने तरस खाकर उन्हें दर्शन दिए । फिर तीन वरदान देते हुए बोले—"तुम्हें जो चीज मांगनी हो, मांग लो । याद रहे, सिर्फ तीन ही चीजें मांगना । और तीनों वरदानों का तुम चारों सम्मिलित रूप से ही लाभ उठा सकती हो ।"

चारों की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा । चारों एक साथ बैठकर विचार करने लगीं—'हम कौन-सी चीज अपने लिए मांगें ?' वरदान तीन ही थे, इसलिए अच्छी तरह से सोच-समझकर मांगना था । आखिर चारों ने तय किया, उन्हें अपने लिए सुंदरता मांगनी चाहिए । अपनी भद्दी शक्ल को लेकर बहुत परेशान थीं । बस, उन्होंने पहले वरदान में संसार का सारा सौंदर्य अपने लिए मांग लिया । पलक झपकते वे इतनी सुंदर हो गईं कि अपना रूप ही उनकी आंखें चौंधियाने लगा । दूसरी ओर गांव, नगर के सारे लोग कुरूप हो गए । यह देख, वे चारों खुशी से नाच उठीं । इधर-उधर घूमते लोगों की भद्दी शक्ल देखकर उनको हंसी आने लगी ।

कुछ दिन इसी तरह बीत गए । उन्होंने देखा, सारे लोग कुरूप होते हुए भी, धन होने के कारण उनसे अधिक सुखी हैं । उन्हें अपने कुरूप होने का कोई दुःख नहीं है । अब उन्हें अपना सौंदर्य फीका लगने लगा । अभी दो वरदान मांगने बाकी थे । चारों ने सोचा—'संसार की सारी दौलत ले लें, तो और भी अच्छा होगा । इन फटे वस्त्रों में हमारी सुंदरता दब जाती है । रेशमी वस्त्र हों, तो और निखार आएगा ।' बस, उन्होंने दौलत की कामना की । इस तरह संसार की सारी दौलत उन चारों के पास आ गई । देखते-देखते चार बड़े महल बन गए । महल क्या, धन के रूप में जैसे चार पहाड़ खड़े हो गए हों । अब

चार वरदान

—परशीश

पुरानी बात है। चार सगी बहनें थीं। उन चारों के स्वभाव एक-दूसरे से बिलकुल अलग थे। एक थी एकदम क्रोधी। दूसरी हठी। तीसरी शांत और चौथी हंसोड़। चारों में एक ही बात समान थी। वे चारों ही पक्की लालची थीं। उन्हें सोते-जगते सोने के महल दिखाई पड़ते। रेशमी कपड़ों का ढेर नजर आता। असलियत यह थी कि उनके पास था कुछ नहीं। देखने में भी साधारण फटे-मैले कपड़े। न रहने को अच्छा घर, न खाने-पीने की सुविधा। वे चारों जब भी किसी सुंदर और सम्पन्न लड़की को देखतीं, डाह से भर उठतीं। अपने साधारण चेहरों को देखकर उन्हें रोना आ जाता था।

वे दिन-रात भगवान से प्रार्थना करती रहतीं—'प्रभु, हमें भी सुख-सम्पत्ति दे दो।' भगवान ठहरे दयालु। एक बार भगवान ने तरस खाकर उन्हें दर्शन दिए। फिर तीन वरदान देते हुए बोले—"तुम्हें जो चीज मांगनी हो, मांग लो। याद रहे, सिर्फ तीन ही चीजें मांगना। और तीनों वरदानों का तुम चारों सम्मिलित रूप से ही लाभ उठा सकती हो।"

चारों की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। चारों एक साथ बैठकर विचार करने लगीं—'हम कौन-सी चीज अपने लिए मांगें?' वरदान तीन ही थे, इसलिए अच्छी तरह से सोच-समझकर मांगना था। आखिर चारों ने तय किया, उन्हें अपने लिए सुंदरता मांगनी चाहिए। अपनी भद्दी शक्ल को लेकर बहुत परेशान थीं। बस, उन्होंने पहले वरदान में संसार का सारा सौंदर्य अपने लिए मांग लिया। पलक झपकते वे इतनी सुंदर हो गईं कि अपना रूप ही उनकी आंखें चौंधियाने लगा। दूसरी ओर गांव, नगर के सारे लोग कुरूप हो गए। यह देख, वे चारों खुशी से नाच उठीं। इधर-उधर घूमते लोगों की भद्दी शक्ल देखकर उनको हंसी आने लगी।

कुछ दिन इसी तरह बीत गए। उन्होंने देखा, सारे लोग कुरूप होते हुए भी, धन होने के कारण उनसे अधिक सुखी हैं। उन्हें अपने कुरूप होने का कोई दुःख नहीं है। अब उन्हें अपना सौंदर्य फीका लगने लगा। अभी दो वरदान मांगने बाकी थे। चारों ने सोचा—'संसार की सारी दौलत ले लें, तो और भी अच्छा होगा। इन फटे वस्त्रों में हमारी सुंदरता दब जाती है। रेशमी वस्त्र हों, तो और निखार आएगा।' बस, उन्होंने दौलत की कामना की। इस तरह संसार की सारी दौलत उन चारों के पास आ गई। देखते-देखते चार बड़े महल बन गए। महल क्या, धन के रूप में जैसे चार पहाड़ खड़े हो गए हों। अब

सारी दुनिया कंगाल हो गई। लोग पैसे-पैसे के लिए मोहताज हो गए। बिना धन के संसार का काम ही रुक गया। यह देख, चारों को खूब मजा आया। सोने के रथ में हीरे-मोतियों से लदीं, वे चारों नगर घूमने निकलतीं, तो लोग रोते-चिल्लाते नजर आते।

भगवान ने जब दुनिया की यह दुर्दशा देखी, तो उन्हें बड़ा गुस्सा आया। वे उन चारों के सामने प्रकट हुए। बोले—"लड़कियो, तुम चारों ने मेरे वरदान का गलत उपयोग किया है। बिना धन के सारी दुनिया चौपट हो रही है। इसका दंड तुम्हें भुगतना पड़ेगा। तुम चारों स्वार्थी हो। जिस तरह तुम चारों ने संसार से सारा धन और सौंदर्य बटोर लिया है, उसी तरह संसार के सारे कष्ट भी अब तुम्हें बटोरने होंगे।"

वे चारों डरकर रोने लगीं। उन्होंने भगवान के पैर पकड़ लिए। बोलीं—"भगवन्, हमने जो लिया, वह आपसे मिले वरदान से ही लिया। आपको हमें दंड नहीं देना चाहिए। वैसे भी अभी हमारा एक वरदान बाकी है। अब आप ही बताएं, हम उसका उपयोग किस प्रकार करें?"

भगवान थोड़ी देर सोचते रहे। फिर बोले—"तुम्हारे वरदान का प्रभाव तुम चारों पर पड़ेगा। इसलिए संसार की भलाई के लिए, मैं इस वरदान से जो व्यवस्था करूंगा, उसमें तुम चारों को बराबर-बराबर भाग लेना होगा। तुम्हारे दोनों वरदानों ने संसार का सारा सुख छीन लिया। अब इस वरदान से तुम चारों मिलकर इस संसार को फिर खुशहाल बनाओगी।"

भगवान ने उन चारों को वरदान दिया और वरदान के प्रभाव से वे चारों चार ऋतुओं में बदल गईं। उनके अपने-अपने स्वभाव के अनुसार चारों ऋतुएं भी वैसा ही फल देने लगीं। तबसे मौसम के रूप में वे चारों बहनें दुनिया का उपकार कर रही हैं। बड़ी बहन हमें जाड़ा देती है। मंझली गर्मी। तीसरी बहन वर्षा और सबसे छोटी बहन वसंत ऋतु बनकर दुनिया में सौंदर्य बिखेरती है। उन्हीं के कारण यह दुनिया फिर चहल-पहल और खुशी से भर उठी है। ●

साधु की सलाह

—वीरेन्द्र पैन्यूली

किसी राजा ने प्रण किया, जब तक वह रोज पांच भिखारियों को भीख न देंगे, तब तक भोजन नहीं करेंगे। रोज ही राजा पांच भिखारियों को भीख देते। उसके बाद स्वयं भोजन करते थे।

राजा लोकप्रिय भी बहुत थे। साधु-संतों का सम्मान करते थे। उनके राज्य में दूर-दूर से साधु आते थे।

एक बार एक सिद्ध महात्मा आए। उन्हें राजा के इस प्रण का पता चला। महात्मा ने बात-बात में राजा से कह दिया—"आपका यह प्रण अच्छा नहीं है। इससे आपको लाभ के बजाए, हानि भी हो सकती है।"

राजा ने उनके कथन का कारण जानना चाहा। उनसे कहा—"आप तुरंत अपने कथन की सत्यता प्रमाणित करें, वर्ना कारावास का दंड भुगतने के लिए तैयार रहें। कारावास के दौरान यदि आप अपनी कही बात के पक्ष में प्रमाण प्रस्तुत कर देंगे, आपको तुरंत छोड़ दिया जाएगा। यदि आप अपनी गलती के लिए माफी मांग लें, तो भी आपको छोड़ा जा सकता है।"

साधु ने माफी मांगने से इंकार कर दिया। प्रमाण के सम्बंध में उन्होंने कहा—"जब समय आएगा, मैं प्रमाण दे दूंगा।"

साधु बहुत माने हुए थे। राजा उन्हें कैद कर देगा, ऐसा कोई सोच नहीं सकता था। कारावास जाते हुए भी साधु ने राजा को दीर्घजीवी होने का आशीर्वाद दिया।

इस घटना के काफी दिनों बाद की बात है। एक रोज राजा के पास भीख लेने वाले पांच भिखारी भी पूरे नहीं हुए। ऐसा ही दूसरे रोज भी हुआ। तीसरे रोज भी। भूखे राजा का स्वास्थ्य गिरने लगा।

राजा को जिंदा रखने के लिए जगह-जगह भिखारियों की तलाश हुई। आखिर में सिपाहियों द्वारा डरा-धमकाकर रोज पांच लोगों को भिखारी बनाने की

योजना बनाई गई। पूरे राज्य में जोर-जबरदस्ती शुरू हो गई। लोगों को भिखारी बनाकर राजा के पास लाया जाने लगा।

एक दिन ऐसे ही पांच भिखारी आए। वे डरे हुए थे। उन्हें देखकर राजा ने पूछा—"बोलो, क्या चाहिए ?"

उन बनावटी भिखारियों ने कहा—"महाराज, हमें क्षमादान चाहिए।" राजा ने कहा—"किस बात का क्षमादान ? क्या तुम्हें कोई सता रहा है। किसी बात का डर है ?"

वे बोले—"महाराज, अभयदान दें, तो हम अपना दुःख कहें।"

राजा ने उन्हें अभयदान देते हुए कहा—"बिना किसी डर के तुम्हें जो कहना है, कहो।"

पांचों ने एक साथ कहा—"महाराज, हम आपकी खुशहाल प्रजा हैं। हम भिखारी नहीं हैं। हमें भीख मांगने में शर्म आ रही है। भीख मांगते हुए हम अपने को मरा हुआ-सा महसूस कर रहे हैं। आपके सिपाही मार-मारकर लोगों को भिखारी बना रहे हैं। महाराज, आज हम आपकी खुशी के लिए, आपके स्वास्थ्य के लिए आपसे भीख मांग लेते हैं, परंतु आप हमें अभयदान दें। कल हमें फिर भीख मांगने के लिए न लाया जाए।"

राजा ने तत्काल उन पांचों व्यक्तियोंको छोड़ने का आदेश दिया। राजा को उसी समय उन साधु की याद आई, जो कारावास में थे। फिर साधु को ससम्मान कारावास से लाया गया।

साधु राजा के सामने आए, तो राजा ने कहा—"महाराज, आपका कथन सही निकला। मेरे प्रण से मुझे लाभ के बजाए हानि हो रही है। आपको अपने कथन के लिए प्रमाण देने की आवश्यकता नहीं है। आप मुक्त हैं। आप राज्य के मेहमान हैं।" साधु ने राजा को सुखी होने का आशीर्वाद दिया।

उन्होंने कहा—"राजन, आप अन्न-जल ग्रहण कीजिए। राजा का धर्म जनता की सेवा करना है। उसको सुखी बनाना है। आपकी प्रजा कितनी सुखी है, इसका प्रमाण इससे ज्यादा क्या हो सकता है कि आपके राज्य में कोई भिखारी नहीं है। कोई राजा से भी भीख नहीं लेना चाहता है।" यह कहकर संन्यासी चले गए।

राजा मन में पछता रहे थे—'मैंने बिना बात ही संन्यासी को कैद में रखा।' इसके बाद राजा हर काम सोच-समझकर करने लगे। इससे प्रजा की खुशहाली बढ़ गई। ●
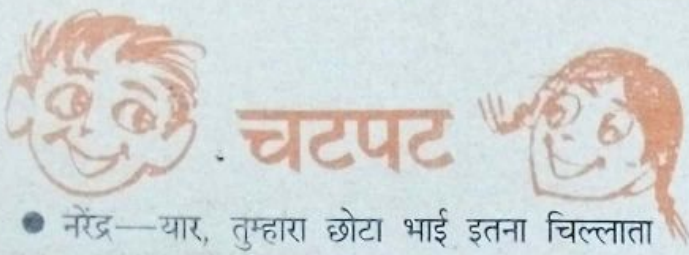
- नरेंद्र—यार, तुम्हारा छोटा भाई इतना चिल्लाता क्यों है ?
सुरेंद्र—यदि तुम्हारे मुंह में दांत न रहें। चल-फिर भी न सको। पीने को सिर्फ दूध ही मिलता हो, तो क्या बिस्तर पर पड़े-पड़े चुप रहोगे ?
- छोटा बच्चा—मां, डिब्बे में से बरफी चूहे खा गए होंगे।
मां—(छोटे बच्चे की चालाकी पर मुसकराकर)—तो बाकी मिठाई वे किसके लिए छोड़ गए ?
- आंटी—मुन्नू ! तुमने कुछ नहीं खाया। लो, यह मेवा जेब में रख लो।
मुन्नू—आंटी, मगर जेबें तो मैंने पहले ही भर ली हैं।
- एक मित्र—कल की लड़ाई में किसने तुम्हारे हाथ पकड़े थे, जो तुम मल्लू को नहीं मार सके ?
दूसरा मित्र—पकड़े किसने, उसी कायर मल्लू ने पकड़े।
- मां—यह कैसी माचिस लाया है ? इसमें एक भी तीली नहीं है।
बेटा—आपने कहा था कि माचिस देखकर लाऊं, तीलियां सीली तो नहीं हैं, इसलिए मैंने सारी जलाकर देख लीं।
- अध्यापक—दो साल से तुम बहुत मेहनत कर रहे हो, इससे तुम्हें क्या फायदा हुआ, जानते हो ?
छात्र—हां, आपकी पिटाई से बच गया।
- राकेश—सुना है, करोड़ों वर्ष बाद सूरज के दर्शन भी नहीं होंगे।
सुरेश—ओफ, तब तो हमारा बिजली का खर्चा बहुत बढ़ जाएगा।
- पिता—तेज धूप से पौधे कैसे मुरझा जाते हैं ?
बच्चा—जैसे आपकी तेज डांट से मैं।
- मां—बच्ची तुम सोती क्यों नहीं ? कल स्कूल नहीं जाना है।
बच्ची—यही चिंता तो मुझे सोने नहीं दे रही।
- रामू—इस प्रश्न का उत्तर तो गधा भी दे सकता है।
श्यामू—इसीलिए तो मैंने नहीं दिया।
- मामा जी—साइकिल मिलने का वायदा होने पर भी तुम अच्छे नम्बर नहीं ला पाए। आखिर इतने दिन क्या करते रहे ?
बच्चा—साइकिल चलाना सीख रहा था।
- विधु—निहार पहले लम्बा दिखाई देता था, मगर अब छोटा दिखाई देता है।
सिंधु—दरअसल उसके सारे दोस्त ठिगने हैं। उनसे झुक-झुककर बातें करने से, वह ऐसा हो गया है।
- पत्नी —बच्चे का नाम वैसे ही लगा रहे हो। हो सकता है, मैंने ही कुछ पैसे निकाल लिए हों।
पति —नहीं, अभी जेब में कुछ पैसे बाकी हैं।
- रमेश —तुम्हारी पत्नी का पर्स बहुत शानदार है।
सुरेश —मगर उसमें से पैसे निकालने में बहुत वक्त लगता है।

तेनालीराम २३१

साझेदारी

राजा कृष्णदेव राय को खबर मिली कि उनका मंत्री धन एकत्र करके पड़ोसी राज्य में जमा कर रहा है। राजा चिंतित। मंत्री की बात। धन कहां है, कितना है, यह भी पता नहीं। पूरी छानबीन जरूरी थी। उन्होंने तेनालीराम को यह काम सौंप दिया।

एक दिन राजा ने दरबार में कहा—"सुना है, पड़ोसी राज्य में बहुत ईमानदारी है। कई राज्यों के लोग वहां धन जमा करते हैं। क्यों तेनालीराम, तुम्हारा क्या विचार है?"

तेनालीराम बोला—"महाराज, मेरे पास धन होता, तो मैं भी वहां जमा करके देखता।"

मंत्री यह सुनकर खुश हुआ। सोचने लगा—'तेनालीराम को धन का लालच है। अगर उसे साथ मिला लिया जाए, तो राज्य को अच्छी तरह लूट-खसोटकर, करोड़पति बना जा सकता है।'
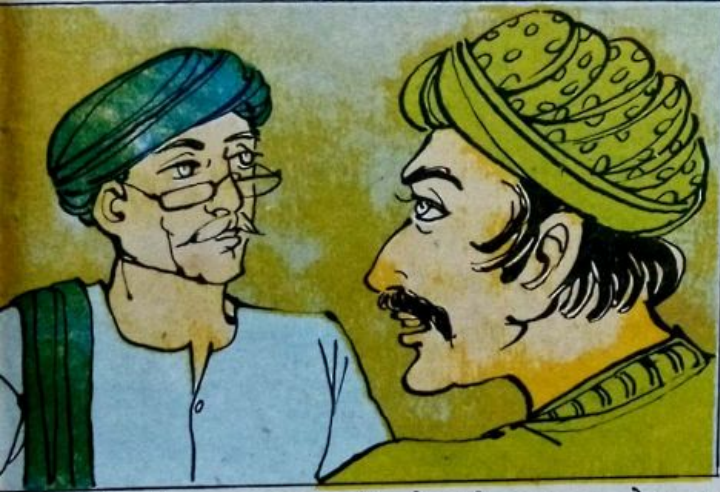
मंत्री पहुंचा तेनालीराम के पास। बोला—"पड़ोसी देश में मेरा एक जानकार है। चाहो तो रुपया कमाकर वहां जमा करा दो। आड़े वक्त काम आएगा।"

तेनालीराम गम्भीर होकर बोला—"मंत्री जी, कहने को मैं राजा का चहेता हूं, मगर जेब खाली रहती है। सोचता तो हूं, अब कुछ करना ही चाहिए।"

मंत्री का जादू चल गया तेनालीराम पर।

कई महीने तक लूट-खसोट का धंधा साझे में चला। मंत्री ने तेनालीराम का खाता भी उस देश में खुलवा दिया।

मंत्री की हर बात का भेद तेनालीराम राजा को बताता रहा। फिर एक दिन राजा ने भरे दरबार में तेनालीराम को गिरफ़ार करवा दिया। उस पर राज्य से बाहर रुपया जमा करने और सत्ता का दुरुपयोग करने का आरोप था।

दरबारी चकित। तेनालीराम चुप। राजा ने मंत्री से पूछा—"बोलो, इसे क्या सजा दी जाए?"

मंत्री बोला—"महाराज, इसकी जांच का काम मुझ पर छोड़ा जाए। मैं जांच करवाकर आपको तथा पूरे दरबार को इसकी सही जानकारी दूंगा। सही सजा भी बताऊंगा।"

तेनालीराम ने कहा—"महाराज, जांच के बहाने यह मुझे मरवा देगा और स्वयं उस देश में जा बसेगा। यह देखिए प्रमाण।" कहते हुए तेनालीराम ने जेब से निकालकर कुछ कागज राजा की ओर बढ़ाए। उन कागजों में मंत्री ने तेनालीराम को अपना साझीदार समझकर लूट-खसोट का धन दूसरे देश में जमा करने की सूचनाएं दी थीं।

बात खुल गई। मंत्री के हाथ हथकड़ी से सजे। तेनालीराम को षड्यंत्र का पता लगाने का पुरस्कार मिला।

चित्र : रवीन्द्र एस. कम्बोज
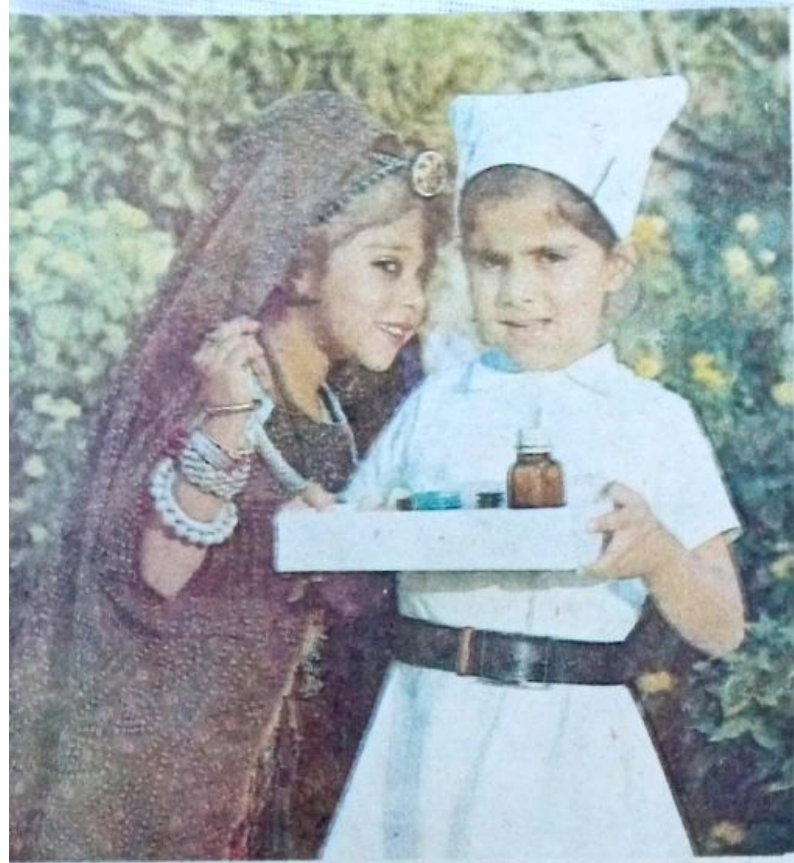
गुड़िया भूखी है

दादा जी जब भी रेवाड़ी आते, रीता के लिए कुछ न कुछ जरूर लाते थे। गर्मी की छुट्टियों में वह रीता के लिए कपड़े और जूट से बनी बहुत सुंदर गुड़िया लाए। उसकी बड़ी बहन मीता के लिए राजस्थानी दुल्हन जैसा लहंगा-दुपट्टा लाए।

मीता ने फटाफट कपड़े पहने और दुल्हन की तरह तैयार हो गई। रीता भी गुड़िया पाकर बहुत खुश हुई। दौड़ी-दौड़ी मम्मी के पास गई—"मम्मी, मेरी गुड़िया को भूख लगी है। दूध दो।"

मम्मी ने देखा, तो हंसने लगीं। उन्होंने छोटी-सी कटोरी में दूध दे दिया। रीता ने गुड़िया को गोद में बैठाया। फिर दूध की कटोरी उसके मुंह से लगा दी। मगर गुड़िया दूध कैसे पीती? "चल थोड़ी देर आराम कर ले।"—कहते हुए रीता ने गुड़िया को पालने में लिटा दिया। फिर उसे पंखा झलने लगी।

"शरारती।"—रीता ने कहा। फिर गुड़िया को उठा कंधे से लगाना ही चाहा था कि वह हाथ से छूट गई। पास ही तारों से बनी डलिया रखी थी। गुड़िया उसके हाथ से छूटकर डलिया में जा गिरी। रीता ने निकालने की कोशिश की, तो वह डलिया में उलझ कई जगह से फट गई।

रीता दहाड़ें मार-मारकर रोने लगी। उसका रोना सुन मम्मी-पापा, दादा जी और मीता दौड़े आए। दादा जी ने रीता को गोद में उठाया। रीता रोते-रोते बोली—"मेरी गुड़िया घायल हो गई। उसे जल्दी डाक्टर के पास ले चलो।"

मम्मी ने गुड़िया को जगह-जगह से उधड़ा देखा, तो बोलीं—"मैं अभी सुई से सी-कर इसे ठीक किए देती हूं। तू चुप हो जा।"

"नहीं, मेरी गुड़िया को सुई से मत सिओ। उसे बहुत दर्द होगा। अस्पताल ले चलो।"— कहकर रीता और जोर से रोने लगी। बार-बार गुड़िया को अस्पताल ले जाने की जिद करने लगी।

सब लोग परेशान। क्या करें? तभी मीता को एक उपाय सूझा। उसने मम्मी के कान में कुछ कहा और बाहर चली गई। थोड़ी देर बाद लौटी, तो उसके साथ उसकी सहेली सुमन थी। सुमन ने नर्स की पोशाक पहनी हुई थी। दवाओं की ट्रे भी लिए थी। मीता ने कहा—"रीता, अब चुप हो जाओ। तुम्हारी गुड़िया का इलाज हम यहीं करेंगे।"

रीता ने नर्स और दवाओं की ट्रे देख, बात मान ली। सुमन और मीता अंदर गईं। मीता ने तुरंत कपड़ों में छिपाई सुई निकाली। फिर जहां-जहां से गुड़िया फट गई थी, उसे सिल दिया। थोड़ी देर बाद मीता और सुमन कमरे से बाहर आईं। रीता से बोलीं—"तुम्हारी गुड़िया अब ठीक है। जाकर देख लो।"

रीता दौड़ती हुई अंदर गई। सचमुच उसकी गुड़िया पहले की तरह पालने में लेटी हुई थी। यह देख, वह बहुत खुश हुई। नर्स बनी सुमन से लिपट गई—"सिस्टर, तुमने मेरी गुड़िया को ठीक कर दिया। धन्यवाद।"

फिर उसने उसे अपने जेब खर्च से बचाए पैसे दे दिए। बोली—"लो, अपनी फीस।" सब लोग हंसने लगे। —यशपाल

मेरा बेटा

राजपुर के नगर सेठ दीपचंद के संतान न थी। बरसों से किसी बच्चे को गोद लेना चाहता था।

धनपाल नगर सेठ का नौकर था। हवेली में ही रहता था। उसका एक छोटा-सा प्यारा बेटा था नाहर।

एक बार दीपचंद को व्यापार के सिलसिले में राजपुर से काफी दूर जाना पड़ा। हवेली के कई नौकर उसके साथ चले गए।

अचानक एक शाम सेठानी ने देखा, नाहर दबे पांव हवेली में घुसा। सेठ जी की बैठक की ओर जाने लगा। बैठक के अंदर एक छोटा-सा कमरा था। उसी कमरे में नगर सेठ की तिजोरी थी। सेठानी हाथ में डंडा लिए चीखती-चिल्लाती उसके पीछे दौड़ी।

जैसे ही बैठक में घुसी, किसी ने उसके सिर पर प्रहार किया। सिर पर प्रहार करने वाला काले रंग का एक बदसूरत आदमी था। एक आदमी और था उसके साथ। सेठानी के बेहोश होकर गिरते ही उन दोनों ने उसके हाथ-पैर बांध दिए।

अब इत्मीनान से एक ने जेब से तालियों का गुच्छा निकाला। दोनों कमरे में जा घुंसे। तिजोरी खुल गई। तिजोरी में रखा धन और आभूषण एक थैले में भर ही रहे थे कि जोर से चौंके। किसी ने कमरे का दरवाजा बाहर से बंद कर दिया था।

कुछ ही देर में गली में शोर मचा—'पुलिस, पुलिस।' कमरे में बंद चोर भाग न सके। पकड़े गए।

अगले दिन दीपचंद लौटा, तो सारी बातों का पता चला। "मगर चोरों को कमरे में बंद किसने किया ?"—सेठ ने पूछा।

सेठ के इस प्रश्न का उत्तर कोई भी न दे सका। दरोगा को भी सेठ के घर में चोर होने की सूचना एक कागज पर लिखी मिली थी।

सेठ ने वह कागज मंगाया। पढ़ते ही उसकी आंखों में चमक आ गई। वह सेठानी को ले कर हवेली में आया। दोनों धनपाल के पास गए। नाहर गुमसुम बैठा था। धनपाल और उसकी पत्नी सामान बांध रहे थे। सेठ और सेठानी को आया देख, धनपाल रोने लगा।

सेठ ने नाहर को गोदी में उठा लिया। कलेजे से चिपकाकर बोले—"नहीं धनपाल, अब तुम कहीं नहीं जाओगे। मैं तो कागज देखकर ही समझ गया था कि मुझे 'सेठ पापा' कहने वाला नाहर के अलावा कौन हो सकता है ? पता है, इसने दरोगा को भेजे पत्र में लिखा था—'दोनों मामा सेठ पापा की तिजोरी लूट रहे हैं। कमरा मैंने बंद कर दिया है। उन्हें पकड़ लें।' कोई कुछ भी कहे, मैं इसे ही गोद लूंगा।"

फिर नाहर को प्यार करने लगे। —राजशेखर

चित्र : अखिल बख्शी

दूर चले गए। बस, एक पेड़ पर लाल मुंह वाला बंदर बैठा रह गया। वह बार-बार दांत दिखा रहा था, जैसे हाथी और बाघ को मुंह चिढ़ा रहा हो।

एकाएक हाथी ने कहा—"यह बंदर बहुत शरारती है। यह समझता है कि पेड़ पर होने के कारण यह मेरी पकड़ से दूर है। लेकिन मैं ऐसी चिंग्घाड़ मारूंगा कि अभी जमीन पर आ गिरेगा।"

बाघ ने कहा—"तुम्हारे किए कुछ न होगा। मेरी दहाड़ सुनकर यह झट पके आम की तरह नीचे आ गिरेगा।"

"हो जाए शर्त।"—हाथी ने कहा।

बाघ बोला—"हम दोनों में से जो भी बंदर को पेड़ से नीचे गिरा देगा, वही जीता हुआ माना जाएगा। हारने वाले को उसकी हर बात माननी होगी।"

"मंजूर है।"—हाथी ने कहा। फिर पेड़ के नीचे खड़े होकर उसने सूंड उठाई और जोर से चिंग्घाड़ उठा। उसकी जबरदस्त चिंग्घाड़ से पूरा जंगल दहल

आसमान से गिरा

—राजे राघव

घने जंगल में एक हाथा रहता था। एक दिन वह मस्तानी चाल से चला जा रहा था, तभी उसे बाघ की दहाड़ सुनाई दी। हाथी रुक गया। बाघ दौड़ता हुआ हाथी के पास आ गया। बाघ दहाड़ रहा था, तो हाथी चिंग्घाड़ने लगा। साथ में वह अपना एक पैर भी जमीन पर पटकता। उससे धम्म की आवाज होती।

दोनों को पास-पास खड़े देख, जंगल के बाकी जानवर डरकर भागने लगे। पेड़ों पर बैठें परिंदे उड़कर

उठा। बंदर घबरा गया। डाली उसकी पकड़ से छूटते-छूटते बची। वह पत्तों में दुबक गया। हाथी कई बार चिंग्घाड़ा, पर बंदर को नीचे नहीं गिरा सका। अब उसने गुस्से में आकर पेड़ पर बहुत जोर से टक्कर मारी। पेड़ हिल उठा। पर बंदर अब भी गिरा नहीं। उसने अगले दोनों पैरों से एक डाल को कसकर पकड़ लिया था।

यह देख, बाघ जोर से हंसा। उसने

कहा—"अब मेरा कमाल देखो।" वह पेड़ के पास गया। ऊपर की ओर मुंह करके जोर से दहाड़ा। बाघ इतने जोर से दहाड़ा था कि बंदर का सारा बदन कांप उठा। उसने घबराकर नीचे नजर डाली, तो उसके देवता कूच कर गए।

तभी बाघ जोर से दहाड़ता हुआ ऊपर उछला। अब तो बंदर इतना घबराया कि डाली उसके हाथ से छूट गई। सचमुच वह किसी पके आम की तरह जमीन पर आ गिरा। और ऐसे पड़ा रहा, जैसे मर गया हो। उसकी हिम्मत नहीं थी कि बाघ के सामने से उठकर भाग जाता।

अपनी करामात देख, बाघ खूब हंसा। फिर उसने हाथी से कहा—"मुझे जोरों की भूख लगी है। मैं तुम्हें खाऊंगा।"

हाथी क्या कहता। सिर झुकाए चुप खड़ा रहा। उसे पछतावा हो रहा था कि उसने शर्त क्यों लगाई? बाघ ने बंदर से कहा—"आज मैं तुझे नहीं खाऊंगा। पहला नम्बर मेरे पुराने दुश्मन हाथी का है।" फिर हाथी से बोला—"तो तुम मरने को तैयार हो?"

इतना सुनते ही हाथी फूट-फूटकर रो पड़ा। उसका भारी बदन हिलने लगा। उसने कहा—"एक बार मुझे अपनी हथिनी और बेटे से मिल लेने दो। फिर तुम मेरे साथ जो चाहो कर सकते हो।"

"ठीक है, तुम अपने परिवार से मिलकर कल इसी समय यहां आ जाना। लेकिन धोखा देकर कहीं भागने की कोशिश मत करना। इतना समझ लो कि मुझसे बचकर कहीं नहीं जा सकते तुम!"

हाथी अगले दिन लौटने का वायदा करके चल दिया। वह बहुत दुखी था। उसकी आंखों से आंसू टप-टप बह रहे थे। जिस रास्ते से हाथी गुजरा था, कुछ देर बाद वहां एक हिरन आया। उसने देखा, जमीन दूर तक गीली हो रही है। उसे आश्चर्य हुआ। सोचने लगा—'कई दिनों से बारिश नहीं हुई, तब जमीन गीली क्यों है?' वह उधर गया तो कुछ दूरी पर उसे हाथी दिखाई दिया। इतने विशालकाय जानवर को रोते देख, हिरन को बहुत हैरानी हुई। वह दौड़कर आगे गया। उसने कहा—"हाथी दादा, क्या बात है? मुझे बताइए। शायद मैं आपकी कुछ मदद कर सकूं।"

हिरन की बात सुनकर हाथी ने उसे बाघ से शर्त हारने की बात बता दी। फिर कहा—"आज मेरे जीवन का अंतिम दिन है।"

हिरन था चतुर। कुछ देर सोचता रहा। फिर उसने कहा—"हाथी दादा, मैं जैसा कहूं, आप करते जाइए। परेशानी हल हो जाएगी।" इसके बाद दोनों देर तक बातें करते रहे।

हिरन की बात सुनकर हाथी को भी थोड़ा भरोसा हो गया। वह हिरन के साथ-साथ चल दिया। हिरन हाथी के साथ एक गांव में पहुंचा। उस समय तक रात हो चुकी थी। गांव में सब सो चुके थे। हिरन एक झोंपड़ी के पास खड़ा हो गया। वहां अहाते में एक हौज बना था। हौज में गोंद भरा था। हिरन के इशारे पर हाथी ने सूंड़ में भरकर गोंद हिरन के बदन पर डाल दिया। जब हिरन के सारे बदन पर गोंद लग गया, तो दोनों जल्दी-जल्दी एक धुनिए की झोंपड़ी के पास पहुंचे। वहां ढेर सारी रुई पड़ी थी।

हिरन जाकर रुई पर लोट गया। रुई उसके शरीर पर चिपक गई। अब हिरन वहां से चला, तो रुई के कारण वह काफी मोटा दिखाई दे रहा था। उसे देखकर कोई नहीं कह सकता था कि वह हिरन है।

हिरन फिर वहां गया, जहां हौज में गोंद भरा था। उसने हाथी से कहा—"अब थोड़ा-सा गोंद तुम अपनी पीठ पर उंडेल लो। इसके बाद मैं तुम्हारी पीठ पर चढ़ जाऊंगा।"

अगली सुबह हाथी जंगल में उस जगह जा पहुंचा, जहां बाघ से मिलना था। उसकी पीठ पर हिरन खड़ा था। रुई के कारण वह किसी विचित्र, मोटे जानवर-सा दिखाई दे रहा था।

कुछ देर बाद बाघ की दहाड़ सुनाई दी। वह दौड़ता हुआ वहां आ पहुंचा। उसे देखते ही हाथी तेजी से हिलने-डुलने लगा। वह चिंग्घाड़ रहा था। कह रहा था—"मुझे मत मारो। बाघ को आ जाने दो। मुझे मत मारो।"

गोंद के कारण हिरन के खुर हाथी की पीठ पर चिपक गए थे। इसलिए हाथी के हिलने-डुलने पर भी वह आराम से खड़ा रहा।

बाघ ने वैसा विचित्र पशु अपने जीवन में कभी नहीं देखा था। वह कुछ डर गया। पूछने लगा—"यह कौन है?"

हाथी ने कहा—"क्या बताऊं। मैं अभी-अभी इधर आ रहा था, तो आकाश में बड़े जोर की आवाज हुई और यह आकाश से मेरी पीठ पर गिरा। बस, तबसे यह मुझे परेशान कर रहा है। न जाने यह कौन है?"

बाघ ने डरते-डरते आकाश की ओर देखा। फिर रुई के कारण विचित्र पशु लगने वाले हिरन की ओर। हिरन ने आवाज बदलकर कहा—"पहले इस हाथी को खा लूं, फिर तुझे खाऊंगा। ऊपर क्या देखता है? मेरा भाई आकाश में खड़ा है। हो सकता है, वह तेरी पीठ पर आ गिरे।"

इतना सुनना था कि बाघ के होश उड़ गए। उसने डरते-डरते हाथी की पीठ पर खड़े उस विचित्र जीव को देखा। फिर तेजी से एक तरफ भाग गया। बाघ के जाते ही हाथी और हिरन जोर से हंसे। फिर हाथी नदी में जाकर खड़ा हो गया। पानी से गोंद धुल गया। हिरन उसकी पीठ से उतर आया। उसने बदन पर लगी रुई भी छुड़ा दी।

बाघ इतना डर गया था कि फिर कभी उस जंगल की तरफ नहीं आया। हाथी और हिरन जब भी मिलते, बाघ की बेवकूफी पर खूब हंसते। •

बाजरे का दाना

—शारदा

सोना अपने गरीब मां-बाप का इकलौता बेटा था। बेहद सुस्त और कामचोर। बीस बरस का हट्टा-कट्टा जवान था। उसके पास कोई हुनर नहीं था।

परेशान शिवप्रसाद सोना को व्यापारी मित्र गंगाप्रसाद के पास ले गए। मार्ग में जंगल पड़ता था। थककर शिवप्रसाद एक पेड़ के ठूंठ पर बैठ, सोचने लगे—'आह, कैसी मुसीबत है ! अगर कोई मेरे सोना को किसी लायक बना दे, मैं उसका बहुत आभारी होऊंगा।'

तभी एक बौना प्रकट हुआ। बोला—"आपने मुझे पुकारा ?"

शिव ने कहा—"मैं बहुत थक गया हूं। मैं चाहता हूं, कोई भला आदमी सोना को इस लायक बना दे कि वह सम्मान के साथ जी सके।"

बौने ने कहा—"सोना को मेरे पास रहने दो। मैं उसको अनेक हुनर सिखा दूंगा, परंतु एक शर्त है। एक वर्ष बाद यदि तुम आकर अपने बेटे को पहचान लोगे, तो उसको ले जा सकते हो। नहीं पहचान सके, तो वह एक वर्ष और मेरे पास रहेगा।"

सोना के पिता यह मान गए। बौना सोना को लेकर अपने घर चला गया। वह जमीन के अंदर एक बड़ी गुफा में रहता था।

गुफा में हर वस्तु हरे रंग की थी। पेड़-पौधों से लेकर वहां रहने वाले बौने भी। वह बौना उन बौनों का राजा था। सोना को जो भोजन दिया गया, वह भी हरा ही था। बौने ने सोना को लकड़ी काटने भेजा, लेकिन कुछ समय बाद उसने सोना को गहरी नींद में सोता हुआ पाया। वह बौना एक बहुत बड़ा जादूगर था। वह अपने जादू की ताकत से किसी भी प्राणी को दूसरे प्राणी के रूप में बदल देता था। बौने ने अपने जादू से सोना को एक खूबसूरत नौजवान के रूप में बदल दिया।

कुछ दिन बाद बौने ने सोना को मछली पकड़ने तालाब पर भेजा, तो वह फिर से सो गया। इस बार बौने ने उसका दूसरा रूप बना दिया। मगर इन रूपों के बदलने पर भी सोना पहले जैसा सुस्त ही बना रहा।

इस तरह एक वर्ष बीत गया। शिवप्रसाद अपने पुत्र को लेने आया। उसी टूटे पेड़ पर बैठकर उसने बौने को पुकारा। बौना प्रकट हो गया। वह शिवप्रसाद को गुफा में ले गया।

सोना के पिता गुफा में पहुंचे। बौने ने कुछ बाजरे के दाने जमीन पर बिखेर दिए। फिर कुछ कबूतर उन्हें चुगने आए। सभी कबूतर एक जैसे लग रहे थे। बौना बोला—"इन्हीं में तुम्हारा बेटा भी है। पहचान लो।" मगर शिव बेटे को नहीं पहचान सके। विवश होकर उन्हें लौटना पड़ा।

अगले वर्ष भी शिवप्रसाद बेटे को लेने गए।

इस बार सोना बकरी बनकर बकरियों के झुंड में आया। उसके पिता फिर उसे नहीं पहचान सके। एक वर्ष के लिए फिर अपने बेटे को जादूगर बौने के पास छोड़ना पड़ा।

तीसरे साल जब शिव सोना को लेने जा रहे थे, तो मार्ग में एक बूढ़ा मिला। उसने सोना के पिता से कहा—"बौना तो इसी प्रकार तुमको तंग करता रहेगा। मैं तुम्हें सरल उपाय बताता हूं। इस बार वह तुमको तोतों के बीच ले जाएगा। जो तोता औरों से अलग बैठा होगा, वही तुम्हारा बेटा होगा। तुम पहचान लेना।"

पिता ने बेटे को पहचान लिया। वह तोता लेकर कुछ दूर गए, तो तोते ने सोना का रूप ले लिया। इन तीन वर्षों में सोना भी रूप बदलने का जादू जान गया था। दोनों खुशी-खुशी गांव लौट आए।

शिवप्रसाद की गरीबी दूर नहीं हुई थी। उन्होंने सोना से पूछा—"क्या तुमने कोई हुनर सीखा है?" सोना ने पिता को तसल्ली देते हुए कहा—"आपकी गरीबी शीघ्र ही दूर हो जाएगी। सामने जो शिकारी कुत्ते हिरन का पीछा कर रहे हैं, मैं भी उन जैसा एक कुत्ता बन जाता हूं। मैं हिरन को शीघ्र घेर लेता हूं। शिकारी मुझको खरीदना चाहेंगे। आप मुझे बेच देना, परंतु मेरा पट्टा नहीं देना। मैं लौट आऊंगा।" कहकर सोना शिकारी कुत्ता बन गया। फिर हिरन को पकड़ लिया। शिकारी ने वह कुत्ता खरीदना चाहा, तो शिवप्रसाद ने कुत्ता तीन सौ रुपए में बेच दिया, परंतु पट्टा नहीं दिया। शिकारियों को कोई ऐतराज नहीं था। कुछ दूर जाकर कुत्ता फिर सोना बन गया। वह अपने पिता के पास लौट आया।

शिवप्रसाद ने बेटे से कहा—"हमारे पास अब पैसा हो गया है। आराम से जिंदगी बसर कर लेंगे।" मगर सोना ने कहा—"एक आखिरी जादू दिखाना चाहता हूं। कुछ दूरी पर मेला लगा है। मैं घोड़ा बन जाता हूं। आप सेठ को वह घोड़ा बेच देना, परंतु उसकी जीन नहीं बेचना।"

सोना घोड़ा बन गया। मेले में उस खूबसूरत घोड़े को एक सेठ ने खरीद लिया। एक हजार मोहरों में। वह जीन के लिए भी पचास मोहरें देने को तैयार था। पहले तो शिवप्रसाद माने नहीं, परंतु फिर लालच में आकर जीन भी बेच दी। वह सेठ और कोई नहीं, बौना ही था। वह घोड़े को अपने साथ ले गया। मन में कहने लगा—'बेटा, बचकर कहां जाता?'

कुछ समय बाद बौना घोड़े को तालाब पर ले गया। पानी में मुंह डालते ही घोड़ा तोता बन गया। यह देख, बौना ऊदबिलाव बनकर उसका पीछा करने लगा। तोता ऊदबिलाव की पकड़ में नहीं आया। तोता बना सोना राजकुमारी रत्ना के पास पहुंच गया। उस समय राजकुमारी महल के बाग में तालाब के किनारे बैठी थी। राजकुमारी तोते को पकड़ने लगी, तो वह रत्न जड़ित अंगूठी बनकर पानी में गिर गया। रत्ना की नजर उस पर पड़ी, तो उसे अंगूठी बहुत पसंद आई। अंगूठी पहनकर राजकुमारी अपने पिता को दिखाने गई। इस बीच बौना व्यापारी का वेश बनाकर राजमहल में पहुंचा। उसने राजा से कहा—"मैं एक व्यापारी हूं। एक अमूल्य अंगूठी आपको दिखाने ला रहा था, परंतु दुर्भाग्यवश वह पानी में गिरकर खो गई। आपको मिली हो, तो मुझे सौंपने की कृपा करें।" राजा ने राजकुमारी रत्ना के पास अंगूठी देखी थी। उन्होंने अंगूठी लौटाने का आदेश दिया। राजकुमारी को अंगूठी बहुत पसंद थी। क्रोध से बोली—"यदि यह मेरे पास नहीं रह सकती, तो इस व्यापारी को भी नहीं मिलेगी।" उसने अंगूठी को जोर से जमीन पर पटका, जिससे वह टूटकर बाजरे के दानों के रूप में बिखर गई। बौना तुरंत कबूतर बनकर जल्दी-जल्दी उन दानों को चुगने लगा। मगर एक दाना फिसलकर रत्ना के पांव के नीचे छिप गया।

जादूगर बौने के जाते ही वह बाजरे का दाना सोना बन गया। राजकुमारी को सुंदर युवक सोना बहुत भा गया। उन्होंने दोनों का विवाह कर दिया। शिवप्रसाद और उसकी पत्नी भी अब राजमहल में ही आकर रहने लगे थे। इस तरह आलसी सोना हुनर सीखकर राजकुमार बन गया। •

'नंदन' ज्ञान-पहेली

५०० रु॰ पुरस्कार
कोई शुल्क नहीं

नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष के पाठक भाग ले सकते हैं।
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, उस पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक को होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—**सम्पादक, 'नंदन' (ज्ञान-पहेली); हिंदुस्तान टाइम्स हाऊस, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-१**
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संकेत

ऊपर से नीचे

१. वहां जाते ही आवाज आई इसे—। (खोदो/खोलो)

२. भला ऐसा भी—होता है। (कहीं/कभी)

६. भारत में बनने वाला नया राकेट

बाएं से दाएं

३. सैनिक थोड़ी देर बाद ही एक—जगह में जा पहुंचे। (खाली/खुली)

४. कोई है, जो इसे—सके ? (देख/लिख)

५. लोगों ने इसे—देने का नया तरीका समझा ! (भीख/सीख)

७. उसके हाथ एकदम—पड़ गए। (पीले/काले)

८. औरत ने कहा—"मैं बहुत—हूं।" (भूखी/दुखी)

९. मैं तो कब से कह रहा हूं—। (खाओ/आओ)

१०. देवदूत ने सोने का एक—बना दिया। (ढेर/शेर)

११. कुछ करोगे तो—भी मिल जाएगा। (काम/दाम)

१२. यहां खनिज तेल साफ करने का बहुत बड़ा कारखाना है।

- काटिए - -

नंदन ज्ञान-पहेली : २२२

नाम ______________________

आयु ______ पता ______________________

____

१ खो	■	२ क	■	३	ली	■
	■		■	■	४	ख
■	■	■	५	ख	■	■
६	■	७	ले	■	८	खी
का	■	■	■	९	ओ	■
	■	१०	र	■	■	■
■	११	म	■	१२	थु	

अंतिम तिथि : १०.६.८७

नं. ज्ञा. प. २२२

वामदेव का शाप

—अरुणकुमार

देवराज इंद्र की सभा में क्रोंच नामक एक गंधर्व था। बहुत ही शक्तिशाली और इंद्र का मुंह लगा। एक दिन इंद्र सभा देर तक चली। गंधर्व को कहीं जाना था। वह सभा को बीच में ही छोड़, जाने लगा। वहीं मुनिवर वामदेव भी बैठे हुए थे। गंधर्व था जाने की जल्दी में। वह जैसे ही उठकर जाने लगा, उसका पैर वामदेव के पैर के ऊपर पड़ गया। दर्द से मुनि वामदेव तिलमिला उठे। उन्हें क्रोध आ गया। गंधर्व की ओर देखकर बोले—"तुझे अपने पद और बल का बड़ा घमंड है। सभा छोड़कर जा रहा है। मद में इतना अंधा है कि आसपास भी नहीं देखता। मेरा पैर कुचल दिया। जा, तू चूहा बन जा।"

मुनि के शाप से गंधर्व कांप उठा। जान गया—'शाप का प्रभाव जरूर होगा। सारे सुख-वैभव छिन जाएंगे। देवलोक छोड़, धरती पर रहना पड़ेगा। कुछ करना चाहिए। अब मुनि की शरण में ही जाना पड़ेगा।'

गंधर्व ने मुनि के चरण पकड़ लिए। भरी सभा में उनसे प्रार्थना करने लगा—"मुनिवर, अनजाने हुई गलती को क्षमा कीजिए।" इंद्र और दूसरे देवताओं ने भी मुनि से प्रार्थना की—"आप इसे क्षमा कर दें।"

मुनि वामदेव बोले—"शाप तो उलट नहीं सकता। हां, यह ऐसा-वैसा चूहा नहीं बनेगा। चूहा बनकर भी यह आदर पाएगा। बलवान भी इतना होगा कि इसे देखकर बड़े-बड़ों के दिल दहल जाएंगे।"

बस, कुछ ही देर में मुनि का शाप रंग लाया। वह गंधर्व चूहा बनकर स्वर्ग से गिरा और ऋषि पराशर के आश्रम के निकट आया। चूहा होने पर भी वह चूहे की तरह छोटा और डरपोक न था। उसका शरीर हाथी जैसा बड़ा, काले रंग का था। नाखून शेर के समान नुकीले थे। सारे शरीर पर जंगली सूअर जैसे कड़े बाल उगे हुए थे। दांत थे जैसे पैनी छुरियां मुंह में लगी हों। उसकी आवाज डरावनी थी। चीखता तो लगता, जैसे उल्लू रो रहा हो।

उस भयानक चूहे ने ऋषि पराशर के आश्रम में आकर उत्पात मचाना शुरू कर दिया। छोटे-छोटे पेड़-पौधे तो वह अपने शक्तिशाली पैरों से रौंद ही डालता था। बड़े-बड़े पेड़ों को भी वह अपने बड़े और नुकीले दांतों से काट-काटकर गिरा देता था। उसने कुछ ही दिन में आश्रम का सारा अन्न खा डाला। फिर आश्रमवासी ऋषियों के कपड़े कुतरने लगा। इतने पर भी उसका मन न भरा, तो उसने वहां रखे ग्रंथों को कुतर-कुतरकर उनके टुकड़े-टुकड़े कर डाले। वहां की वाटिका भी उजाड़ फेंकी।

भयंकर चूहे ने आश्रम वासियों को परेशान कर दिया। ऋषि पराशर भी एक दिन दुखी होकर शिष्यों से कहने लगे—"इस दुष्ट चूहे ने नाक में दम कर रखा है। इससे तो इस आश्रम को ही छोड़ दें। मगर छोड़कर जाएं भी कहां ? पता नहीं, ऐसा क्या बुरा कर्म किया, जो यह चूहा यहां आ बसा। न जाने, कहां से आया है ? साधारण चूहे तो इतने भयानक होते नहीं। इसने आश्रम को तबाह कर दिया। भगवान की लीला अद्‌भुत है।"

उन्हीं दिनों भगवान शंकर के पुत्र गणेश जी, जिन्हें गजानन भी कहते हैं, बाल अवस्था में महर्षि के आश्रम में रह रहे थे।

उन्होंने भी ऋषि की बात सुनी। बोले—"पूज्यवर, आप चिंता न करें। मैं दुष्टों का संहार करने वाला हूं। आप मुझे बेटे जैसा प्यार देते हैं,

तो मैं भी आपका कष्ट दूर करूंगा। आप मेरा खेल देखिए। अभी इस मूषक (चूहा) को अपना वाहन बनाए लेता हूं।''

महर्षि पराशर से इतना कहकर गजानन ने उस चूहे को घेरा। फिर सूर्य की किरणों के समान तेज वाला अपना पाश उस पर फेंक दिया। चूहा गर्जन करता हुआ गजानन की ओर झपटा, मगर पाश पहले ही उसकी गर्दन में लिपट चुका था। अब गजानन उस पाश को खींचने लगे। उसके खींचने से चूहे का सांस बंद होने लगा। वह बहुत उछला-कूदा, मगर पाश के चंगुल से अपनी गर्दन न छुड़ा सका। चूहा मन ही मन सोच रहा था—'मुझे देखकर तो बड़े-बड़े वीरों के छक्के छूट जाते हैं। यह तेजस्वी बालक है कौन, जिसने क्षण भर में ही मुझे विवश कर दिया!'

चूहे का गला और दबने लगा, तो उसके प्राणों पर बन आई। अब वह बड़े कातर स्वर में गजानन से कहने लगा—''लगता है, आप बच्चे के रूप में कोई देव हैं अथवा भगवान विष्णु या शिव के अवतार हैं। आपका दर्शन करके मैं धन्य हो गया। शायद मुनि वामदेव का शाप आपके स्पर्श से ही दूर होगा। मुझे क्षमा कीजिए। मैं मरा जा रहा हूं। मेरे प्राणों की रक्षा कीजिए।''

चूहे की प्रार्थना सुनकर गजानन बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा—''तूने ऋषियों को बड़ा कष्ट दिया। मैंने दुष्टों का नाश और साधु पुरुषों को सुख

देने के लिए ही अवतार लिया है। अगर तू अपना भला चाहता है, तो मेरी शरण में आ। और अगर तेरी कोई इच्छा हो, तो मुझसे वर मांग ले।''

यह सुनकर उस मूषक का अहंकार फिर जाग उठा। बोला—''मैं इस जन्म में चूहा हूं, तो क्या? हूं तो मैं देवताओं के राजा इंद्र का प्रिय पात्र क्रोंच गंधर्व। मैं आज भी शक्तिशाली हूं। मुझे कुछ नहीं मांगना। चाहें तो आप मुझसे वर मांग लें।''

—''ठीक है, अगर तू यही चाहता है, तो सुन, तू आज से मेरा वाहन बन जा। तेरी गति तेज है। तू सभी जगह जा सकता है। तुझ पर बैठकर मुझे भी सुविधा होगी। मेरी शरण में आकर तू भी निर्भय हो जाएगा।''

चूहा वर देने की बात कह चुका था। इंकार कैसे करता? अतः गजानन तुरंत कूदकर उसके ऊपर जा बैठे।

मगर यह क्या! गजानन के बैठते ही अहंकारी चूहा घबरा उठा। वह उनके भार से दबने लगा। उसे लगा, इनके भार से तो मैं पिस जाऊंगा। तब उसने गजानन से प्रार्थना की—''प्रभो, अब मैं आपकी शक्ति को समझा। आप तो देवों के भी देव हैं। मुझ पर कृपा करें। आप इतने हल्के हो जाएं कि मैं आपका भार सहन कर सकूं।''

उस चूहे की बात सुनकर गजानन हंसने लगे। फिर उन्होंने अपना भार हल्का कर दिया।

गजानन की यह विचित्र लीला देखकर महर्षि पराशर गद्‌गद् हो गए। उन्होंने भगवान की परिक्रमा कर, उन्हें नमस्कार किया। फिर कहा—''मेरे धन्य भाग! आप मेरे आश्रम में रहे। एक बालक के रूप में मुझे असीम सुख दिया।''

तभी महर्षि की पत्नी भी वहां आ गईं। उन्हें देख, गजानन ने उनके चरण छू लिए। उनका वात्सल्य उमड़ पड़ा। उन्होंने गजानन को अपनी बांहों में भर लिया। यह देखकर महर्षि और आश्रम वाले धन्य-धन्य हो उठे। इसके बाद वह मूषक गजानन का वाहन बन गया। **(गणेश पुराण)** ●

चीटू-नीटू
नमस्ते करो, यह हमारे बरेली वाले दीपक मामा जी हैं।
जब से मामा जी आए हैं, सब खुश हैं।
रोज अच्छे-अच्छे पकवान बन रहे हैं और हमें डांट भी नहीं पड़ती।
मामा जी, आप बड़े अच्छे हैं। हम आपको कभी नहीं जाने देंगे।
कम-से-कम चिड़िया घर तो देखते जाओ
अभी तो चिड़िया घर ही देखा है। कुतुब और लाल किला तो अभी बाकी हैं।
तुम्हारे प्यार ने तो मुझे बांध ही लिया है।
देखो, बच्चे हर रोज जिद करके दीपक को रोक लेते हैं...
मैं कोई तरकीब निकालता हूं
दीपक ज्यादा दिन रुकेगा, तो उसकी बेटी के लिए नीटू की नई फ्राक और बेटे के लिए चीटू का सूट देना ही पड़ेगा
अब नहीं रोकेंगे मामा जी को।
मामा जी, हमारी जिद के कारण इतने दिन आपका हर्ज हुआ। क्षमा चाहते हैं। अब नहीं रोकेंगे आपको।

शीर्षक बताइए

इस चित्र को ध्यान से देखिए। सोचिए कोई अच्छा-सा शीर्षक। उसे पोस्टकार्ड पर लिखकर १० जून तक शीर्षक बताइए, नंदन मासिक, हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली—११०००१ के पते पर भेज दीजिए। चुने गए दो शीर्षकों पर नकद पुरस्कार दिए जाएंगे।

परिणाम : अगस्त अंक

चित्र : कुलवंत सिंह
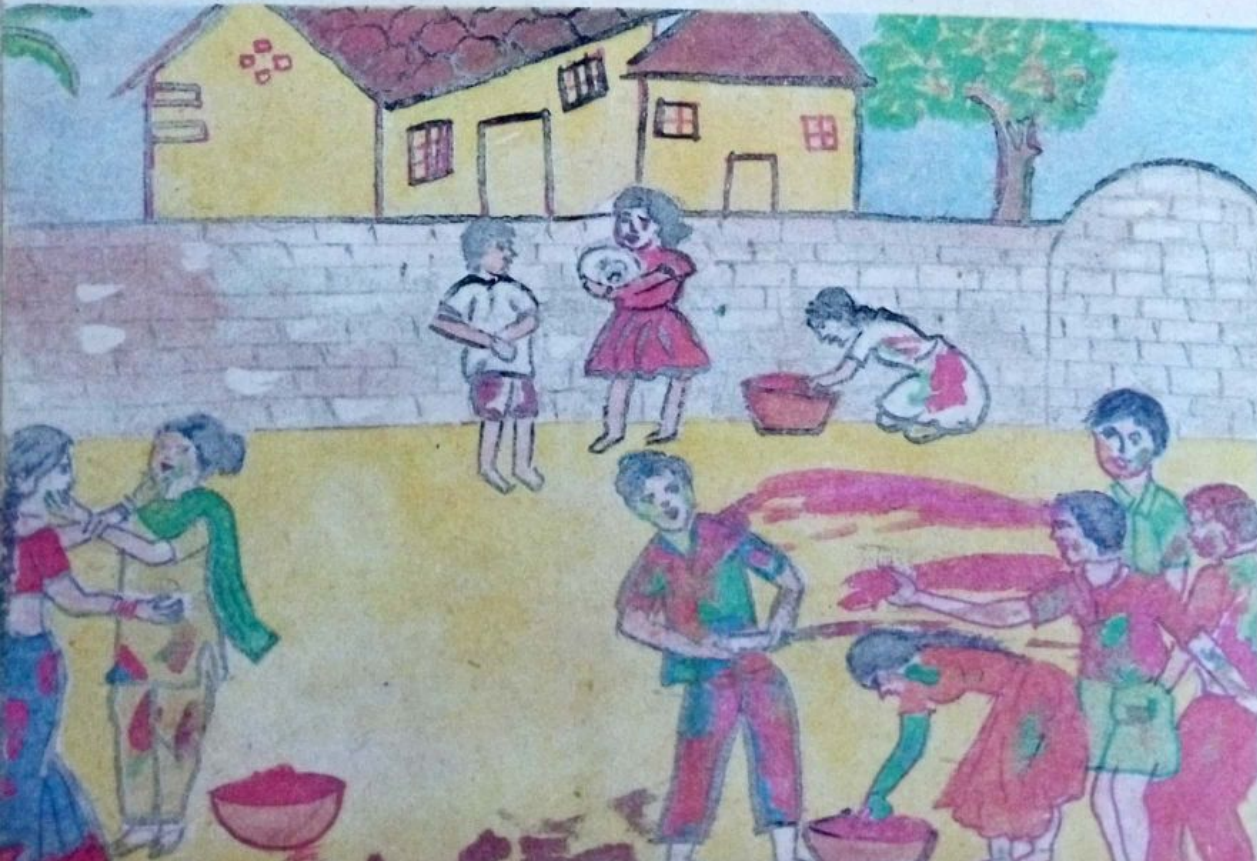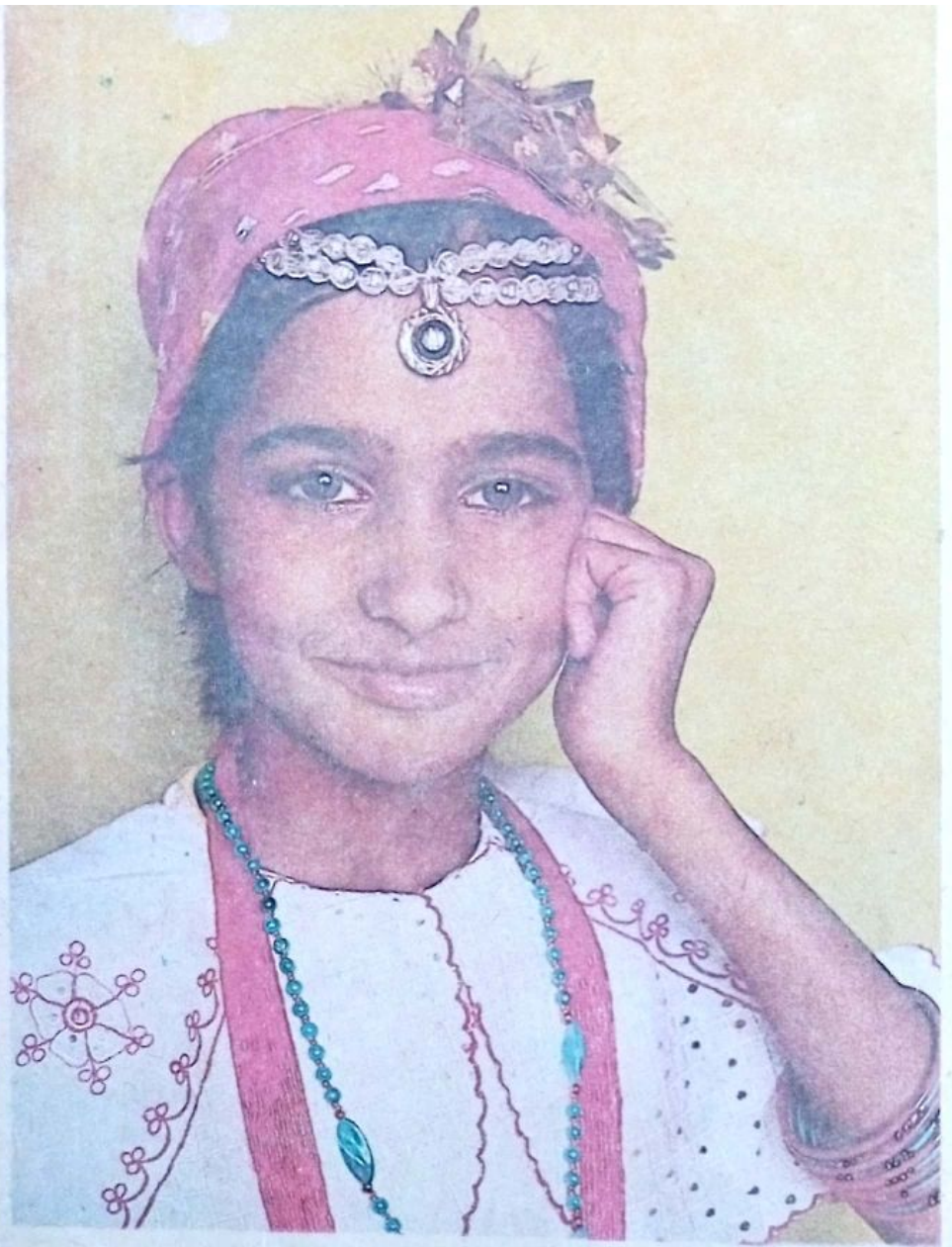
पुरस्कृत चित्र

कु. सोनाली आर. जैन द्वारा राजेंद्रकुमार एम. जैन, ए/२२ पारेखवाड़ी, प्रथम तल २०२वीं पटेल रोड, बम्बई-४००००४

इनके चित्र भी पसंद आए— अनुज रस्तोगी, धामपुर (उ. प्र.); अजयकुमार दीवान, गढ़ा, जबलपुर; आरती गर्ग, ऋषिकेश; प्रतिभा शर्मा, नई दिल्ली; गुरमीत कौर बत्तरा, जम्मू।

पत्र मिला

● अप्रैल अंक की कहानियां मन को भाईं। राष्ट्रप्रेम, राष्ट्राभिमान, देश की एकता आदि को बढ़ावा देने वाली कहानियां 'नंदन' में और अधिक छापी जानी चाहिएं।—**नूर अहमद, बेलगांव**

● इस अंक में वेद, उपनिषद आदि की कहानियां छापकर हमें प्राचीन साहित्य से परिचित कराया। 'शिव का बेटा', 'मंदिर के अंदर', 'शाप को शाप', 'राक्षस बन जा', 'मैल बह गया', 'नागमणि' आदि कहानियां अद्‌भुत थीं।—**सतीशकुमार सिंह, कष्टहारा**

● प्राचीन कथा विशेषांक अनूठा था। सभी रचनाएं अपने आप में एक से एक अच्छी थीं।
—**राजमंगल केवट, सिकरीगंज (उ. प्र.)**

● यह अंक मन को छूने वाली सामग्री से ओत-प्रोत रहा। सभी कहानियां रुचिकर एवं बच्चों को अच्छे मार्ग पर चलने की प्रेरणा देने वाली थीं।—**कमलकुमार जैन, किशनगढ़**

● 'घी ले जाओ', 'आधा-आधा इनाम', 'चंदन का कटोरा', 'रात का सूरज' कहानियां मन पर अमिट छाप छोड़ गईं। बार-बार मन में यही आता है कि नंदन मासिक न होकर दैनिक होता।—**अजयकुमार भारती, नैनीताल**

● इस पत्रिका का हमेशा स्वागत है। छपाई इतनी सुंदर होती है कि कहीं भी त्रुटि दिखाई नहीं देती। यही एकमात्र पत्रिका है, जो सरल भाषा में ज्ञानवर्धक साहित्य प्रदान करती है।—**पां. पि. धरत, दातिवरे (महा.)**

● अप्रैल अंक देखकर मैंने कहा कि पिता जी इसमें झूठी कहानियां हैं। पिता जी बोले—" बेटी, झूठी कहानियां ही तेरे जीवन की सच्ची कहानियां हो जाएंगी। बस तुम इनके गुणों को जीवन में उतारना सीख जाओ।"—**बाबी लीना झा, कुमैठा (बिहार)**

● बाल समाचार के पृष्ठ भी बढ़ाएं।—**भीमराज अग्रवाल, सुंदरगढ़ (उड़ीसा)**

● ताजे अंक को बार-बार पढ़ा, फिर भी मन न भरा। रंगीन झांकी में 'जय-जय हनुमान गुसाईं' विशेष उपलब्धि थीं।—**अमित अग्रवाल, यमुना विहार, दिल्ली**

● भारत की उड़नपरी पी. टी. उषा तथा बजरंगबली की रंगीन छवि देखकर मन प्रसन्न हो उठा।—**किशोरकुमार सोनी, पिपरिया (म. प्र.)**

● तीन अक्षर का नाम है 'नंदन'
ज्ञान हमें देता है नंदन,
बच्चों का है मनभावन
फूलों जैसा यह नंदन !

—**चैताली साहा, झाझा**

इनके पत्र भी उल्लेखनीय थे : देवेंद्र सारस्वत, खैर, अलीगढ़; धीरेंद्र पंडित, वैशाली; भावेश गांधी, कलकत्ता।

भेड़िए राजकुमार

हरिपुर रियासत का राजा था वीरसिंह। प्रजा के सुख-दुःख का बहुत ध्यान रखता था। प्रजा भी उसे बहुत चाहती थी। लेकिन अचानक राज्य में तूफान उठ खड़ा हुआ। एक दैत्य लोगों के पीछे पड़ गया। वह दिन-दहाड़े लोगों के मवेशी उठाकर ले जाता। फसलें तबाह कर देता था। प्रजा में हा-हाकार मच गया।

दैत्य के उत्पातों की खबर राजा को भी लगी, तो वह प्रजा को दैत्य से मुक्ति दिलाने के लिए निकल पड़ा। दैत्य जिधर से आता था, राजा का घोड़ा उसी दिशा में दौड़ा चला जा रहा था। दैत्य को राजा खुद ही मारना चाहता था, इसलिए उसने किसी सैनिक को भी साथ नहीं लिया। चलते-चलते राजा घने जंगल में पहुंचा। अचानक झाड़ियों में उसे सनसनाहट सुनाई दी। मुड़कर देखा; तो वहां दो भेड़िए खड़े थे। भेड़िए बोले—"रुको राजन्!" उन्हें मनुष्य की बोली में बोलते देख, राजा रुक गया।

भेड़िए फिर बोले—"हमें मालूम है, आप कहां जा रहे हैं? पर उस दैत्य को मारना आसान नहीं। यहां से दक्षिण की तरफ एक खंडहर है। उसके एक तरफ लोहे का छोटा-सा द्वार है। उस द्वार से अंदर जाने पर एक कमरा आएगा। वहां एक नन्ही-सी डिबिया में एक भौंरा बंद है। भौंरे में उस दैत्य की जान है। लेकिन असली बात तो यही है कि आप उस कमरे तक पहुंच नहीं पाएंगे। दैत्य को अपनी जादुई शक्ति से पहले ही इस बात का पता चल जाएगा। आप वहां पहुंचें। हम भी दैत्य के महल तक पहुंचने की कोशिश करेंगे।" कहकर भेड़िए झाड़ियों में गायब हो गए।

राजा दक्षिण दिशा की तरफ चल दिया। मगर खंडहर के पास पहुंचते ही राजा ने भारी भरकम दैत्य को अपने ऊपर झपटने को तैयार पाया। यह देख, राजा ने बचने की कोशिश की। दैत्य उसके पीछे भागा। तभी बीच में वे दोनों भेड़िए आ गए। दैत्य उनसे उलझ गया। मौका देख, राजा ने डिबिया खोली। उसने भौंरे को मार दिया। भौंरे के मरते ही दैत्य कटे पेड़ की तरह गिर पड़ा।

दैत्य के मरते ही दोनों भेड़िए दो सुंदर बच्चों में बदल गए। दैत्य ने उन्हें भेड़िया बना दिया था। वीर सिंह उन्हें हरिपुर ले आया। उनका पालन-पोषण बेटों की तरह करने लगा।

—शामिंद्र शर्मा, कांगड़ा (हि.प्र.)

इनकी कहानियां भी पसंद की गईं : विषमलता वर्मा, मुरार; वंदना नायर, मद्रास; राजेंद्रप्रसाद, रायपुर।

नंदन ज्ञान-पहेली : २२०

परिणाम

पाठकों ने ज्ञान-पहेली हल करने में काफी उत्साह दिखाया। पुरस्कार की राशि इस प्रकार बांटी जा रही है :

सर्वशुद्ध हल : एक : दो सौ रुपए

—अनामिका, द्वारा मीरा सिन्हा, पूर्वी अशोक नगर, रोड नं. १३, कंकड़ बाग कालोनी, पटना।

एक गलती : बारह : प्रत्येक को २५ रुपए

१. अशोककुमार तिवारी, सीधी (म. प्र.); २. पूनम खुराना, हिसार; ३. सुनीति पांडेय, कंकड़ बाग, पटना; ४. अनिताकुमारी शर्मा, भरतपुर; ५. आशुतोष दुबे, पो. राजपुर, जि. कानपुर; ६. अश्वनीकुमार, मोगा; ७. युधामन्यु गर्ग, हिसार; ८. दीपक पांडेय, पटना; ९. अंजनी खरे, आलमबाग, लखनऊ; १०. उत्तमकुमार अग्रवाल, कलकत्ता; ११. राकेश अग्रवाल, बांरा, जि. कोटा; १२. हरीराम लोहिया, सिलीगुड़ी, (असम)।

बाल सभा

वसन्त मोनू प्रवीन हीरो

नई पुस्तकें
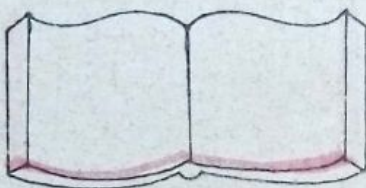
शत-शत नमन हिमालय — लेखक : शिव मृदुल; प्रकाशक : यश प्रकाशन, चित्तौड़गढ़; पृष्ठ : ६०; मूल्य : १४ रुपए।

राजस्थान साहित्य अकादमी के सहयोग से प्रकाशित इस पुस्तक में लेखक की २७ कविताएं हैं। देश भक्ति, पेड़-पौधों और ऋतुओं के अतिरिक्त 'लकड़ी का घोड़ा', 'परियां', 'घड़ी', 'मेरा फोटू' आदि कविताएं मधुर और गाई जा सकने वाली हैं। लगभग हर कविता सचित्र है।

परियों के देश में— लेखक : डा. भगवतीशरण मिश्र; प्रकाशक : समाज शिक्षा प्रकाशन, कश्मीरी गेट, दिल्ली; पृष्ठ : ३२; मूल्य : ८ रुपए।

पुस्तक में 'चूहा और साधु', 'कुत्ते का न्याय', 'परी की शर्त' आदि छह रोचक कहानियां हैं। कुछ कहानियां प्राचीन ग्रंथों की हैं, तो कुछ मौलिक। सीधी, सरल भाषा में लिखी सारी कहानियां मजेदार हैं। बच्चे पसंद करेंगे।

बिहार के तीर्थ (दो भाग) -- लेखक : डा. भगवतीशरण मिश्र; प्रकाशक : समाज शिक्षा प्रकाशन, दिल्ली; पृष्ठ – प्रथम भाग ४८, दूसरा भाग ५६; मूल्य : प्रत्येक १२ रुपए।

दोनों पुस्तकों में बिहार के ३९ तीर्थ-स्थानों के बारे में बताया गया है। ये तीर्थ-स्थान हिंदुओं के अलावा सिख, जैनियों, बौद्धों और मुसलमानों के होते हुए भी सभी धर्मों के श्रद्धा केंद्र हैं।

पुस्तक उपयोगी है। हर तीर्थ का चित्र भी होता, तो अच्छा रहता।

ओलम्पिक खेल : कल और आज : लेखक—देवेन्द्रकुमार; प्रकाशक : सर्वोदय प्रकाशन, शिवपुरी मंडी, सहारनपुर; पृष्ठ : १५२; मूल्य : ३० रुपए।

खेलों की दुनिया में ओलम्पिक खेलों का महत्त्व सबसे अधिक है। हर चार वर्ष बाद ये खेल कहीं भी होते हों, करोड़ों लोगों की नजरें और कान इन पर लगे होते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में तीन हजार वर्ष पुराने इन खेलों का रोचक इतिहास है। साथ ही अब तक के सभी ओलम्पिक खेलों की प्रमुख घटनाएं, विजेता टीमों के चमत्कार भरे खेलों की चर्चा, स्वर्ण पदक विजेता देशों की तालिका और विभिन्न देशों के खिलाड़ियों के खेल जौहर का वर्णन पुस्तक की विशेषता है।

किस ओलम्पिक में कौन हारा, कौन-कौन जीता, कितने दर्शकों ने देखा, खेल कब हुए, कहां हुए, कब तक चले, क्या परेशानीं, कौन-सी नई घटना घटी—ये सारी जानकारियां सरल-रोचक भाषा में दी गई हैं।

इन खेलों से सम्बंधित अनेक चित्रों ने पुस्तक का महत्व बढ़ा दिया है। पुस्तक सभी के पढ़ने योग्य है।

पूर्वांचल की लोककथाएं : लेखक—डा. भिक्षु कौण्डिन्य; प्रकाशक : प्रकाशन विभाग, भारत सरकार; पृष्ठ : ७२; मूल्य : १२ रु. ५० पै.।

कुछ आपबीती कहो या जगबीती। दूर गांव में या जंगल में रात हुई और कथा शुरू। जन-जातियों में ऐसी लोक-कथाएं खूब मिलती हैं। बच्चे, बड़े और बूढ़े सभी उनमें रस लेते हैं। हिंदी में ऐसी कथाएं छपती रही हैं। पर असम, अरुणाचल जैसे राज्यों में ऐसी जातियां हैं, जिनकी कथाएं छिटपुट ही छपी हैं। डा. भिक्षु कौण्डिन्य ने ऐसी ३२ लोक-कथाएं पहली बार पुस्तक में दी हैं।

इन कथाओं में वहां के रहन-सहन, पूजा, जंतर-मंतर, जानवर, देवता-राक्षस, हंसी-खुशी सब कुछ है। पढ़ते-पढ़ते हम अनजाने लोगों और नए क्षेत्रों में पहुंच जाते हैं। खाम्ति, सिंगफो, खोवा, सेरदुकपेन, मिसमी और देउरी जातियों की ये कथाएं सबको पढ़नी ही चाहिएं। कथाओं के साथ चित्र भी हैं।

शीर्षक बताइए : परिणाम

अप्रैल अंक में छपे रंगीन चित्र पर ढेर सारे शीर्षक आए । इन शीर्षकों को पुरस्कार के लिए चुना गया—

डरी हुई है गुड़िया रानी,
करके थोड़ी-सी शैतानी ।

—दिपेंद्र, द्वारा राय सुमनेंद्रप्रसाद, सहायक जौ-प्रजनक, बिहार कृषि महाविद्यालय, सबौर, जि. भागलपुर ।

सोच रही है मुन्नी प्यारी,
कब घूमेगी दुनिया सारी ।

—अरुण शर्मा, द्वारा राजेंद्र शर्मा, मकान नं. १२३, पंजतीर्थी, जम्मू तवी ।

मुन्नी, कुछ तो बोलो ना,
गुलदस्ते से खेलो ना !

—उमाशंकर गुप्ता, के-२९, पंजाबी बाजार, कोटला मुबारकपुर, नई दिल्ली-३ ।

इनके शीर्षक भी पसंद आए—सुनील मल्होत्रा, कैथल; कमलेश चौबीसा, थाने (महा.); वंदना नायर, मद्रास; कविता यादव, कानपुर; अनुराधा जैन, तेजपुर (असम) ।

बातें रंग-बिरंगी

घोड़ा—हजारों-लाखों बरस से घोड़ा मनुष्य का प्रिय पशु है। घोड़े जैसा आकर्षक और सुगठित पशु पृथ्वी पर दूसरा नहीं। खेती-बाड़ी, सामान ढोने से लेकर युद्धों तक में घोड़ों का इस्तेमाल होता रहा है। यह जितना तेज दौड़ता है, उससे कहीं अधिक स्वामिभक्त होता है। हम जब भी राणा प्रताप को याद करते हैं, चेतक को नहीं भूलते। आज से चालीस लाख वर्ष पहले घोड़े लोमड़ी के बराबर होते थे। आज घोड़े की सवारी करते कम ही लोग देखे जाते हैं, मगर घुड़दौड़ खूब होती हैं। घोड़े की स्मरण शक्ति बहुत अच्छी होती है। एक बार किसी रास्ते से गुजर जाए, तो फिर कभी उसे नहीं भूलता। दुनिया भर में अरबी घोड़े सबसे अच्छे माने जाते हैं। ये कई-कई लाख रुपयों के खरीदे-बेचे जाते हैं। पुराने जमाने में घोड़े शौक के लिए पाले जाते थे। बग्घी की सवारी को काफी सम्मान जनक माना जाता था, लेकिन कारों ने घोड़े का स्थान छीन लिया

भैंसा— जंगली भैंसा जिसे अरना भैंसा भी कहा जाता है। हिमालय की तराई, सुंदरवन तथा असम में ज्यादा पाया जाता है। इसकी विशेषता इसके बड़े सींग होते हैं। एक सींग एक मीटर तक लम्बा होता है। इसको धूप बिलकुल सहन नहीं होती, इसलिए दिन भर पानी में या दलदल में पड़ा रहता है। रात में भोजन की तलाश में निकलता है। ये बड़े-बड़े झुंडों में रहते हैं। कहा जाता है कि यदि निशाना चूक जाए या भैंसा घायल हो जाए, तो वह शिकारी को जिंदा नहीं छोड़ता। जब यह गुस्सा होकर टक्कर मारता है, तो हाथी भी जमीन पर गिर पड़ते हैं। गुस्से में भरे भैंसे से मुकाबला करने में शेर भी घबराता है। घरेलू भैंस या भैंसा पालतू हो जाने के कारण जंगली भैंसे की तरह इतने गुस्सैल तो नहीं रहे, मगर आदतें अब भी वही हैं। भैंस को जैसे ही मौका मिलता है, पानी में कूद पड़ती है। घंटों पानी में गोते लगाती है। शिकारियों के कारण आजकल भैंसे लुप्त होते जा रहे हैं।

अमलताश— फूलों से लदा पेड़ ऐसा लगता है, जैसे सोने के असंख्य झूमर लटके हों। पेड़ के नीचे का भाग फूलों की बारिश के कारण गोल-गोल गित्रियों से जड़ा कालीन नजर आता है। फूलों के गुच्छे होते हैं। इनकी पंखुड़ियां बेहद कोमल होती हैं। एक समय ऐसा भी आता है कि पेड़ के सारे पत्ते झड़ जाते हैं और फूल ही फूल नजर आते हैं। अक्सर जहां बंदर अधिक होते हैं, वहां ये पेड़ बहुतायत से उगते हैं। कारण यह कि बंदर इसकी फलियां तोड़, गूदा खा लेते हैं और बीज इधर-उधर फेंक देते हैं। फलियों से कई रोगों की दवाएं भी तैयार की जाती हैं। संथाल लोग फली-फूल तथा पत्तियों को खाते हैं।

आप कितने बुद्धिमान हैं : उत्तर

१. बाईं ओर रखे फ्रिज का हैंडिल लम्बा है।
२. छत से लटका बल्ब शेड से अधिक बाहर निकला है।
३. बाईं ओर खिड़की पर टंगे पर्दों के ऊपर लकड़ी के पेलमेट का एक सिरा सफेद है।
४. उसके पास खड़े बेयरे का मुंह खुला है।
५. बिजली के चूल्हे पर रखे भगोने का हैंडिल नहीं है।
६. उसके ऊपर बनी परछत्ती की एक कील गायब है।
७. उसके पास वाले दरवाजे की घुंडी ऊपर हो गई है।
८. दाईं ओर के बेयरे ने हाथ में घड़ी बांध रखी है।
९. उसके सिर पर रखे टोप की ऊपरी सतह चपटी है।
१०. मेज पर रखे कटोरे में पड़ी चम्मच छोटी है।

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेंद्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस नयी दिल्ली
में मुद्रित तथा प्रकाशित
कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन

NEW
camlicol-86
ARTS & CRAFTS ADHESIVE

नया
कैम्लिकोल-86
आर्ट्स एन्ड क्राफ्ट्स एढेसिव

टूटे खिलौने... फ़र्नीचर और सजावट के सामान... फोटोफ्रेम... घरेलू सामान... लेखन-पठन सामग्री... पैकेजिंग... उपहार बाँधने के लिए...
नया कैम्लिकोल-86 इन्हें भली भांति जोड़ता-चिपकाता है— जल्दी, आसानी से और किफ़ायत से. इस सुविधाजनक बहुउद्देशीय एढेसिव को घर में अवश्य रखिए. मौलिक कलाकृतियाँ बनाने के लिए भी यह बहुत बढ़िया है।
नया कैम्लिकोल-86 कैम्लिन के शोध व विकास प्रयत्नों तथा कैम्लिन के पाँच से भी अधिक दशकों के अनुभव का परिणाम है, जिसने आपको बेहतरीन, कला व लेखन सामग्री प्रदान की. इन सबके अलावा है गुणवत्ता और कैम्लिन का अटूट रिश्ता.

बेहतरीन एढेसिव

  कैम्लिन प्रायवेट लिमिटेड स्टेशनरी डिवीज़न, बंबई - ४०० ०५९.

AYOJAN-C-HIN 1

रजि. नं. डी.-(सी)-१७१ आर.एन.आई. नं. १०५२५/६